# भारत सरकार

# इस्पात मंत्रालय

# का

# निष्कर्ष बजट

# 2011-12

# विषय-सूची


| अध्याय सं. | विषय |
|---|---|
| I. | निष्पादन सारांश |
| | प्रस्तावना |
| | 1. कार्य |
| | 2. कार्यक्रम |
| | 3. संगठन |
| | 4. सरकारी क्षेत्र के उपक्रम |
| | 5. मंत्रालय का रिजल्ट फ्रेमवर्क डाक्यूमेंट (आरफडी) 2010-11 |
| II. | निष्कर्ष बजट (2010-2011) - प्रमुख स्कीमें |
| III. | सुधार उपाय और नीतिगत पहल |
| | 1. भारतीय इस्पात क्षेत्र का उदारीकरण |
| | 2. राष्ट्रीय इस्पात नीति, 2005 |
| | 3. नई राष्ट्रीय इस्पात नीति |
| | 4. इस्पात मंत्रालय द्वारा की गई प्रमुख पहल |
| | 5. पर्यावरण प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण |
| | 6. सुरक्षा उपाय |
| | 7. आंकड़ों के संग्रहण और जानकारी का प्रचार-प्रसार करने के लिए संस्थागत ढ़ांचा |
| | 8. नीतिगत पहलों से निष्कर्ष बजट की संगतता |
| IV. | पिछले निष्पादन की समीक्षा-निष्कर्ष बजट 2010-11 |
| V. | वित्तीय समीक्षा |
| | 1. वर्ष 2011-2012 में निधि की कुल आवश्यकता |
| | 2. वास्तविक व्यय -2008-09 से 2010-11 (दिसम्बर, 2010 तक) |
| | 3. गैर-योजना व्यय |
| | 4. योजना व्यय |
| | 5. आर एंड डी स्कीम का सार |
| | 6. वर्ष 2011-12 (बजट अनुमान) के वार्षिक योजना परिव्यय |
| | 7. 11वीं पंचवर्षीय योजना |
| | 8. सकल बजटीय सहायता का वर्ष-वार विश्लेषण |
| | 9. 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) के वर्ष 2009-10 और 1010-11 (दिसंबर, 2010 तक) के दौरान योजना परिव्यय और वास्तविक व्यय |
| | 10. बकाया समुपयोजन प्रमाण पत्रों की स्थिति |
| VI. | इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों का वास्तविक एवं वित्तीय कार्य निष्पादन |


**********

# निष्पादन सारांश

इस्पात मंत्रालय के निष्पादन बजट मंत्रालय की विशिष्ट भूमिका और उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तैयार किए गए कार्यक्रमों, परियोजनाओं और गतिविधियों तथा इस्पात मंत्रालय तथा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा कार्यान्वित प्रमुख योजनाओं/कार्यक्रमों के निष्कर्ष पर प्रकाश डालता है। इस दस्तावेज में पिछले वर्षों के लिए वास्तविक और वित्तीय लक्ष्यों, उपलब्धियों और चालू वर्ष 2011-2012 के लिए अनुमानों का विवरण भी दिया गया है।

**अध्याय-I** में इस्पात मंत्रालय के संगठनात्मक ढांचे और उद्देश्यों, मुख्य कार्यक्रमों के वर्गीकरण और इनसे सम्बद्ध कार्यान्वयन एजेंसियों की संक्षिप्त जानकारी दी गई है। इस अध्याय में वर्ष 2011-12 के लिए मंत्रालय के रिजल्ट फ्रेमवर्क डाक्यूमेंट का कार्यान्वयन भी शामिल है जो कैबिनेट सचिवालय की वेबसाइट (www.performance.gov.in) पर उपलब्ध है।

**अध्याय-II** में मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा कार्यान्वित प्रमुख योजनाओं/कार्यक्रमों के संबंध में परिव्यय तथा निष्कर्षों/लक्ष्यों का विवरण दिया गया है। चूंकि सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की योजनाएं/परियोजनाएं बहुत अधिक हैं तथा प्रकृति में भिन्न-भिन्न हैं और अधिकांशत: उनके दिन-प्रतिदिन के प्रचालनों से संबंधित हैं, अत: 50 करोड़ रूपए और इससे अधिक अनुमानित/मंजूर लागत वाली केवल प्रमुख योजनाओं को ही इस विवरण में शामिल किया गया है। वर्ष 2011-2012 के लिए ऐसी 40 प्रमुख योजनाओं, को निष्कर्ष बजट में शामिल किया गया है। ये 39 योजनागत योजनाओं को स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (13 योजनाएं), राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (19 योजनाएं), केआईओसीएल (2 योजनाएं) और एनएमडीसी लि. (3 योजनाएं) और मैंगनीज ओर इंडिया लि. (2 योजनाएं) द्वारा क्रमश: कार्यान्वित किया जा रहा है और इन योजनाओं पर होने वाले पूरे व्यय की पूर्ति संबंधित उपक्रमों के आंतरिक तथा अतिरिक्त बजटीय संसाधनों (आई एंड ईबीआर) से की जाएगी। लोहा एवं इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए 1 योजना को इस्पात मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। इन 40 प्रमुख योजनाओं के संबंध में अनुमानित/मंजूर लागत, वर्ष 2011-2012 के लिए परिव्यय, प्रक्रियाओं/टाइमलाइन्स, जोखिम घटकों, अनुमानित वास्तविक उत्पादन तथा अनुमानित निष्कर्ष इस विवरण में दिए गए हैं।

**अध्याय-III** में इस्पात मंत्रालय द्वारा किए गए सुधारात्मक उपायों और नीतिपरक पहलों का विवरण दिया गया है। इस अध्याय में सरकार द्वारा भारतीय लोहा और इस्पात क्षेत्र के विकास के लिए उदारीकरण के बाद किए गए महत्वपूर्ण नीतिपरक उपायों का ब्यौरा दिया गया है। इस संबंध में इस्पात मंत्रालय द्वारा की गई एक महत्वूपर्ण नीतिपरक पहल राष्ट्रीय इस्पात नीति (एनएसपी), 2005 की घोषणा है। राष्ट्रीय इस्पात नीति का दीर्घकालिक लक्ष्य घरेलू इस्पात उद्योग को विविधीकृत इस्पात मांग को पूरा करने वाला विश्वस्तरीय मानकों का आधुनिक तथा क्षमतावान इस्पात उद्योग बनाना है। इस नीति में न केवल लागत, गुणवत्ता तथा उत्पाद मिश्र की दृष्टि से अपितु दक्षता तथा उत्पादकता के वैश्विक मानकों की दृष्टि से भी वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता हासिल करने पर जोर दिया गया है। इस अध्याय में उन प्रमुख क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया है जिनके संबंध में भारत को लोहा और इस्पात क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक बनाने के लिए सहायक उपाय किए जाने/नीतियां बनाए जाने की जरूरत है।

**अध्याय-IV** में इस्पात मंत्रालय के निष्कर्ष बजट, 2010-11 में दर्शाए गए अनुमानित निष्कर्षों/लक्ष्यों के संबंध में सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की 50 करोड़ रूपए अथवा इससे अधिक की अनुमानित/मंजूर लागत वाली प्रमुख योजनाओं तथा परियोजनाओं के निष्पादन की समीक्षा की गई है। निष्कर्ष बजट 2010-11 में

शामिल 50 प्रमुख योजनाओं-49 योजनागत योजनाओं तथा एक गैर-योजनागत योजना के संबंध में अनुमोदित परिव्यय तथा अनुमानित निष्कर्षों की तुलना में किए गए वास्तविक व्यय और योजनाओं की वास्तविक उपलब्धियों को देखते हुए इन योजनाओं के अभिप्रेत निष्कर्ष की तुलना में वास्तविक उपलब्धियों (31 दिसम्बर, 2010 तक) को दर्शाया गया है। 49 योजनागत योजनाएं सेल, आरआईएनएल, एनएमडीसी लिमिडेड, केआईओसीएल लिमिटेड, मॉयल और एक स्कीम इस्पात मंत्रालय से संबंधित हैं।

**अध्याय-V** में इस्पात मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों और इसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों/संगठनों के वित्तीय परिव्यय तथा वित्तीय आवश्यकताओं का ब्यौरा दिया गया है। बजट अनुमान 2010-11 में 114.92 करोड़ रूपए तथा संशोधित अनुमान 2010-11 में 110.24 करोड़ रूपए के बजटीय प्रावधान (कुल) की तुलना में बजट अनुमान 2011-2012 में इस्पात मंत्रालय के लिए मांग संख्या-92 के तहत 117.71 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। बजट अनुमान 2010-11 में मंत्रालय के 17199.82 करोड़ रूपए के वार्षिक योजना परिव्यय (आई एंड ईबीआर: 17163.82 करोड़ रूपए तथा योजना बजटीय सहायता: 36.00 करोड़ रूपए) को बढ़ाकर बजट अनुमान 2011-2012 में 21102.71 करोड़ रूपए (आई एंड ईबीआर: 21062.71 करोड़ रूपए तथा योजना बजटीय सहायता: 40.00 करोड़ रूपए) कर दिया गया है। सेल के इस्पात संयंत्रों अर्थात भिलाई इस्पात संयंत्र (6042 करोड़ रूपए), राउरकेला इस्पात संयंत्र (2950 करोड़ रूपए), इस्को इस्पात संयंत्र (2100 करोड़ रूपए), दुर्गापुर इस्पात संयंत्र (950 करोड़ रूपए), बोकारो इस्पात संयंत्र (1700 करोड़ रूपए) सेलम इस्पात संयंत्र (100 करोड़ रूपए) के विस्तार के लिए और आरआईएनएल, विजाग इस्पात संयंत्र के क्षमता विस्तार के लिए 1600 करोड़ रूपए के परिव्यय सहित 2011-2012 के लिए पर्याप्त योजना परिव्यय रखा गया है। वित्तीय वर्ष 2011-12 सहित हाल ही के वर्षों (2010-11) में बजट अनुमान/संशोधित अनुमान की तुलना में व्यय के समग्र रुख के संबंध में सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा बकाया उपयोग प्रमाण पत्रों तथा उनके पास व्यय नहीं किए गए शेष की स्थिति भी इस अध्याय में दर्शाई गई है।

**अध्याय - VI** में इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के पिछले 3 वर्षों और वित्तीय वर्ष 2010-11 (31 दिसम्बर, 2010 तक) के वास्तविक तथा वित्तीय निष्पादन और 2011-2012 (बजट अनुमान) के लिए अनुमानों से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवाई गई है।

सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की प्रमुख योजनाओं/परियोजनाओं के लिए निधियों की व्यवस्था अधिकांशत: उनके आंतरिक तथा अतिरिक्त बजटीय संसाधनों (आई एंड ईबीआर) से की जा रही है और संबंधित सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की आंतरिक तकनीकी समिति द्वारा इनका वास्तविक और वित्तीय तौर पर नियमित रूप से प्रबोधन किया जा रहा है। निदेशक मंडल द्वारा इन योजनाओं/परियोजनाओं की आवधिक रूप से समीक्षा के अलावा मंत्रालय द्वारा इनकी प्रगति की नियमित समीक्षा की जाती है। प्रबोधन तथा मूल्यांकन तंत्र यह सुनिश्चित करने के लिए है कि योजनाओं/परियोजनाओं के पूरा होने पर उनकी वास्तविक उपलब्धियां निष्कर्ष बजट 2011-2012 में अनुमानित निष्कर्षों से मेल खाती हों।

*******

# अध्याय - I

## प्रस्तावना

### 1. कार्य

इस्पात मंत्रालय के मुख्य कार्य इस प्रकार हैं:

(क) लोहा और इस्पात तथा फैरो-मिश्र के उत्पादन, वितरण, मूल्य, आयात और निर्यात से संबंधित नीतियां बनाना;

(ख) लोहा और इस्पात उत्पादन सुविधाओं की स्थापना के लिए आयोजना, विकास और सुविधा प्रदान करना।

(ग) सरकारी क्षेत्र में लौह अयस्क खानों तथा लोहा और इस्पात उद्योग के उपयोग में आने वाली अन्य लौह अयस्क खानों का विकास; और

(घ) लोहा और इस्पात क्षेत्र में सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों और उनकी सहायक कंपनियों तथा सरकारी प्रबंधन की कंपनी के निष्पादन का निरीक्षण करना।

### 2. कार्यक्रम

**2.1 इस्पात मंत्रालय के मुख्य कार्यक्रम/उप-कार्यक्रम निम्नलिखित हैं :-**

**(i) खनन तथा धातुकर्मीय उद्योग - लोहा और इस्पात उद्योग**

(क) उत्पादन, आयात और निर्यात;
(ख) शुल्क तथा मूल्य निर्धारण;
(ग) अनुसंधान तथा प्रशिक्षण;
(घ) निर्माण कार्य; और
(ड.) तकनीकी तथा परामर्शी सेवाएं

**(ii) खान और खनिज:**

(क) लौह अयस्क;
(ख) मैंगनीज अयस्क; और
(ग) क्रोमाइट अयस्क

**2.2 इस्पात मंत्रालय - इस्पात उद्योग के विकास के लिए मददकर्ता**

इस्पात मंत्रालय से भारत में इस्पात क्षेत्र के सुव्यवस्थित एवं एकीकृत उत्थान के लिए निर्णायक भूमिका निभाने की उम्मीद की जाती है। इस्पात एक महत्वपूर्ण क्षेत्र होने के कारण, 11वीं पंचवर्षीय योजना

में परिकल्पित सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि के स्तर को प्राप्त करने के लिए इस्पात क्षेत्र का सतत् उत्थान पूर्वापेक्षित है। इस्पात उद्योग का अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों के साथ अग्रगामी एवं पश्चगामी सम्बन्ध हैं अत: इसकी अपनी स्वयं की विकास पद्धति अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों विशेषकर अवसंरचना विकास, रियल एस्टेट्स, ऑटो मोबाइल/ऑटो कम्पोनेट्स इत्यादि से प्रभावित होती है। घरेलू इस्पात क्षेत्र जिस माहौल में काम करता है उसके लिए इस्पात मंत्रालय द्वारा एक प्रोत्साहन की भूमिका विशेषतया एक सुविधादाता की भूमिका निभाने की अपेक्षा की जाती है ताकि कच्चे माल की उपलब्धता, अवसंरचना विकास जैसी अड़चनों को दूर किया जा सके तथा सरकार के अन्य संबंधित मंत्रालयों और विभागों से विचार-विमर्श कर उपयुक्त नीति बनाना तथा उनका क्रियान्वयन शामिल है।

## 3. संगठन

इस्पात मंत्रालय का नेतृत्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार सहित) द्वारा किया जाता है। इनकी सहायता के लिए एक सचिव, भारत सरकार, एक विशेष सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, भारत सरकार, एक मुख्य लेखा नियंत्रक, तीन संयुक्त सचिव, एक आर्थिक सलाहकार, चार निदेशक, तीन उप सचिव तथा अन्य अधिकारी एवं सहायक कर्मचारी कार्यरत हैं। लोहा और इस्पात उद्योग से संबंधित मामलों को तकनीकी दृष्टि से देखने के लिए अलग से एक तकनीकी स्कंध है जिसके प्रभारी औद्योगिक सलाहकार हैं, जो भारत सरकार के वरिष्ठ निदेशक स्तर के हैं। इनकी सहायता के लिए एक अपर औद्योगिक सलाहकार, एक संयुक्त औद्योगिक सलाहकार एवं अन्य सहायक कर्मचारी हैं।

क्षेत्र के नियंत्रणमुक्त बनने से पहले इस्पात मंत्रालय का एक संबद्ध कार्यालय नामत: विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात का कार्यालय था, जो कोलकत्ता में स्थित था। व्यय सुधार आयोग की सिफारिशों के आधार पर विकास आयुक्त लोहा और इस्पात का कार्यालय तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालयों को दिनांक 23.5.2003 से बंद करने का प्रशासनिक निर्णय लिया गया था। इस कार्यालय को बंद करने के परिणामस्वरूप विकास आयुक्त लोहा और इस्पात के 226 कर्मचारियों में से 220 कर्मचारी अधिशेष घोषित कर दिए गए और पुनर्तैनाती हेतु कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग के अधिशेष सैल की नामावली में ले लिए गए। शेष 6 कर्मचारी कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग द्वारा अभी अधिशेष घोषित किए जाने हैं। आंकड़े संग्रहण का कार्य जो संयुक्त संयंत्र समिति (जे पी सी) को सौंपा गया है, को छोड़कर विकास आयुक्त लोहा और इस्पात के शेष कार्य मंत्रालय द्वारा किए जा रहे हैं।

इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन कोई सांविधिक अथवा स्वायत्त निकाय नहीं है।

## 4. सरकारी क्षेत्र के उपक्रम

4.1 इस मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में सरकारी क्षेत्र के निम्नलिखित उपक्रम और सरकारी प्रबंधनाधीन कंपनी कार्य कर रहे हैं:-

(1) स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल), नई दिल्ली
(2) राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आर आई एन एल), विशाखापट्टनम
(3) एन एम डी सी लिमिटेड, हैदराबाद
(4) मैंगनीज ओर (इंडिया) लिमिटेड (मॉयल), नागपुर
(5) केआईओसीएल लिमिटेड, बंगलौर
(6) हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड ( एच एस सी एल), कोलकाता
(7) मेकान लिमिटेड, रांची

(8) एम एस टी सी लिमिटेड, कोलकाता
(9) फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड (एफ एस एन एल), भिलाई (एम एस टी सी लि. की सहायक कंपनी)
(10) बर्ड ग्रुप ऑफ कंपनीज़, कोलकाता

**(1) स्टील अथॉरिटी आफ इंडिया लिमिटेड (सेल) (इस्पात भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 में पंजीकृत कार्यालय)** के समग्र नियंत्रणाधीन निम्नलिखित इकाइयां हैं:-

(1) बोकारो इस्पात संयंत्र, बोकारो (झारखंड)
(2) भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई (छत्तीसगढ़)
(3) दुर्गापुर इस्पात संयंत्र, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)
(4) राउरकेला इस्पात संयंत्र, राउरकेला (उड़ीसा)
(5) मिश्र इस्पात संयंत्र, दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल)
(6) सेलम इस्पात संयंत्र, सेलम (तमिलनाडु)
(7) इस्को स्टील प्लांट, बर्नपुर (पूर्व में सेल की एक सहायक कंपनी इस्को का 16.2.2006 को सेल में विलय हो गया और इसे इस्को स्टील प्लांट नाम दिया गया है)।
(8) विश्वेश्वरैया लौह और इस्पात संयंत्र, भद्रावती (कर्नाटक)
(9) केन्द्रीय विपणन संगठन, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
(10) लोहा और इस्पात अनुसंधान तथा विकास केन्द्र, रांची (झारखंड)
(11) कच्चा माल प्रभाग, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
(12) इंजीनियरी तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र, रांची (झारखंड) और
(13) निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र इलैक्ट्रोस्मैल्ट लिमिटेड (एमईएल) भी सेल की एक सहायक कंपनी है जिसमें सेल की 99.12 प्रतिशत शेयर पूंजी है। एमईएल का संयंत्र चंद्रपुर (महाराष्ट्र) में स्थित है और यह कंपनी फैरो मिश्र का उत्पादन करती है।

कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 396 के अंतर्गत निगमित कार्य मंत्रालय द्वारा दिनांक 28.7.2009 को जारी विलय संबंधी आदेशों के अनुसरण में इस्पात मंत्रालय के अधीन सरकारी क्षेत्र के एक उपक्रम भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड (बीआरएल) का 1.4.2007 से स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) में विलय कर दिया गया है। सेल में विलय के पश्चात तत्कालीन बीआरएल को सेल रिफ्रैक्ट्री यूनिट का नाम दिया गया है।

सेल ने अपनी हॉट मैटल उत्पादन क्षमता को अपनी विस्तार एवं आधुनिकीकरण के वर्तमान चरण-1 के अंतर्गत 13.42 मिलियिन टन प्रतिवर्ष से बढ़ाकर 23.46 मिलियन टन तक बढ़ाने की योजना की है जिसके वित्तीय वर्ष 2012-13 में पूरा होने की आशा है। चरण-11 में सेल अपनी क्षमता को आगे 26.18 मिलियन टन तक बढ़ाएगा।

**(2) राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आर आई एन एल)** (पंजीकृत कार्यालय च्एछ ब्लॉक, विशाखापट्टणम 530031 में है) भारत में स्थापित प्रथम तटीय आधारित एकीकृत इस्पात संयंत्र है। इसे 3.0 मिलियन टन प्रति वर्ष द्रव इस्पात क्षमता के साथ अगस्त, 1992 में चालू किया गया था।स्टेट आफ आर्ट टैक्नोलोजी के अंतर्राष्ट्रीय स्तर से मुकाबला करने के लिए बनाया गया है इसमें विस्तृत विद्युत बचत तथा प्रदूषण नियंत्रण उपाय शामिल हैं। कंपनी ने वर्ष 2019-20 तक चरणों में 20 मिलियन टन तक पहुँचने के लक्ष्य से अपनी निगमित योजना तैयार की है और इस समय 2011-12 तक 3.0 मिलियन टन से 6.3

मिलियन टन द्रव इस्पात उत्पादन करने के विस्तार संबंधी प्रथम चरण को पूरा कर रही है। भारत सरकार ने 8692.00 करोड़ रूपए की अनुमानित लागत से कंपनी के लिक्विड स्टील क्षमता के 3 मिलियन टन प्रतिवर्ष के स्तर को 6.3 मिलियन टन प्रतिवर्ष तक क्षमता विस्तार हेतु अपनी अनुमति दिनांक 28 अक्तूबर, 2005 को प्रदान कर दी। अनुमानित लागत में संशोधन कर 14,489 करोड़ रूपए किया गया है। इस परियोजना की समग्र लागत आंतरिक संसाधनों से पूरी की जाएगी तथा सरकार से बजटीय सहायता प्राप्त नहीं होगी। लिक्विड स्टील का चरण-वार क्षमता विस्तार वर्ष 2013 तक 7.3 मिलियन टन तक पहुंच जाएगा। आर आई एन एल, नीलांचल इस्पात निगम लिमिटेड (एन आई एन एल) में प्रमुख स्टेक अधिग्रहण करने की प्रक्रिया में है। यह प्रस्ताव भारत सरकार के विचाराधीन है।

वर्ष 2006-07 में कंपनी मिनी रतन कंपनी बनी तथा वर्ष 2010-11 में " नवरत्न" कंपनी बनी।

**(3) एन एम डी सी लिमिटेड (पंजीकृत कार्यालय : खनिज भवन, 10-3-311/ए, कैसल हिल्स, मसाब टैंक, हैदराबाद-500028) इस्पात मंत्रालय के अधीन** ट नवरत्नछ दर्जा प्राप्त करने वाली दूसरी कंपनी बन गई है। यह कंपनी देश में लौह अयस्क और हीरे का एकमात्र सबसे बड़ा उत्पादक है और डोलोमाइट, चूना पत्थर, मैंगनीज आदि जैसे विभिन्न खनिजों के अन्वेषण, विकास और शोषण कार्य में लगी है। एन एम डी सी की प्रमुख मर्चेनडाइज्ड लौह अयस्क खानें बैलाडिला लौह अयस्क खानों पर प्रचालित की जा रही है। एन एम डी सी लौह अयस्क की मांग को पूरा करने के लिए प्रमुख विस्तार पर विचार कर रहा है। बैलाडिला में डिपाजिट-।। बी खान तथा कर्नाटक के दौणिमलै में कुमारास्वामी खान जैसी परियोजनाएं प्रगति पर हैं। वर्ष 2010-11 में स्पंज आयरन इंडिया लिमिटेड का एन एम डी सी में विलय हो गया। इस विलयन के कारण एन एम डी सी ने च्स्पंज आयरनछ विनिर्माण के क्षेत्र में प्रवेश किया। कंपनी कार्बन मुक्त स्पंज आयरन पाऊडर, आर टी वी फेरिट पाऊडर, पिगमेंट ग्रेड फैरिक आक्साइड टिटानिया स्लैग, पिग आयरन तथा हार्ड प्योरिटी फैरिक आक्साइट जैसे ब्लू डस्ट से उच्च तकनीक तथा उच्च मूल्यवर्धक उत्पादों के उत्पादन के लिए गहन आर एंड डी के जरिए नए उत्पादों का विकास कर रही है। कंपनी उच्च मूल्य खनिज जैसे सोना, बीच सेंड से इलेमिनाइट, प्लेटिनम समूह के तत्वों आदि से विविध कार्यो तथा वर्टिकल इंटेग्रेशन परियोजनाएं जैसे पैलेट प्लांट तथा स्टील मेकिंग प्लांट की आयोजना कर रही है। एनएमडीसी लिमिटेड की एक सहायक कंपनी जे एंड के मिनरल डेवलपमेंट कार्पोरेशन, जम्मू में स्थित है। एनएमडीसी ने हाल ही में छत्तीसगढ़ में नागरनार में 3 मिलियन टन वार्षिक क्षमता का एक एकीकृत इस्पात संयंत्र स्थापित करने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है। चार वर्ष के अंतराल के पश्चात कंपनी ने मध्य प्रदेश में अपनी पन्ना स्थित हीरा खान में खनन कार्यकलाप पुन: शुरू किए हैं।

एन एम डी सी लिमिटेड ने वर्तमान खानों के क्षमता विस्तार, नई खानों को शुरू करने, स्पंज आयरन में मूल्यवर्धन पैलेट्स एवं स्टील के माध्यम से 2014-15 तक लौह अयस्क की 24 मिलियन टन की वर्तमान उत्पादन क्षमता को बढ़ाकर 40 मिलियन टन प्रतिवर्ष करने की योजना बनाई है।

स्पंज आयरन इंडिया लिमिटेड (सिल) का एन एम डी सी लि. में विलय हो गया है। इन दो कंपनियों के विलयन को 1 जुलाई 2010 को रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज के साथ दर्ज किया गया तथा इसके साथ ही सिल एक अलग पी एस यू नहीं रहा।

**(4) मैंगनीज ओर (इंडिया) लिमिटेड (मॉयल)** पंजीकृत कार्यालय, मॉयल भवन, 1 ए काटोल रोड, नागपुर-440013 में है) उच्च ग्रेड के मैंगनीज अयस्क का उत्पादक करने वाली सबसे बडी कंपनी है। इस्पात निर्माण हेतु आवश्यक सामग्री जिसका प्रयोग फैरो-मिश्र के उत्पादन हेतु मौलिक कच्ची सामग्री के लिए तथा शुष्क बैटरियों के उत्पादन हेतु डाईऑक्साइड अयस्क किया जाता है। मॉयल ने 90 के दशक

के दौरान कारोबार की मात्रा और लाभप्रदता में सुधार करने के लिए मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन में अपने कार्यकलापों का विस्तार किया है। विविधीकरण के एक भाग के रूप में कंपनी ने 600 एमटी वार्षिक प्रारंभिक क्षमता से 1991 में इलैक्ट्रोलिटिक मैंगनीज डाईऑक्साइड का उत्पादन करने के लिए एक परियोजना प्रारंभ की थी जिसका चरणबद्ध ढंग से 1500 एमटी वार्षिक तक विस्तार किया गया है। आगे और विविधीकरण करने के लिए मॉयल ने वर्ष 1998 के दौरान मध्य प्रदेश के बालघाट में 10000 एमटी वार्षिक संस्थापित क्षमता से 5 एमवीए क्षमता का एक फैरो मैंगनीज संयंत्र स्थापित किया था। वर्ष 2006-07 के दौरान कंपनी ने मध्य प्रदेश में नागदा हिल्स में 4.8 मेगावाट की विंड पावर इलेक्ट्रिसिटी जेनरेशन यूनिट स्थापित की है जिसका 20 मेगावाट तक आगे विस्तार किया गया।

कंपनी के प्रचालन में विस्तार को मद्देनजर रखते हुए मॉयल ने भिलाई के समीप नन्दिनी में और विशाखापट्टनम के समीप बोबिली में फैरो मिश्र उत्पादन इकाईयाँ स्थापित करने के लिए सेल और आरआईएनएल के साथ प्रमुखत: इन कंपनियों की फैरो मिश्र आवश्यकता को पूरा करने के लिए संयुक्त उद्यम स्थापित किए हैं। ये परियोजनाएं प्रारम्भिक चरणों पर हैं तथा इनका कार्यान्वयन जे वी द्वारा किया जाएगा और इन दो परियोजनाओं पर लागत 608.00 करोड़ रूपए अनुमानित है तथा इन दो परियोजनाओं में मॉयल की हिस्सेदारी 152.00 करोड़ रूपए (अनुमानित) है।

**(5) केआईओसीएल लिमिटेड (पहले कुद्रेमुख आयरन ओर कंपनी लिमिटेड) (पंजीकृत कार्यालय, 11 ब्लॉक, कोरमंगला, बंगलौर-560034 में है)** पूर्णत: सरकारी कंपनी है और इसका पंजीकृत कार्यालय बंगलौर में है, जिसे कर्नाटक राज्य में लौह अयस्क भण्डारों का विकास करने तथा उनसे उत्पादित लौह अयस्क सांद्रणों की बिक्री के लिए अप्रैल, 1976 में बनाई गई थी।

माननीय उच्चतम न्यायालय ने 31.12.2005 से कुद्रेमुख को खनन कार्य बंद करने के निर्देश दिए थे। तदनुसार, कुद्रेमुख पर खनन कार्य बंद करना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप कुद्रेमुख खानों से मैंग्नेटाइट अयस्क की आपूर्ति बंद हो गई तथा 2005-06 से कान्सन्ट्रेट एवं पैलेट्स दोनों के उत्पादन में गिरावट आई। इससे कंपनी के वित्तीय एवं वास्तविक दोनों निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। हालांकि कोन्सन्ट्रेट संयंत्र बंद करना पड़ा था। कंपनी ने हेमेटाइट अयस्क ने पेलेट्स उत्पादित करने के लिए पेलेट प्लांट में आवश्यक संशोधन किए थे जिसे आउटसोर्स किया गया।

**(6) हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड (एचएससीएल)** पंजीकृत कार्यालय 5/1, कोमिसेरियट रोड, हास्टिंग्स कोलकत्ता-700022 है) बोकारो, विजाग और सेलम जैसे इस्पात संयंत्रों की स्थापना और भिलाई, दुर्गापुर, बर्नपुर (इस्को) आदि इस्पात संयंत्रों के आधुनिकीकरण से सम्बद्ध बड़े-बड़े निर्माण कार्य किए हैं। अब कंपनी ने उच्च श्रेणी की योजना समन्वय और अत्याधुनिक तकनीकों के साथ अवसंरचना क्षेत्रों में भी अपनी गतिविधियां बढ़ाई हैं। इस्पात संयंत्रों में निर्माण संबंधी कार्यकलापों में कमी के चलते कंपनी ने अपने कार्यकलापों का विद्युत, कोयला, तेल एवं गैस जैसे अन्य क्षेत्रों में विस्तार किया है। इसके अलावा, कंपनी ने सड़क/राजमार्गों, पुलों, बांधों, भूमिगत संचार और परिवहन प्रणाली और उच्च स्तर की आयोजना वाले औद्योगिक तथा बस्ती परिसरों, समन्वय और आधुनिक तकनीकों आदि जैसे अवसंरचना क्षेत्रों में अपने कार्यकलापों को फैलाया है। जिसमें आयोजना, समन्वय और जटिल तकनीकों की आवश्यकता होती है। एचएससीएल एक आईएसओ: 9001-2000 कंपनी है तथा इसकी क्षमताएं निर्माण कार्यकलापों के लगभग सभी क्षेत्रों में हैं।

**कंपनी, भारत सरकार के ऋणों पर बढ़ती ब्याज देयताओं तथा वी आर एस खर्चों के कारण 1999 में सरकार द्वारा अनुमोदित पुनर्जीवन/पुनर्संरचना पैकेज के अन्तर्गत परिकल्पित परिणामों को प्राप्त करने में असमर्थ रही है। कंपनी के समक्ष आने वाली स्टीप प्रतिस्पर्धा, जिसके परिणामत: मार्जिन में कमी आई, ने भी वित्तीय**

**निष्पादन को प्रभावित किया है। तथापि, गत पाँच वर्षों के दौरान प्रचालन लाभों की धनात्मक प्रवृति को ध्यान में रखते हुए एक नया वित्तीय पुनर्संरचना प्रस्ताव विचाराधीन है।**

**(7) मेकॉन लिमिटेड :** देश में पहला परामर्शी और इंजीनियरी संगठन है जिसे आई एस ओ : 9001-2000 मान्यता प्राप्त है तथा जो वर्ल्ड बैंक एशियन डेवलपमेंट बैंक, यूरोपियन बैंक ऑफ रिकंस्ट्रक्शन एंड डेवलपमेंट तथा यूनाइटेड नेशन्स इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन में पंजीकृत है। यह कंपनी लोहा एवं इस्पात, रसायन, रिफाइनरीज तथा पैट्रो रसायनों, विद्युत, सड़क एवं राजमार्गों, रेलवे, जल प्रबंधन, पत्तन एवं बंदरगाह, गैस एवं तेल, पाइपलाइनों, अलौह खनन, सामान्य इंजीनियरिंग, पर्यावरण इंजीनियरिंग तथा संबद्ध/विविधीकृत क्षेत्रों में व्यापक विदेशी अनुभव सहित अग्रणी बहुविधिक डिजाइन, इंजीनियरिंग, परामर्शी और कांट्रैक्टिंग संगठन है।

मेकॉन लिमिटेड ने 1997-98 तक लगातार लाभ दर्शाया है। इस्पात क्षेत्र में मंदी की प्रवृत्ति अधिक मानवशक्ति तथा परामर्शी कार्य के मूल्य में कमी के कारण 1998-99 से 2003-04 तक कंपनी को हानि उठानी पड़ी। वर्ष 2005 से कंपनी ने 2003-04 में (-) 10.72 करोड़ से वर्ष 2009-10 में 82.62 करोड़ रूपए का कर पश्चात लाभ अर्जित किया।

**(8) एम एस टी सी लिमिटेड (पंजीकृत कार्यालय, 225 जगदीश बोस रोड, कोलकाता-700020 में है।) इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के नियंत्रणाधीन एक मिनी रत्न श्रेणी-1 पी एस यू है।** भारत सरकार का एक व्यावसायिक प्रतिष्ठान है। पहले यह लघु इस्पात संयंत्रों को वितरण के लिए कार्बन इस्पात गलन स्क्रैप का आयात करने वाली माध्यम एजेंसी के रूप में नामित थी । इसका मुख्यालय कोलकात्ता में स्थित है। इस कंपनी का माध्यम एजेंसी का स्वरूप फरवरी, 1992 से समाप्त हो गया। अब यह अन्य निजी व्यावसायिक कंपनियों की तरह पूर्णत: स्वतंत्र एवं प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में काम कर रही है। कंपनी ट्रेडिंग कार्यकलाप, ई-कॉमर्स, लौह तथा अलौह स्क्रैप का निपटान,सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों और रक्षा मंत्रालय सहित सरकारी विभागों में उत्पन्न होने वाले अधिशेष भंडारों तथा अन्य गौण सामग्रियों का कार्य देखती है। एम एस टी सी फैरो स्क्रेप निगम लि. (एफ एस एन एल) की धारक कंपनी है जिसके 100% प्रदत्त साम्या हिस्सा एम एस टी सी द्वारा धारित है।

**(9) फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड (एफ एस एन एल) पंजीकृत कार्यालय एफ एस एन एल भवन, इक्यूपमेंट चौक, सेन्ट्रल एवेन्यू, पोस्ट बॉक्स-37, भिलाई, छत्तीसगढ़-490001 में है। फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड, 28.3.1979 को निगमित एक संयुक्त क्षेत्र की कंपनी है। वर्तमान में यह इस्पात मंत्रालय के अधीन भारत सरकार का चमिनी रत्न-।। पी एस यूछ** है। यह एम एस टी सी लिमिटेड की एक सम्पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी है। कंपनी का मुख्य उद्देश्य सेल, आरआईएनएल और एनआईएनएल के सभी एकीकृत इस्पात संयंत्रों में स्लैग से स्क्रैप प्राप्त करना और आईआईएल तथा जेएसपीएल जैसे निजी क्षेत्र के इस्पात संयंत्रों में प्रचालन करना भी है। कंपनी अग्रणी संगठनों में से एक है जो देश के धातुकर्मीय उद्योगों को विशेषइातायुक्त सेवाएं उपलब्ध करवाती है। यह कंपनी पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, आन्ध्र प्रदेश एवं महाराष्ट्र में स्थित अपनी 10 इकाइयों के जरिए मिल सर्विस सोल्यूशन वितरित करने के लिए डिजाइन, निर्माण एवं संचालन करती है तथा सुविधाओं एवं अवसंरचना को बनाए रखती है।

**10. बर्ड ग्रुप ऑफ कंपनीज** (पंजीकृत कार्यालय: एफडी 350, साल्ट लेक, सेक्टर-3, कोलकाता-700106): बर्ड एंड कंपनी लिमिटेड नामक उपक्रम के वर्ष 1980 में राष्ट्रीयकरण होने के परिणामस्वरूप निम्नलिखित 7 कंपनियां बर्ड एंड कंपनी लिमिटेड (एक्वीजीशन एंड ट्रॉंसफर ऑफ अंडरटेकिंग्स एंड अदर प्रोपर्टीज) एक्ट, 1980 के कारण दिनांक 25 अक्तूबर, 1980 से इस्पात मंत्रालय भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में आ गए हैं और इन्हें संयुंक्त रूप से बर्ड ग्रुप ऑफ कंपनीज कहा जाता है:-

(1) ईष्टर्न इंवेस्टमेंट लिमिटेड (ईआईएल)
(2) द उड़ीसा मिनरल्स डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड, (ओएमडीसी)
(3) द बिसरा स्टोन लाइम कंपनी लिमिटेड (बीएसएलसी)
(4) द करनपुरा कंपनी लिमिटेड (केडीजीएल)
(5) स्कॉट एंड सेक्बी लिमिटेड (एसएसएल)
(6) बुराकर कोल कंपनी लिमिटेड (बुराकर)
(7) बोरिया कोल कंपनी लिमिटेड (बोरिया)

प्रथम तीन कंपनियां अर्थात इआईएल, ओएमडीसी और बीएसएलसी प्रचालन कर रही हैं तथा अन्य चार कंपनियां अर्थात केडीसीएल, एसएसएल बुराकर और बोरिया का परिसमापन किया जा रहा है। बर्ड ग्रुप ऑफ कंपनीज के संबंध में की गई पुनर्संरचना के अनुसार ईआईएल की धारक कंपनी आरआईएनएल बन गई है और ओएमडीसी एवं बीएसएलसी की धारक कंपनी ईआईएल बन गई है। ईआईएल, ओएमडीसी और बीएसएलसी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम बन गए हैं।

## 5. रिजल्ट फ्रेमवर्क डाक्यूमेंट (आरफडी) 2010-11

सरकार रिजल्ट फ्रेमवर्क डाक्यूमेंट (आरफडी) के आधार पर एक व्यापक कार्य निष्पादन प्रबंधन प्रणाली का क्रियान्वयन कर रही है। आरएमडी में न केवल विभागों के सम्मत उद्देश्य, नीतियां, कार्यक्रम और परियोजनाएं शामिल की गई हैं बल्कि सफलता के सूचक और क्रियान्वयन में प्रगति को मापने के लक्ष्य भी शामिल किए गए हैं। वर्तमान में इस्पात मंत्रालय समेत 62 मंत्रालय/विभाग इसका कियान्वयन कर रहे हैं। वर्ष 2010-11 के लिए आरएफडी में प्राप्त लक्ष्यों में अगले 5 वर्षों अर्थात 2011-16 के लिए स्टील क्षेत्र हेतु एक रणनीतिक योजना तैयार किया जाना और जनता की शिकायतों के समाधान एवं निगरानी के लिए सेवोत्तम शिकायत प्रणाली का सृजन किया जाना शामिल है।

**********

# अध्याय-II

## वर्ष 2011-2012 के लिए प्रमुख स्कीमों का निष्कर्ष बजट

उनके अवधारणात्मक, रूपांकन और कार्यान्वयन को निष्कर्षोन्मुखी बनाकर विकास कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा 2005-06 में निष्कर्ष बजट की अवधारणा शुरू की गई थी। यह इस अवधारणा पर आधारित है कि परिव्यय अनिवार्य रूप से निष्कर्ष नहीं होता। निष्कर्ष बजट का अभिप्राय न केवल मध्यवर्ती वास्तविक उत्पादन जिसे अधिक तात्कालिक ढंग से मापा जा सकता है, का ट्रैक करना है, बल्कि सरकार के हस्तक्षेप के अन्तिम उद्देश्य का निष्कर्ष है। इसके लिए सुदृढ़ परियोजना/कार्यक्रम बनाने, मूल्यांकन क्षमताओं के साथ-साथ प्रभावी बेंच-सुपुर्दगी प्रणालियों की आवश्यकता होती है। सम्पूर्ण कार्रवाई को मानिटर करने योग्य बनाकर सुपुर्दगी की यूनिट लागत की बेंच-मार्किंग सहित निष्कर्ष विकास को मापने योग्य परिभाषित करना है। धन जिसे वांछित निष्कर्ष सहित प्रस्तावित प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जाना चाहिए, के समय पर प्रवाह को सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त प्रणाली की आवश्यकता है तथा उपयुक्त रिर्पोटिंग के जरिए उचित लेखांकन, लेखा परीक्षा एवं मूल्यांकन तंत्र की आवश्यकता है। इसलिए निष्कर्ष बजट सभी प्रमुख कार्यक्रमों के विकास निष्कर्ष को मापने के लिए तंत्र तैयार करने का एक प्रयास है।

10वीं योजना (2002-07) के अंत तक इस्पात मंत्रालय किसी योजनागत स्कीम का कार्यान्वयन नहीं कर रहा था। 11वीं योजना (2007-12) में "लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए योजना" नामक एक नई योजना को 118.00 करोड़ रुपए के प्रावधान सहित घरेलू लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए शामिल किया गया है। औपचारिक रूप से यह योजना कार्यान्वयन हेतु 23.01.2009 को मंजूर की गई थी। इस स्कीम के तहत दिसंबर, 2010 तक कुल 111.11 करोड़ रूपए परिव्यय से आठ (8) आर एंड डी परियोजना प्रस्तावों को अनुमोदन प्रदान किया गया था।

इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रम अपने-अपने प्रचालनों के क्षेत्रों से संबंधित विभिन्न योजनाएं/कार्यक्रम बनाते हैं और कार्यान्वित करते हैं। सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की स्कीमें उनकी वार्षिक योजना अथवा दीर्घकालीन योजनाओं की घटक होती हैं। चूंकि प्रत्येक उपक्रम की अपनी-अपनी कई स्कीमें हैं, जो कि अधिकांशत: कंपनी के दिन-प्रतिदिन के कार्यों और कंपनी के प्रचालनों से जुड़े एमओयू से संबंधित हैं इसलिए निष्कर्ष बजट में सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की सभी स्कीमों को शामिल करना मुश्किल होगा। इसलिए यह निर्णय लिया गया कि इस्पात मंत्रालय के निष्कर्ष बजट में केवल 50 करोड़ रूपए से अधिक लागत की मंजूर/अनुमानित लागत की प्रमुख परियोजनाओं को ही शामिल किया जाए जैसा कि नीचे तालिका में दर्शाया गया है:-

# परिव्यय और निष्कर्ष /लक्ष्य (2011-12) का विवरण
## (50.00 करोड़ रूपए से अधिक की अनुमानित/मंजूर लागत की योजनाएं)

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 (i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| क | **50.00 करोड़ रूपए से अधिक की अनुमानित/मंजूर लागत की योजनाएं** | | | | | | | | | |
| 1. | **स्टील अथारिटी आफ इंडिया लिमिटेड (सेल)** | | | | | | | | | |
| (क) | भिलाई स्टील प्लांट (बीएसपी) | | | | | | | | | |
| (i) | ऑक्सीजन संयंत्र-।। में 700 टीपीडी एयर सेपरेशन यूनिट (एएसयू) | ऑक्सीजन, नाइट्रोजन व आर्गन की मांग में हुई बढ़ोतरी को पूरा करने के लिए ऑक्सीजन संयंत्र-।। में नया एएसयू स्थापित किया जा रहा है। | 258.18 | -- | -- | 60.00 | 700 टन ऑक्सीजन प्रतिदिन | जुलाई, 2009 | मई, 2011 | मै0 क्राइयोजेन के साथ ठेका समाप्त, निविदा पुन: दी गई। मै0 एयर लिक्विड के साथ नया ठेका हस्ताक्षरित |
| (ii) | कोक ओवन बैटरी (सीओबी) -6 का पुनर्निर्माण | उत्पादन में सुधार करना तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के नवीनतम प्रदूषण मानकों को प्राप्त करना। | 191.20 | -- | -- | 30.00 | -- | जनवरी, 2010 | फरवरी, 2011 | सिलिका ईटों की लगातार अनुपलब्धता |
| (iii) | बीएसपी का विस्तार | लो ग्रेडिंग तथा इनर्जी इंट्रींसिक यूनिटों को फेज आउट करना, सेमीज को कम करना । प्रमुख सुविधाओं में 7 मीटर लम्बी कोक ओवन बैटरी, सिन्टर प्लान्ट 3 में सिन्टर मशीन, नयी 4060 क्यूविक मीटर ब्लास्ट फर्नेस, नयी स्टील मैल्टींग शॉप, कन्टीनिउस कास्टींग प्लान्ट, बार और रॉड मिल, यूनिवर्सल रेल मिल आदि शामिल है । | 18847.00 | -- | -- | 5730.00 | तप्त धातु की क्षमता 4.82 एमटीपीए से बढ़ाकर 7.5 एमटीपीए करना | मार्च, 2013 | मार्च, 2013 | सभी प्रमुख पैकेजों के लिए आर्डर दे दिये गये है और इन पर कार्रवाई की जा रही है । |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 (i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| (ख) | राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) | | | | | | | | | |
| (i) | ब्लास्ट फर्नेस (बीएफ) -4 में कोल डस्ट इंजेक्शन सिस्टम | कोक दर में कमी तथा फर्नेश उत्पादकता में सुधार के लिए तकनीकी आवश्यकता | 70.71 | -- | -- | 11.00 | 1:1 अनुपात के आधार पर कोक का पुल्वेराईज्ड कोल में प्रतिस्थापना। 120 किग्रा/ टीएचएम की दर से ब्लास्ट फर्नेस में कोल इंजेक्शन दर । | अक्टूबर 2008 | अप्रैल, 2011 | मै0 सिनो स्टील, चीन द्वारा डिजायन और इंजीनियरी में प्रारंभिक विलम्ब। मै0 सिनो स्टील द्वारा सिविल और स्ट्रक्चरल कार्य तथा उपस्करों की सप्लाई में विलम्ब। वीजा नीति में परिवर्तन के कारण चीन के विशेषज्ञों के आगमन में विलंब हुआ। सिनो स्टील और सब एजेंसियों के मध्य वाणिज्यिक विवाद |
| (ii) | आरएसपी का विस्तार | तप्त धातु क्षमता बढ़ाकर 4.5 एमटीपीए करना । प्रमुख सुविधाओं में नई 7 मीटर लम्बी कोक ओवन बैटरी, नया सिन्टर प्लान्ट , नयी 4060 क्यूबिक मीटर ब्लास्ट फर्नेस, नया बेसिक आक्सीजन फर्नेश कनवरटर, एक स्लैब कास्टर, नयी प्लेट मिल, बीओओ आधार पर नया आक्सीजन प्लान्ट आदि शामिल है । | 12922.00 | -- | -- | 2619.00 | तप्त धातु क्षमता 2.12 एमटीपीए से बढ़ाकर 4.5 एमटीपीए करना। | मार्च, 2013 | मार्च, 2013 | सभी प्रमुख पैकेजों के लिए आर्डर दे दिये गये है और इन पर कार्रवाई की जा रही है । |

(करोड़ रू0))

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| (ग) | बोकारो इस्पात संयंत्र (बीएसएल) | | | | | | | | | |
| (i) | सिंटर संयंत्र में ईएसपी सहित बैटरी साईक्लोन्स का प्रतिस्थापन। | केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मानदण्डों के अनुसार आऊटलेट डस्ट के उत्सर्जन स्तर की सांविधिक जरूरत को पूरा करने के लिए इलैक्ट्रोस्टेटिक प्रीसीपीटेटर्स द्वारा बैटरी साईक्लोन का प्रतिस्थापन। | 80.60 | -- | -- | 15.00 | आऊटलेट डस्ट के उत्सर्जन स्तर में 150 एम$^3$/एनएम$^3$ पर नियंत्रण करने के लिए 900,000 एम$^3$/घंटा क्षमता के 6 ईएसपी। | अगस्त 2010 | अगस्त, 2012 | ई.एस.पी-5 के उत्थापन के लिए कार्य बंद नहीं किया जाना। एसआरईपीसी द्वारा टावर क्रेन की अनुपलब्धता । |
| (ii) | नए टर्बो ब्लोवर न. 8 की स्थापना | बीएफ-2 की कोल्ड ब्लास्ट (सीबी) की बढ़ी हुई जरूरत को पूरा करना। | 125.92 | -- | -- | 15.00 | सी बी में 4000 एनएम$^3$/मिनट का ब्लोवर डिस्चार्ज वोल्यूम और ब्लोवर एंड में 3.9 किग्रा/सीएम$^3$ का डिस्चार्ज प्रैशर। | अगस्त 2009 | मई 2011 | मै0 राजेलैक्ट्रोपोम के साथ ठेका रद्द। नया आर्डर एनआईसीसीओ/एसबीडब्लयू चीन/एमईएस, जापान को दिया गया। |
| (iii) | सीओबी-1 व 2 का पुनर्निर्माण। | कोक के उत्पादन में सुधार व पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के नवीनतम प्रदूषण मानदंडों को प्राप्त करना। | 500.90 | -- | -- | 90.00 | उत्पादन में सुधार व पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के नवीनतम प्रदूषण मानदंडों को प्राप्त करना। | अप्रैल 2010 | अगस्त, 2011 | |
| (iv) | बीएसएल का विस्तार | इनर्जी सधन यूनिटों को फेज आउट करना तथा ऊर्जा दक्ष प्रौद्योगिकी शुरू करना। प्रमुख सुविधाओं में नयी कोल्ड रोलिंग मिल कम्प्लैक्स, स्टील मैल्टींग शॉप का आधुनिकीकरण, कोक ओवन बैटरियों का पुनर्निमाण, एक ब्लास्ट फर्नेस का उन्नयन, हॉट स्ट्रीप मिल का उन्नयन आदि शामिल है । | 6951.00 | -- | -- | 1309.00 | 1.2 एमटीपीए का नया कोल्ड रोलिंग मिल कॉम्पलैक्स | दिसम्बर 2011 | दिसम्बर 2011 | सभी प्रमुख पैकेजों के लिए आर्डर दे दिये गये है । ब्लास्ट फर्नेश संख्या 2 का उन्नयन और कोक ओवन बैटरी संख्या एक का पुनर्निमाण जैसे संबंधित कुछ पैकेजों को पूरा कर लिया गया है । अन्य पैकेज क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में है । |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 (i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| (घ) | इस्को स्टील प्लांट | | | | | | | | | |
| (i) | आईएसपी का विस्तार | 2.7 एमटीपीए तप्त धातु, 2.5 एमटीपीए अपरिष्कृत इस्पात और 2.37 एमटीपीए विक्रेय इस्पात का उत्पादन करने के लिए नई सुविधाएं स्थापित करना। प्रमुख सुविधाओं में नई 7 मीटर लम्बी कोक ओवन बैटरी, नया सिन्टर प्लान्ट , नयी 4060 क्यूविक मीटर ब्लास्ट फर्नेस, नयी स्टील मेल्टींग शॉप, कन्टीनिउस कास्टींग प्लान्ट, हैवी सेक्शन मिल, वायर रॉड और बार मिल आदि शामिल है । | 16073.74 | -- | -- | 2069.00 | 2.7 एमटीपीए तप्त धातु, 2.5 एमटीपीए अपरिष्कृत इस्पात और 2.37 एमटीपीए विक्रेय इस्पात | दिसम्बर 2010 | दिसम्बर 2011 | सभी प्रमुख पैकेजों के लिए आर्डर दे दिये गये है नया सिन्टर प्लान्ट और पिग कास्टींग मशीन जैसे कुल पैकेज पूरे होने वाले है । अन्य पैकेज क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों में है । मृदा की कठिन और अप्रत्यासित स्थिति के कारण सिविल और स्ट्रक्चरल कार्य बडी मात्रा में बढ़ गया है । |
| (ङ) | रॉ मैटेरियल डिविजन (आरएमडी) | | | | | | | | | |
| (i) | बोलानी आयरन ओर माइन की लोडिंग क्षमता में वृद्धि करना | लोडिंग क्षमता बढ़ाने के लिए और रेलवे लाइन में संशोधन करने के लिए, तथा फुल रैक लोडिंग के लिए ओवरहैड इलेक्ट्रिकल वर्क तथा सिग्नलिंग तथा दूरसंचार। | 124.88 | -- | -- | 15.00 | -- | दिसम्बर 2009 | मार्च 2011 | मै0 टैकप्रो द्वारा डिजाईन इंजीनियरिंग सिविल एवं स्ट्रक्चरल कार्यों में धीमी प्रगति। सिविल कार्य, मैकेनिकल तथा इलेक्ट्रिकल कार्यों में विलंब के कारण उत्थापन कार्य में विलंब हुआ। रेलवे भूमि का अनाधिकृत इस्तेमाल। |
| (ii) | मेघाहातावुरू लौह अयस्क खान की उत्पादन क्षमता में वृद्धि | सेल के विस्तार के पश्चात आवश्यकता की पूर्ति के लिए लौह अयस्क में वृद्धि करने संबंधी तकनीकी आवश्यकता | 125.78 | - | - | 40.00 | परिसज्जित उत्पाद की क्षमता को 4.3 एमटीपीए से 6.0 एमटीपीए करना | अप्रैल 2012 | अप्रैल 2012 | - |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| (च) | सामान्य | | | | | | | | | |
| (i) | सेल की जगदीशपुर इकाई का पुनरूद्धार | क्षेत्र में परिसज्जित तथा मूल्यवर्धित उत्पादों की मांग की पूर्ति | 105.42 | - | - | 40.00 | 150,000 टन/वर्ष टीएमटी बार 10,000 टन/वर्ष क्रैश बेरियर्स 13,000 टन/वर्ष कोरूगेटेड शीट्स | अक्टूबर 2011 | अक्टूबर 2011 | -- |
| 2. | राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल) | | | | | | | | | |
| (i) | कोक ओवन बैटरी (सीओबी) सं. 4, चरण-I | कोक की जरूरतों एवं शेष गैस को पूरा करने के लिए अन्य तीन कोक ओवन बैटरियों की बड़े पैमाने पर मरम्मत के दौरान भी तप्त धातु व द्रव इस्पात के उत्पादन को इस स्तर पर बनाए रखने हेतु एक प्रतिस्थापन बैटरी की आवश्यकता होगी । | 380.46 | -- | -- | 20.00 | 0.75 एमटी कोक का उत्पादन करना | -स्वतंत्र बैटरी के रूप में सीओबी-4 का परिचालन करना- | 20.4.09 को बैटरी-4 को शुरू किया गया। | बैटरी-4 चालू कर दी गई तथा नियमित रूप से प्रचालन हो रहा है।भुगतान मुख्य रूप से निष्पादन गारंटी, अंतिम स्वीकृति और दावों के निपटान से संबंधित हैं। |
| (ii) | कोक ओवन बैटरी (सीओबी) सं0 4- चरण-II | स्वंतत्र बैटरी के रूप में सीओबी-4 का प्रचालन करना। गैस का पूरा उपयोग तथा अतिरिक्त उपोत्पाद सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए उपोत्पाद के बेहतर औचित्यकरण में वृद्धि और कोयल संभाल में शेष सुविधाएं। | 355.30 | -- | -- | 112.00 | स्वंतत्र बैटरी के रूप में सीओबी-4 का प्रचालन करना। उपोत्पाद की रिकवरी में वद्धि | उपोत्पाद की रिकवरी में वद्धि | कोल हैंडलिंग साईड: सितम्बर 11 उपोत्पाद साईड: अक्टूबर 12 | कोल साईड्स: कोक के उच्चतर उत्पादन की दिशा में सितम्बर 2011 के अंत तक अतिरिक्त सुविधाओं के शुरू होने की संभावना है। उपोत्पाद साईड: निविदादाताओं की कमजोर प्रक्रिया के कारण अनेकों बार पुनर्निविदा देने के बाद बैंचोल रिकवरी प्लांट पैकेज में मै0 मेकॉन को आर्डर दिए गए तथा अब अक्टूबर 2012 के अंत तक इस कार्य को पूरा कर लिया जाएगा। |

(करोड़ रू0))

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| | | | | | | | | | | |
| (iii) | द्रव इस्पात का 6.3 एमटीपीए तक विस्तार। | संयंत्र की क्षमता में वृद्धि। | 8692.00 | -- | -- | 1600.00 | द्रव इस्पात के उत्पादन को बढ़ाकर 6.3 एमटीपीए क्षमता करना । | द्रव इस्पात के उत्पादन को बढ़ाकर 6.3 एमटीपीए क्षमता करना ।-- | चरण-1 2010-11 के लिए प्रचालन तथा स्थिरीकरण की अवधि (सिंटर प्लांट-3, बीएफ-3, एसएमएस-2 तथा डब्ल्यूएमआर-2) चरण-II 2011-12 (स्पेशल बार मिल और स्ट्रक्चरल मिल) | भारत सरकार के समक्ष 12499 करोड़ रू0 की संशोधित अनुमानत लागत अनुमोदन के लिए प्रस्तुत की गई। पावर प्लांट-II तथा तीसरा कनवर्टर एवं एसएमएस-II का चौथे कास्टर की अनुमानत लागत 1990 करोड़ रू0 है और तथा तीसरे कनवर्टर तथा चौथे कास्टर के लिए एक परामर्शदाता के रूप में मेकान को तैनात किया गया है। |
| (iv) | एयर सैपरेशन प्लांट (ए एस यू - 4) | कंबाइंड ब्लोइंग प्रोसेस हेतु ऑर्गन की कमी होने पर अतिरिक्त सुविधा प्रदान करना । उत्पादित ऑक्सीजन बीएफ में प्रयुक्त की जाती है । | 299.00 | -- | -- | 27.00 | 600 टन क्षमता के दो संयंत्र | एस एम एस मे द्रव इस्पात के उत्पादन और बी एफ में तप्त धातु के उत्पादन में इससे मदद मिलेगी | एएसयू-4 दिसम्बर 10 | एएसयू-4: इकाई की स्थापना का कार्य पूरा हो चुका है तथा यह अक्टूबर, 2010 में प्रचालित हो चुकी है और स्थिरीकरण के अधीन है । |
| (v) | बीएफ-I और बीएफ-II के लिए पुल्वेराईज्ड कोल इंजेक्शन | कम महंगे पुल्वेराईज्ड कोल की तुलना में महंगे बीएफ कोक की खपत में कमी के लिए इंजेक्शन सिस्टम। | 130.00 | -- | -- | 21.00 | तप्त धातु का वर्धित उत्पादन। तप्त धातु की उत्पादन की लागत में कमी करना। | -- | मार्च 2011 | विस्तृत इंजीयरिंग, सिविल ओर स्ट्रकचरल कार्य लगभग पूरा हो गया है साईट पर चीन के उपस्करों की प्राप्ति हो चुकी है और विदेशी विशेषज्ञों के परिवेक्षण में उत्थापन कार्य प्रगति पर है तथा इसके मार्च, 2011 के प्रचालित होने की योजना है । |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 (i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| (vi) | लौह अयस्क खान तथा कोककर कोयला खानों का अधिग्रहण | कच्चे माल के लिए आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और लागत में कमी करना। | 600.00 | -- | -- | 10.00 | आरआईएनएल/वीएसपी के पास कोककर कोयला/लौह अयस्क के लिए निजी स्रोत नहीं हैं और खानों के अधिग्रहण के लिए परिव्यय शामिल हैं। | -- | जारी | लौह अयस्क खानों के आबंटन के लिए राज्य सरकारों के साथ कार्रवाई की जा रही है तथा विदेशों में लौह अयस्क खानें अधिग्रहित करने की सभांवनाओं का पता लगाया जा रहा है। आरआईएनएल को दो कोककर कोयला खानें आबंटित की गई हैं जो व्यवहार्य नही है । |
| (vii) | लौह अयस्क भ्ंडारण के लिए सुविधाएं | लौह अयस्क भण्डारण सुविधा बढ़ाना | 481.00 | -- | -- | 177.00 | लौह अयस्क भंडारण सुविधा 30 दिन के लिए बढ़ेगी। | -- | मार्च 2012 | निरस्तीकरण तथा प्रमुख पैकेजों हेतु पुन: निविदा जारी करने के कारण परियोजना का कार्यक्रम पुन: निर्धारित किया गया । संयंत्र के परिचालन पर लौह अयस्क भंडारण परियोजना में वृद्धि, यद्यपि इसमें विलम्ब हुआ, से कोई प्रभाव नहीं पड़ा है क्योकि केवल स्टाक को बढ़ाने के लिए इसकी आवश्यकता है । |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 (i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| (viii) | अनुषंगी सुविधाओं सहित 330 टीपीएच (छठा) बॉयलर | स्टीम आवश्यकता को बढ़ाना। | 350.00 | -- | -- | 54.00 | विस्तार इकाईयों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रोसेस स्टीम बढेंगे और विद्युत के उत्पादन में मदद मिलेगी । | विस्तार की पूरक स्टीम आवश्यकता को पूरा करना और विद्युत उत्पादन में सहायता करना । | जून 2011 | मैसर्स भेल द्वारा आपूर्ति में और आर आई एन एल द्वारा सभी पैकेजों हेतु साईट गतिविधियों पर अनुवर्ती कार्रवाई में सुधार हुआ है तथा संयुक्त सचिव (इस्पात) द्वारा भी मामले को उठाया गया है लेकिन बॉयलर 6 एंव टी जी 5 के पूरे होने का कार्य अभी भी चिन्ता का विषय है । मैसर्स भेल द्वारा मामले पर कार्रवाई की जा रहीं है । |
| (ix) | 67.5 मेगावाट का टीजी-5 पावर इवेक्यूएशन सिस्टम | अतिरिक्त विद्युत आवश्यकताओं को पूरा करना। | 358.00 | -- | -- | 71.00 | विस्तार इकाइयों की विद्युत आवश्यकता का आंशिक रूप से उत्पादन करना। | निरन्तर विद्युत आवश्यकता को पूरा करना । | जून 2011 | |
| (x) | एपी ट्रांसको के 220 केवी सिस्टम को सुदृढ़ करना। | 400 एमवीए की विद्युत की ट्रांसमिशन के लिए एपी पॉवर ग्रिड को सुदृढ़ करना। | 86.00 | -- | -- | 7.00 | विस्तार होने पर आरआईएनएल के लिए 400 केवीए की संविदागत मांग प्राप्त करने में सक्षम होगा। | -- | सितम्बर 2012 | कुछ स्पटीकरणों के कारण एपट्रांस्कों को भुगतान में विलम्ब हुआ । |
| (xi) | 400 एमवीए पावर प्राप्त करने के लिए 220 केवीए के पॉवर सिस्टम का संवर्धन। | विस्तार आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 400 एमवीए पॉवर प्राप्त करने में सक्षम बनने हेतु सब-स्टेशनों जैसे वीएसपी के इंटरनेल सिस्टमों को सुदृढ़ करना। | 58.10 | -- | -- | 13.00 | वीएसपी में 400 एमवीए पॉवर प्राप्त करने हेतु संवर्धन। | -- | फरवरी 2011 | -- |
| (xii) | बीएफ-I & II कैटेगरी-I मरम्मत | कैटेगरी-I बड़े पैमाने पर मरम्मत करना तथा विद्यमान 3200 घन मीटर क्षमता को बढ़ाकर 3850 घन मीटर करना। | 1760.00 | -- | -- | 500.00 | तप्त धातु का उत्पादन बढ़ाकर 0.5 मिलियन टन से 2 मिलियन टन तथा 2.5 मिलियन टन करना। | -- | समझौते की तारीख से 22 माह | बीएफ- I से सम्बन्धित प्रमुख पैकेज के लिए आर्डर दे दिये गए है दिनांक 01.11.2010 को एलओआई प्रदान की गई । |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 (i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| (xiii) | सिंटर प्लांट उपत्पादकता में वृद्धि करना। | बीएफ की मात्रा में वृद्धि के अनुरूप सिंटर के उत्पादन में वृद्धि करना। यह वर्तमान प्रदूषण नियंत्रण मानदंडों को पूरा करने के लिए है। | 343.00 | -- | -- | 70.00 | सिंटर का उत्पादन 5.5 एमटी से बढ़ाकर 6.8 एमटी करना। | -- | बीएफ कटेगरी मरम्मत के साथ मिलान करना | परामर्श दता एर्जेसी की नियुक्ति के लिए कांट्रेक्ट प्रक्रियाधीन है । |
| (xiv) | एसएमएस कंवर्टर की मरम्त | 3 कनवर्टरों की विश्वसनीयता में सुधार करना क्योंकि मौजूदा उपस्करों का अनुमानित जीवनकाल लगभग पूरा हो चुका है। इससे यह वर्तमान प्रदूषण नियंत्रण मानदंडों को पूरा करने के लिए है। | 180.00 | -- | -- | 35.00 | कनवर्टरों को बदलने के लिए टैक्नोलॉजिकल आवश्यकता। | -- | बीएफ कटेगरी मरम्मत के साथ मिलान करना | ग्लोवल निविदा खोली गई तथा इसे अंतिम रूप दिया जा रहा है । |
| (xv) | सिंटर मशीन 1 और 2 के सिंटर स्ट्रेटलाइन कूलर संबंधी 20.6 मेगावाट की वेस्ट हीट रिकवरी परियोजना | ग्रीन प्लान ऐड के तहत न्यू एनर्जी एंड इंडस्ट्रियल टेक्नालॉजी आर्गेनाईजेशन (एनईडीओ) के प्रौद्योगिकिय सहयोग के तहत सिंटर मशीन 1 और 2 के वेस्ट हीट रिकवरी सिस्टम आन स्ट्रेट लाइन कूलर के जरिए 20.6 मेगावाट विद्युत का उत्पादन करना। | 96.00 | -- | -- | 80.00 | सिंटर मशीनों की वेस्ट हीट से और कोई फोसिल ईंधन जलाए बगैर 20.6 मेगावाट विद्युत का उत्पादन करना। | -- | 25.03.2012 (समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर करने की तारीख से 34 माह उदाहरणत: 25.5.2009) | परामर्श दाता के रूप में मैसर्स मेकॉन की नियुक्ति की गई । सिविल स्ट्रक्चरल और जलप्रणाली पैकेजों के लिए आर्डर दे दिए गए है । जापान से उपस्कर की प्राप्ति प्रक्रियाधीन है । |
| (xvi) | वाटर भंडारण सुविधाओं में वृद्धि | विस्तार की जल संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 16 एम क्यू एम क्षमता के अतिरिक्त भंडारण जलाशय का निर्माण | 220.00 | -- | -- | 10.00 | जल भंडारण की क्षमता बढ़ाकर 16 एमक्यूएम करना। | -- | -- | सर्वेक्षण तथा मृदा जांच का कार्य पूरा हो गया है । ग्रिन बेल्ट की सूटिंग के लिए वन मंत्रालय से मंजूर प्राप्त करने के बाद आगामी कार्य किये जाएगें |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 (i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| (xvii) | तीसरा कनवर्टर और चौथा कास्टर | तीसरा कनवर्टर और चौथा कास्टर लगा कर उत्पादित अतिरिक्त तप्त धातु को इस्पात में परिवर्तित करना (मौजूदा धमन भट्टियों की केटगरी 1 मरम्मत के पश्चात) | 884.00 | -- | -- | 100.00 | इस्पात का उत्पादन बढ़ाकर 0.97 एमटी करना। | -- | संविदा हस्ताक्षरित होने की तारीख से 30 माह (अनुमानित सितम्बर 2012) | परामर्श दाता से संबंधित अंतिम निर्णय ले लिया गया है । जनवरी 2011 में कनवर्टर के लिए निविदा जारी कर दी गई । आवश्यकता के अनुरूप मार्च 2011 के अंत तक कास्टर के लिए निविदा जारी की जानी है । |
| (xviii) | एएमआर स्कीमें | संयंत्र की अच्छी देखरेख बनाए रखना | जारी | -- | -- | 125.00 | उपस्करों की अच्छे रखरखाव को बनाये रखना तथा संयंत्र की कार्यशील जीवन के संदर्भ में उत्पादन / उत्पादकता के वर्तमान स्तर को बनाए रखना | -- | जारी | -- |
| (xix) | आर एंड डी स्कीमें | उत्पादकता में वृद्धि करना / लागत में कमी करना / नए उत्पादों का विकास करना | जारी | -- | -- | 14.00 | जॉच अध्ययन, असफल विश्लेषण के जरीये प्रचालन गतिविधियों हेतु प्रौद्योगिकी समाधानों के साथ-साथ परेशानी उत्पन्न करने वाली वर्तमान प्रौद्योगिकी का विकास और लागत में कमी करने / उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रक्रिया मानदण्डों का आलोचनात्मक गहन परीक्षण । | -- | जारी | -- |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक/अब अनुसूचित | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 3. | केआईओसीएल लिमिटेड | | | | | | | | | |
| (i) | मंगलौर में स्थाई रेलवे साइडिंग का विकास | मैग्नेटाईट लौह अयस्क सांद्रण देश में उपलब्ध नहीं होगा और पैलेट संयंत्र के प्रचालन के लिए कच्चे माल के रूप में बेल्लारी/हॉस्पेट के उच्च ग्रेड के हैमेटाईट लौह अयस्क का प्रयोग करना दीर्घकाल के लिए एक वैकल्पिक स्रोत माना जाता है। अधिकांश कच्चे माल की ढुलाई रेल द्वारा की जानी है इसलिए मंगलौर में एक स्थायी रेलवे साइडिंग विकसित करने का प्रस्ताव है। | 130.00 | -- | -- | 10.00 | मंगलौर में प्रति वर्ष 4 एमटी लौह अयस्क की प्राप्ति | -- | आवश्यक सांविधिक मंजूरियों सहित नया कार्यक्रम बाद में निर्धारित किया जाएगा। | मैसर्स केआरएल ने प्राप्त डीपीआर प्रस्तुत कर दी है । सुरक्षा कारणों के लिए डायमण्ड क्रासिंग से बचने के लिए केआरएल ने पूर्व प्रस्तावित रूट को पुर्न रेखांकित किया है जिससे केआईएडीबी भूमि की स्वेपिंग और निजी भूमि की खरीद आवश्यक हो गई है कम्पनी उक्त भूमि को निजी पार्टियों से अधिग्रहण करने की सम्भावना का पता लगा रही है । निदेशक मण्डल के समक्ष इस प्रस्ताव को विचार के लिए रखा गया । तथापि बोर्ड ने कुछ स्पटीकरण मांगे है जिन्हे बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है । |
| (ii) | रेल द्वारा लौह अयस्क की प्राप्ति के लिए भारी माल संभाल की सुविधाओं का निर्माण | चूंकि अधिकांश कच्चे माल का परिवहन रेल के जरिए किया जाता है। केआईओसीएल को अपने पैलेट प्लांट तथा ब्लास्ट फर्नेस यूनिट के लिए लौह अयस्क का प्रेषण प्राप्त करने के लिए भारी माल संभाल सुविधाओं का निर्माण करने का प्रस्ताव है। | 173.00 | -- | -- | 5.00 | पैलेटों के उत्पादन के लिए प्रति वर्ष 4 एमटी लौह अयस्क की आपूर्ति | -- | आवश्यक सांविधिक मंजूरियों सहित नया कार्यक्रम बाद में निर्धारित किया जाएगा। | |
| 4. | एनएमडीसी लिमिटेड | | | | | | | | | |
| (i) | बैलाडिला निक्षेप-11बी | लौह अयस्क का उत्पादन बढ़ाना। | 607.18 | -- | -- | 100.00 | 7 एमटीपीए क्षमता | 7 एमटीपीए क्षमता | जून 11 | कार्य प्रगति पर है । पैकेज - III के प्रमुख कार्यों को पूरा कर लिया गया है । कार्य का एक बड़ा हिस्सा पूरा हो गया है और पैकेज I तथा II का लगभग 75% कार्य पूरा हो गया है । 5बी पैकेज के लिए भी आर्डर दे दिए गए है । माओवादियों द्वारा लागातार बंद के आवाह्न के कारण साइट की प्रगति पर प्रभाव पड़ रहा है । कार्य को सुविधा प्रदान करने के संदर्भ में सुरक्षा में सुधार के लिए कार्यवाई की गई है । निर्माण कार्य को जून 2011 के अंत तक पूरा करने के लिए सभी प्रयास किए जा रहे है । |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रक्षेपित परिणाम | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | | | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 (i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| (ii) | कुमारस्वामी लौह अयस्क परियोजना | लौह अयस्क का उत्पादन बढ़ाना। | 898.55 | -- | -- | 80.00 | 7 एमटीपीए क्षमता | 7 एमटीपीए क्षमता | सितम्बर 2012 | बोर्ड ने 296.03 करोड़ रू0 की तुलना में 898.55 करोड़ रू0 के कुल परिव्यय के साथ परियोजना की क्षमता 3 एमटीपीए से 7 एमटीपीए बढ़ाने के लिए अनुमोदन प्रदान कर दिया है । कुल परियोजना को 6 पैकेजों में विभाजित किया गया है । ईपीसीएम परामर्श दाता के रूप में मैसर्स मेकॉन को नियुक्त किया गया है । पैकेज । तथा 3 के लिए कार्य प्रदान किया जा चुका है । पैकेज ।। को अंतिम रूप दिया जा रहा है । अन्य पैकेजों के लिए निविदा दस्तावेज तैयार करने का कार्य प्रगति पर है । |
| (iii) | दौणिमल्लै में पैलेट संयंत्र | पैलेट उत्पादन के लिए डाईवर्सीफाई करना | 572.00 | -- | -- | 100.00 | 1.2 एमटीपीए क्षमता | 1.2 एमटीपीए क्षमता | दिसम्बर 12 | ईपीसीएम परामर्श दाता के रूप में मैसर्स एम एन दस्तूर को नियुक्त किया गया । छः पैकेजों में परियोजना को क्रियान्वित किया जा रहा है । के एस पी बी से 15 सितम्बर 2010 को स्थापना हेतु सहमति प्राप्त हुई । साईट लेवलिंग का कार्य (पैकेज 3), विविध बिल्डिंग (पैकेज 5) और इलेक्ट्रिकल (पैकेज 4) के लिए पहले ही आर्डर दे दिये गये है । पैलेटाइजेसन (पैकेज 1) और बेनीफिकेशन (पैकेज 2) पैकेजो को अंतिम रूप दिया जा रहा है । साईट लेवलिंग का कार्य भी प्रगति पर है । दिसम्बर 2012 के अंत तक परियोजना के क्रियान्वित होने की आशा है । |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ वास्तविक निष्कर्ष | प्रक्षेपित परिणाम | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजटीय सहायता | | आई एंड ईबीआर | | | | |
| | | | | गैर-योजना | योजना | | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 (i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 5. | **मॉयल लिमिटेड** | | | | | | | | | |
| (i) | फैरो मैंगनीज/सिलिका मैंगनीज संयंत्र के लिए संयुक्त उद्यम | सेल के साथ संयुक्त उद्यम के रूप में इस परियोजना को भिलाई में स्थापित किया जाएगा। | 391.00 | -- | -- | 25.00 | सेल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यह परियोजना 31000 एमटी फैरो मैंगनीज तथा 75000 एमटी सिलिको मैंगनीज का उत्पादन करेगी। | -- सेल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यह परियोजना फैरो मैंगनीज/ सिलिका मैंगनीज का उत्पादन करेगी। | जून 2012 के अंत तक परियोजना को पूरा करना निर्धारित किया गया है । | परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहित जा चुकी है तथा उपस्कर प्राप्ति के लिए निविदा प्रक्रियाधीन है । |
| (ii) | फैरो मैंगनीज/सिलिका मैंगनीज संयंत्र के लिए संयुक्त उद्यम | राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के साथ संयुक्त उद्यम के रूप में इस परियोजना को बोबिली में स्थापित किया जाएगा। | 217.00 | -- | -- | 10.00 | सेल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यह परियोजना 31000 एमटी फैरो मैंगनीज तथा 75000 एमटी सिलिको मैंगनीज का उत्पादन करेगी। | सेल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यह परियोजना फैरो मैंगनीज/ सिलिका मैंगनीज का उत्पादन करेगी। | जून 2012 के अंत तक परियोजना को पूरा करना निर्धारित किया गया है । | परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहित जा चुकी है तथा उपस्कर प्राप्ति के लिए निविदा प्रक्रियाधीन है । |
| **ख.** | **इस्पात मंत्रालय की योजना** | | | | | | | | | |
| | लोहा एवं इस्पात क्षेत्र में आर एंड डी में सुधार करने के लिए योजना। | पर्यावरण के अनुकूल उपायों से गुणवत्ता वाले इस्पात का लागत प्रभावी उत्पादन हेतु इनोवेटिव/पाथ ब्रेकिंग एवं उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए आर एंड डी सुविधाओं में सुधार तथा इन्हें तीव्र करन के लिए एक नई योजना/तंत्र बनाना। | 118.00 | -- | 39.00 | -- | (i) निम्न ग्रेड लौह अयस्क /स्लिम्स का प्रयोग<br>(ii) लौह निर्माण में उच्च ऐश कोकिंग / नॉन कोकिंग कोल का प्रयोग<br>(iii) सिन्टर प्लान्ट उत्पादकता में सुधार<br>(iv) डायरेक्ट रिड्यूज आयरन (डीआरआई) का प्रयोग करने के लिए आईएफ प्रक्रिया के जरिये निम्न फोस स्टील का निर्माण<br>(v) लौह निर्माण के वैकल्पिक / अनुपूरक रूटों का विकास<br>(vi) लौह तथा इस्पात के निर्माण में कार्बनडाईआक्साईड के उत्सर्जन में कमी । | 11वीं योजना 2007-12 के दौरान | 11वीं योजना 2007-12 के दौरान | व्यय वित्त समिति ने 3 प्रमुख क्षेत्र अभिज्ञात किए हैं जिनके तहत इस योजना को बढ़ावा दिया जाएगा। विशेषज्ञों के एक पैनल के परामर्श से परियोजना अनुमोदन एवं प्रबोधन समिति (पीएएमसी) के विचार हेतु 9 अनुसंधान एवं विकास प्रस्ताव छांटे गए हैं। पीएएमसी ने 8 आर एण्ड डी परियोजनाओं का अनुमोदन कर दिया है । परियोजनाओं की कुल लागत 143 करोड़ रू0 है जिसमें से 111.11 करोड़ रू0 सरकार प्रदान करेगी । |

(करोड़ रू0)

| सं. | पीएसयू का नाम तथा योजना/कार्यक्रम | उद्देश्य/निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | मंजूर परिव्यय 2011-12 | | | परिमाणयोग्य सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रोसेसेज/टाइम लाइन्स | | टिप्पणियाँ/ जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | गैर - योजना बजट | योजना बजट | आई एंड ईबीआर | | मूल | वास्तविक /अब अनुसूचित | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5(i) | 5(ii) | 5(iii) | 6 | 7 | 8 | 9 |
| **ख.** | **इस्पात मंत्रालय की योजना** | | | | | | | | | |
| | **योग (ख)** | | | -- | **39.00** | -- | | | | |
| **ग.** | अन्य स्कीम / कार्यक्रम | | | | | | | | | |
| (i) | **सरकारी उपक्रमों के संबंध में** | | | | | | | | | |
| | (i) विभिन्न एएमआर योजनाएं, 50.00 करोड़ रू0 से कम लागत वाली वर्तमान में प्रचलित और नई योजनायें (ii) 50 करोड़ रू0 से अधिक लागत वाली स्वीकृत योजनाओं को अंतिम रूप दिया जा रहा है । | संयंत्रों, उपस्करों एवं मशीनरी के नियमित अनुरक्षण एवं रख-रखाव, उत्पादन लागत को कम करने तथा उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार तथा उत्पादकता में वृद्धि आदि के लिए। | -- | -- | 1.00 | 5643.71 | -- | -- | -- | योजनाएं सरकारी उपक्रमों के दिन-प्रतिदिन के कार्य एवं प्रचालन से संबंधित है। जिन योजनाओं को आवश्यक अनुमोदन नही मिला है उन्हे शामिल नहीं किया गया है । |
| (ii) | **इस्पात मंत्रालय से संबंधित (प्रत्यक्ष रूप से)** | | | | | | | | | |
| | मंत्रालय सचिवालय, पीएओ (इस्पात), डीसीआई एंड एस कार्यालय, कोलकाता तथा विशिष्ट मेटालर्जिस्ट को पुरस्कार और वीआरएस स्कीमों के क्रियान्वयन के लिए पीएसयू को ब्याज सब्सिडी | इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक व्यय को पूरा करना। | -- | 70.76 | -- | -- | -- | -- | -- | सभी गैर योजना प्रावधान का योग निष्कर्ष बजटिंग के अनुरूप नहीं है। |
| **योग(ग)** | | | -- | **70.76** | **1.00** | **5643.71** | | | | |
| **सकल योग - क + ख + ग** | | | -- | **77.71#** | **40.00** | **21062.71** | | | | |

# सकल आधार पर । एचएससीएल तथा मेकॉन लि. को प्रदान की गई गारंटी फीस को माफ करने के संबंध में 6.95 करोड़ रुपए निवल प्राप्त होने के बाद वर्ष 2011-12 (बजट अनुमान) के लिए 70.76 करोड़ रुपए का गैर-योजना बजट है।

# अध्याय-III

## सुधार उपाय और नीतिगत पहल

### 1. भारतीय इस्पात क्षेत्र का उदारीकरण

भारतीय इस्पात क्षेत्र ऐसा प्रथम महत्वपूर्ण क्षेत्र था जिसे लाइसेंसिंग और मूल्य निर्धारण एवं वितरण नियंत्रण से पूर्णत: मुक्त किया गया है। आर्थिक सुधार और उसके परिणामस्वरूप लोहा और इस्पात क्षेत्र के उदारीकरण जो 1990 के आरंभ में शुरू हुआ था, से इस्पात उद्योग में काफी विकास हुआ है और निजी क्षेत्र में ग्रीन फील्ड इस्पात संयंत्र स्थापित हुए हैं। आज विश्व में क्रूड इस्पात का उत्पादन करने में भारत 5वें स्थान पर है तथा स्पंज आयरन का सबसे बड़ा उत्पादक है। इस घरेलू इस्पात उद्योग में लगभग 90,000 करोड़ रूपए से अधिक की पूंजी लगी हुई है (जिसमें आगे वृद्धि हुई है) और सीधे 5 लाख से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ है। वर्ष 2010-11 अप्रैल-दिसम्बर 2010-11 (अनंतिम) के दौरान 47.03 मिलियन टन बिक्री हेतु परिसज्जित इस्पात (मिश्र एवं गैर-मिश्र) का उत्पादन हुआ जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 7.3 प्रतिशत अधिक है।

भारतीय लोहा और इस्पात क्षेत्र की वृद्धि और विकास के लिए पिछले कुछ वर्षों में किए गए महत्वपूर्ण नीतिगत उपाय नीचे दिए गए हैं:-

(i) जुलाई, 1991 में घोषित की गई औद्योगिक नीति में लोहा और इस्पात उद्योग को सरकारी क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की सूची से निकाल दिया गया है और उद्योग (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 1951 के तहत इसे अनिवार्य लाइसेंसिंग के प्रावधानों से भी छूट दे दी गई है।

(ii) 24.5.92 से लोहा और इस्पात उद्योग को 51% तक विदेशी साम्या निवेश के लिए स्वत: मंजूरी हेतु उच्च प्राथमिकता प्राप्त उद्योगों की सूची में शामिल किया गया है। इस सीमा को अब 100% तक बढ़ाया गया है।

(iii) जनवरी, 1992 से इस्पात के मूल्य निर्धारण और वितरण पर से नियंत्रण समाप्त कर दिया गया था। इसके साथ-साथ यह सुनिश्चित किया गया था कि रक्षा और रेलवे जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों के अतिरिक्त लघु उद्योगों, इंजीनियरी माल के निर्यातकों और पूर्वोत्तर क्षेत्र की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्राथमिकता दी जाती रहेगी।

(iv) आयात लाइसेंसिंग, विदेशी मुद्रा निर्मुक्ति, माध्यमीकरण और अधिक आयात टैरिफ से लोहे और इस्पात के आयात को पूर्णत: मुक्त करने के लिए आयात शुल्क स्तर को कम करके लोहा और इस्पात के लिए नियंत्रित आयात प्रणाली को धीरे-धीरे काफी उदार बनाया गया है। लोहे और इस्पात मदों का स्वतंत्र रूप से निर्यात करने की भी अनुमति दी गयी है।

(v) इस्पात उत्पादन के लिए कच्चे माल पर शुल्क में भी कमी की गयी है। इन उपायों से इस्पात संयंत्रों की पूंजीगत लागत और उत्पादन लागत में कमी हुई है।

(vi) जनवरी, 1992 में मालभाड़ा समकरण योजना समाप्त कर दी गयी थी। देश के विभिन्न भागों में नए इस्पात संयंत्रों की स्थापना से घरेलू बाजार में लोहा और इस्पात सामग्री निर्बाध रूप से उपलब्ध है।

(vii) बाजार शक्तियों का सामना करने के लिए प्रमुख उत्पादकों को और अधिक छूट देकर अप्रैल, 1994 से इस्पात विकास निधि संबंधी लेवी समाप्त कर दी गयी है।

(viii) खनिज उत्पादों और अयस्क एवं सांद्रण सहित इस्पात उत्पादन की महत्वपूर्ण कच्ची सामग्रियों पर आयात शुल्क में पिछले कुछ वर्षों के बजट में काफी कमी की गई है।

(ix) इस समय इस्पात मदों पर आयात शुल्क 5 प्रतिशत है। मेल्टिंग स्क्रैप, कोकिंग कोल, मेट कोक जैसी कच्ची सामग्रियों पर आयात शुल्क शून्य है और अन्य कच्ची सामग्रियों जैसे जिंक, आयरन ओर तथा फैरो मिश्र के लिए 2 प्रतिशत से 5 प्रतिशत के बीच है। तथापि घरेलू इस्पात उद्योग की दीर्घकालीन आवश्यकताओं के लिए इनका संरक्षण करने हेतु सरकार ने लौह अयस्क, डले और पैलेटों पर 15% निर्यात शुल्क और लौह अयस्क चूरे पर 5% यथा मूल्य निर्यात शुल्क लगाया है।

(x) इस्पात पर फिलहाल उत्पाद शुल्क 10% है।

(xi) पर्याप्त घरेलू उपलब्धता सुनिश्चित करने और तप्त बेल्लित क्वायलों के मूल्य वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने इसका आयात नि:शुल्क एवं नियंत्रणमुक्त कर दिया है।

## 2. राष्ट्रीय इस्पात नीति, 2005 की प्रमुख विशेषताएं

नियंत्रणमुक्त होने के बाद, वृद्धि की तीव्र गति और बाजार के मौजूदा रुख में कतिपय दिशा-निर्देशों और फ्रेमवर्क की आवश्यकता है। इसी के चलते एक राष्ट्रीय इस्पात नीति के तैयार करने की जरूरत पड़ी जिसे नवम्बर 2005 में घोषित किया गया। राष्ट्रीय इस्पात नीति (एन एस पी), 2005 की खास बातें नीचे दी गई हैं-

- राष्ट्रीय इस्पात नीति के तहत भारतीय इस्पात उद्योग के सुधार, पुनर्संरचना और वैश्वीकरण से संबंधित मुद्दों पर ध्यान देते हुए व्यापक योजना तैयार करने का प्रस्ताव है ।
- राष्ट्रीय इस्पात नीति का दीर्घकालिक लक्ष्य यह है कि भारत में विश्व स्तरीय आधुनिक और क्षमतावान इस्पात उद्योग हो जो विविधिकृत इस्पात मांग को पूरा कर सके । नीति का उद्देश्य न केवल लागत, गुणवत्ता और उत्पाद मिश्र के क्षेत्र में अपितु दक्षता और उत्पादकता के क्षेत्र में भी वैश्विक मानकों को प्राप्त करना है ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा हासिल की जा सके ।
- राष्ट्रीय इस्पात नीति में दीर्घकालिक नीतिगत लक्ष्य हासिल करने के लिए एक बहुपक्षीय रणनीति अपनाने की बात कही गई है । मांग के संबंध में रणनीति प्रोत्साहन जनक प्रयासों और जागरूकता पैदा करके तथा विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में डिलीवरी चेन को सदृढ़ बनाकर अंतर्राष्ट्रीय मांग सृजित करने की होगी । आपूर्ति के संबंध में अतिरिक्त क्षमता के सृजन को सुसाध्य बनाने, लौह अयस्क और कोयला जैसे आदानों की उपलब्धता में प्रक्रिया और नीति संबंधी बाधाओं को दूर करने, अनुसंधान और विकास में और अधिक निवेश करने तथा सड़कों, रेलवे और पत्तनों जैसी अवसंरचनात्मक सुविधाओं के सृजन को प्रोत्साहित करने की रणनीति होगी ।

- राष्ट्रीय इस्पात नीति में यह माना गया है कि देश में, खासतौर से ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पात की प्रति व्यक्ति खपत कम है और जीवन स्तर में सुधार करने और जनता की बढ़ती हुई आकांक्षाओं को पूरा करने में मदद करने के लिए इस्पात की खपत बढ़ाने की जरूरत है ।
- राष्ट्रीय इस्पात नीति में इस्पात बाजार में कीमतों में अस्थिरता को रोकने के लिए फ्यूचर्स और डिरीवेटिव्ज जैसी जोखिम-रोधी व्यवस्थाएं करने में सहायता करने की बात कही गई है।
- राष्ट्रीय इस्पात नीति में घरेलू इस्पात उद्योग को उपलब्ध मौजूदा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान सुविधाओं को सुदृढ़ बनाने की बात कही गई है ताकि गौण लघु इकाइयों को उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध करवाए जा सकें और उद्योग से संबंधित प्राचलों से संबंधित आंकड़े एकत्रित किए जा सकें और उनका विश्लेषण किया जा सके ।
- राष्ट्रीय इस्पात नीति में विशेष श्रेणियों के इस्पात के लिए उत्पादन क्षमता सृजित करने, कोककर कोयले को प्रतिस्थापित करने, लौह अयस्क चूर्ण का उपयोग करने, ग्रामीण आवश्कताओं के अनुरूप नए उत्पाद विकसित करने, सामग्री और ऊर्जा, अपशिष्ट का उपयोग करने और पर्यावरण के संबंध में हो रही गिरावट को रोकने के लिए अनुसंधान और विकास संबंधी उद्यमशील प्रयास करने की बात कही गई है ।
- राष्ट्रीय इस्पात नीति में माना गया है कि गौण इस्पात क्षेत्र ने ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध करवाने, इस्पात की स्थानीय मांग पूरी करने और देश की कुछ विशेष उत्पादों की मांग पूरी करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है । इस नीति में राज्य लघु उद्योग निगमों के मौजूदा तंत्र के जरिए प्रमुख संयंत्रों से इन इकाइयों को उचित कीमतों पर आवश्यक फीडस्टॉक उपलब्ध करवाने के लिए प्रयास करने की बात कही गई है ।
- भारतीय इस्पात उद्योग का एकीकरण वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ करने के लिए आवश्यक है कि इस उद्योग को उन अनुचित व्यापार क्रिया-कलापों, जो विशेषकर मंदी की अवधि के दौरान आम हो जाते हैं, से बचाने की आवश्यकता है। इसलिए राष्ट्रीय इस्पात नीति जो हालांकि घरेलू क्षेत्र पर केन्द्रित है, में एक ऐसे इस्पात उद्योग की परिकल्पना की गई है जो घरेलू खपत की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ रहा है और जिससे निर्यात के अवसर भी बढ़ेंगे।

## 3. नई राष्ट्रीय इस्पात नीति

इस्पात उद्योग को मूलत: घरेलू और विश्व स्तर पर बाजार में परिवर्तन के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसका अभिप्राय है कि एन एस पी 2005 में सम्मिलित अधिकांश लक्ष्यों को बाजार की बदल रही परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पुननिर्धारित/पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। इसलिए इस्पात मंत्री के अनुमोदन से एक नई इस्पात नीति के गठन करने का निर्णय किया गया। नई इस्पात नीति में राष्ट्रीय इस्पात नीति 2005 के मूल गठन को बनाए रखते हुए देश में इस्पात के सभी विभिन्न पहलुओं जैसे भारत में इस्पात की मांग में वृद्धि, कच्चा माल, अनुसंधान एवं डिजाइन, पर्यावरण और नई इस्पात परियोजनाओं को सुविधा सम्पन्न करना, को शामिल करते हुए और अधिक व्यापक नीति का गठन करने पर केन्द्रित है। नई इस्पात नीति के गठन का प्रबोधन करने, समीक्षा करने और दिशा-निर्देश देने के लिए एक एपेक्स कमेटी का गठन किया जा रहा है। नई इस्पात नीति के विभिन्न पहलुओं का विस्तार से गठन करने के लिए यह एपेक्स कमेटी विभिन्न टास्क फोर्स कमेटियों का गठन करेगी।

## 4. इस्पात मंत्रालय द्वारा की गई प्रमुख पहल

**4.1** एनएसपी के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए इस्पात मंत्रालय द्वारा निम्नलिखित प्रमुख पहलें की गई हैं:-

### (i) सेल, आरआईएनएल और एनएमडीसी लि. की मेगा विस्तार योजनाएं

सरकारी क्षेत्र के उपक्रम सेल और आरआईएनएल ने अपनी महत्वाकांक्षी विस्तार योजनाएँ शुरू की हैं। आधुनिकीकरण और विस्तार योजनाओं में बेहतर आधुनिक प्रौद्योगिकी जोकि लागत प्रभावी, ऊर्जा दक्ष और पर्यावरण अनुकूल हो, को अपनाने पर प्रमुख रूप से बल दिया गया है।

सेल अपने भिलाई, बोकारो, राउरकेला, दुर्गापुर और बर्नपुर में स्थित एकीकृत इस्पात संयंत्रों और सेलम स्थित विशेष इस्पात संयंत्र का विस्तार और आधुनिकीकरण कर रहा है। चालू चरण में कच्चे इस्पात की क्षमता को 12.8 एम टी से बढ़ाकर 21.4 एम टी वार्षिक कर दिया गया है। चालू चरण के लिए सांकेतिक निवेश लगभग 60,000 करोड़ रूपए है। सेल की खानों के आधुनिकीकरण और विस्तार के लिए लगभग 10,000 करोड़ रूपए अतिरिक्त निर्धारित किए गए हैं। क्षमता संवर्धन के अलावा सेल की विस्तार योजना से सेल में संयंत्रों पुरानी प्रौद्योगिकियों को हटाने, ऊर्जा बचत, उत्पाद मिश्र में वृद्धि, प्रदूषण नियंत्रण, प्रमुख आदानों की बढ़ रही जरूरतों को पूरा करने के लिए खानों और खदानों को विकसित करना, उपभोक्ताओं अभिमुख प्रक्रियाएं शुरू करना और उत्पादन की मात्रा में वृद्धि के अनुरूप संयंत्र में मैचिंग अवसंरचनात्मक सुविधाएं स्थापित करने इत्यादि के लिए सेल के संयंत्रों की पर्याप्त आवश्यकताओं को पूरा करता है।

सेलम इस्पात संयंत्र विस्तार के अन्तर्गत सभी प्रमुख सुविधाओं को सितम्बर, 2010 तक सफलतापूर्वक पूरा कर लिया जाएगा और इनका स्थायीकरण किया जाएगा। अन्य 5 संयंत्रों में, प्रमुख पैकेजों के लिए आर्डर किए गए हैं। ये आर्डर किए गए पैकेजों पर विभिन्न चरणों पर कार्यान्वयन किया जा रहा है। आधुनिकीकरण और विस्तार का मौजूदा चरण वर्ष 2012-13 तक पूरा होने की संभावना है। आधुनिकीकरण और विस्तार पर दिसम्बर 2010 तक संचयी व्यय लगभग 22089 करोड़ रूपए हुआ।

संभवत: वर्ष 2020 तक ब्राउन फील्ड और ग्रीन फील्ड विस्तार कार्यक्रमों के जरिए 60 एम टी के क्षमता स्तर पर पहुंचने के लिए सेल अपनी क्षमता को बढ़ाने की संभावनाएं तलाश रहा है। उत्पादन वृद्धि के अतिरिक्त अति-आधुनिक प्रौद्योगिकी एवं मूल्यवर्धित उत्पादों को शामिल करते हुए सेल की लागत एवं गुणवत्ता प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने की भी योजना है। हालांकि यह वृद्धि बाजार की मांग और महत्वपूर्ण कच्ची सामग्री की उपलब्धता पर निर्भर होगी।

आरआईएनएल ने वर्ष 2020 तक अपनी द्रव इस्पात क्षमता को चरणबद्ध तरीके से 20 मिलियन टन बढ़ाने हेतु दिशात्मक योजना बनाई है। इसी प्रयास में आर आई एन एल ने पहले चरण में द्रव इस्पात की क्षमता को 6.3 एम टी तक बढ़ाने हेतु अभी भी इसे बढ़ाया जा रहा है। इस चरण में, जो चल रहा है, आर आई एन एल लम्बे उत्पादों की श्रेणी पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है जो देश की अवसंरचनात्मक वृद्धि में आवश्यक है। कनवर्टर और एक कास्टर के अलावा मौजूदा ब्लास्ट फर्नेस स्टील, मेल्ट शॉप और अन्य का आधुनिकीकरण और उन्नयन किया जा रहा है जिससे वर्ष 2013 तक इसकी द्रव इस्पात की क्षमता 7.3 एम टी तक बढ़ जाएगी। आर आई एन एल इस क्षमता को आगे 11.3 तक बढ़ाने पर विचार कर रही है और इसे पिलेटों में वर्गीकृत करने के लिए अपने उत्पाद पोर्टफोलियों का विस्तार कर रही है।

विस्तार के अलावा आधुनिकीकरण कार्यक्रमों के जरिए तकनीकी उत्कृष्टता को मजबूत करने और उत्पादकता और दक्षता में वृद्धि करने के लिए मौजूदा उपस्करों/तकनीकी का उन्नयन किया जा रहा है। अपने संयंत्र में उत्पादन स्तरों और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए आर आई एन एल उपस्करों की प्रमुख मरम्मत करने की योजना बना रहा है। इनमें से कुछ परियोजनाओं में धमन भट्टी 1 और 2 की पूंजीगत मरम्मत, कनवर्टरों की मरम्मत, सिंटर संयंत्र का आधुनिकीकरण आदि शामिल है और कुल अन्य परियोजनाओं में गुणवत्ता एवं उत्पाद डेलीवेरबल में सुधार के अतिरिक्त प्रदूषण नियंत्रण आवश्यकताओं सहित प्रौद्योगिकी का उन्नयन शामिल है।

एन एम डी सी लि. लौह अयस्क के उत्पादन को 24 मिलियन टन के मौजूदा स्तर से बढ़ाकर वर्ष 2014-15 तक 40 एम टी तक करने की योजना बना रहा है। एन एम डी सी फारवर्ड एकीकरण को स्पंज लोहे, पिलेटों और स्टील मूल्यवर्धन के जरिए परिवर्तित करने के कदम उठा रहा है। एन एम डी सी छत्तीसगढ़ के नागरनार में 3 मिलियन टन वार्षिक क्षमता का एकीकृत इस्पात संयंत्र स्थापित कर रहा है। पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा 15.9.2009 को संयंत्र के लिए पर्यावरण संबंधी मंजूरी दे दी गई है। लगभग 25 हैक्टेयर वन भूमि के लिए पहले चरण की वन संबंधी मंजूरी ले ली गई है। 3 एम टी पी ए क्षमता वाला इस्पात संयंत्र स्थापित करने के लिए एन एम डी सी ने छत्तीसगढ़ पर्यावरण मंजूरी बोर्ड की भी मंजूरी ले ली है। इसके अलावा 995 एकड़ भूमि पहले ही एन एम डी सी के अधिकार में है, एन एम डी सी ने अगस्त 2010 में इस्पात संयंत्र के निर्माण के लिए 954 एकड़ अतिरिक्त भूमि पर भी कब्जा कर लिया है। 7 प्रमुख तकनीकी पैकेजों के लिए पार्टियों का चयन कार्य पूरा कर लिया है और सीमित टेंडर जांच जारी कर दिए गए हैं। 7 पैकेजों के लिए तकनीकी वाणिज्यिक ऑफर प्राप्त कर लिए गए हैं।

### (ii) इंटरनेशन कोल वेंचर लिमिटेड (आईसीवीएल)

अपनी प्रमोटर कंपनियों के रूप में सेल, आरआईएनएल, सीआईएल, एनटीपीसी और एनएमडीसी ने 20.5.2009 को इंटरनेशलन कोल वेंचर्स लिमिटेड (आईसीवीएल) नामक स्पेशल पर्पज व्हीकल को एक संयुक्त उद्यम के रूप में निगमित किया गया है। आईसीवीएल एक नवरत्न कंपनी के रूप में काम करेगी और इसे 1500 करोड़ रू0 तक के निवेश की मंजूरी देने की शक्तियाँ होगी। उन कोयला कंपनियों में जिनमें 1500 करोड़ रूपए से अधिक के निवेश की आवश्यकता है में कोयला परिसम्पत्तियों के अधिग्रहण अथवा साम्या भागीदारी सचिवों की एक अधिकार सम्पन्न समिति को दी जाएगी जो प्रस्ताव की अनुमोदनार्थ सीधे मंत्रिमंडल को भेजने की सिफारिश करेंगे।

विदेशों में वस्तु परिसंपत्तियां हासिल करने के संबंध में एक निर्णायक प्रक्रिया को दुरूस्त करने के लिए शीघ्र ही एक प्रस्ताव मंत्रियों की परिषद को भेजा जाएगा और आशा है इससे आई सी वी एल को और जल्दी निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

आई सी वी एल आस्ट्रेलिया, कनाडा, इंडोनेशिया, मोजोम्बिक और यू एस ए जैसे लक्ष्यित देशों में कोयला सम्पत्ति के लिए प्रयास कर रही है। दिनांक 25 जनवरी 2011 को आई सी वी एल और मालीमटन इंडोनेशिया के प्रोविन्सील गवर्नर के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए थे जिसमें आई सी वी एल के लिए क्षेत्र में खनिज संसाधनों के सीधे आबंटन की परिकल्पना की गई है।

### (iii) विलय/अधिग्रहण तथा रणनीतिक समझौते/संयुक्त उद्यम

इस्पात इकाइयों की प्रचालनात्मक क्षमता में सुधार करने और सीनर्जी प्राप्त करने के लिए कई विलय/अधिग्रहण/नीतिपरक समझौते/संयुक्त उद्यम हुए हैं। इनका ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

## (क) विलय/अधिग्रहण

- स्पंज आयरन इंडिया लि. (सिल) का एन एम डी सी लि. में विलय : सरकार ने 22.5.2008 को अनुमोदित कर दिया था। सरकार के अनुमोदन के बाद दोनों कंपनियों ने सभी आवश्यक संवैधानिक अनुपालनों को पूरा किया और दिनांक 1 जुलाई 2010 को कंपनियां रजिस्ट्रार के साथ निगमित मामले मंत्रालय द्वारा जारी एन एम डी सी के साथ सिल के विलय के आदेश को पूरा करने के बाद सिल का एन एम डी सी में विलय की प्रक्रिया पूरी हो जाती है।
- महाराष्ट्र इलैक्ट्रास्मेल्ट लि. (एम ई एल) का स्टील अथारिटी ऑफ इंडिया लि. (सेल) के साथ विलय : सेल को भूमि स्थानान्तरित करने के लिए महाराष्ट्र सरकार से कोई आपत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद दिनांक 13 जनवरी 2010 को निगमित मामले मंत्रालय का एम ई एल का सेल के साथ विलय के लिए आवेदन भेज दिया था। दोनों कंपनियों के शेयरधारकों की मंजूरी ले ली गई थी। नवम्बर 2010 को कंपनियों ने शेयरधारकों की मंजूरी ली ली थी। नवम्बर 2010 में एम सी ए में अन्तिम सुनवाई होगी।
- बर्न स्टैण्डर्ड कंपनी लि. (बी एस सी एल) की सेलम इकाई का सेल में स्थानान्तरण: सेलम इकाई के हस्तांतरण की औपचारिकाताओं के लिए आर्थिक मामले संबंधी मंत्रिमंडल समिति के अनुमोदन के बाद भारी उद्योग/विभाग इस्पात मंत्रालय के परामर्श से अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है।
- आर आई एन एल का मॉयल के साथ संयुक्त उद्यम : फैरो मिश्र के उत्पादन के लिए आर आई एन एल - वी एस पी ने मॉयल लि. के साथ एक संयुक्त उद्यम कंपनी - आर आई एन एल फैरो एलायज प्रा. लि. का गठन किया है। वर्ष 2013-14 तक इस संयंत्र के चालू करने की योजना है।
- आर आई एन एल एक्सल संयंत्र: नई जलपाईडगुडी प. बंगाल में उत्तरबंगा आर आई एन एल रेल कारखाना लि. नामक एक्सेल संयंत्र स्थापित करने के लिए भारतीय रेलवे के साथ एक समझौता ज्ञापन किया है।
- आर आई एन एल की एन आई एन एल के साथ रणनीतिक साझेदारी : आर आई एन एल अपनी नीतिपरक स्थिति को मजबूत करने के लिए नीलांचल इस्पात निगम लि. (एन आई एन एल) मं अधिकतम शेयर हासिल करने पर कार्रवाई कर रहा है। हालांकि इस पर सरकार की अनुमति आवश्यक है।
- एन एम डी सी पैलेट संयंत्र : पैलेट संयंत्र की योजना संयुक्त उद्यम/गौण मार्ग के लिए की जा रही है। हालांकि यह बैलाडिला से विशाखापट्टणम तक एन एम डी सी द्वारा स्लरी पाइप लाइन बिछाने पर निर्भर होगी।
- आर आई एन एल का के आई ओ सी एल के साथ संयुक्त उद्यम साझेदारी : आर आई एन एल ने कर्नाटक में बिल्लारी के पास 1.5 एम टी पी ए प्रारंभिक क्षमता वाला एक इस्पात संयंत्र की स्थापना करने के लिए मौजूदा संयुक्त उद्यम में के आई ओ सी एल और यूनाइटेड राजपुर स्टील इंडिया प्रा. लि. के बीच एक साझेदारी करने के प्रस्ताव की पहल की है। इसके अलावा मैंगलौर में उक्टाइल आयरन स्पन पाइप (ओ आई एस पी) संयंत्र की स्थापना के लिए इसकी धमन भट्टी इकाई हासिल करने के लिए के आई ओ सी एल के साथ संयुक्त उद्यम स्थापित करने की संभावनाओं की जांच भी कर रहा है।
- आर आई एन एल की भेल (बी एच ई एल) के साथ साझेदारी : आर आई एन एल ने विशेष सी आर जी ओ और सी आर एन ओ ग्रेड के इस्पात का उत्पादन करने और सीमलेस ट्यूब/पाइप के लिए विशाखापट्टणम में ट्यूब मिल स्थापित करने के लिए विजाग में सिलिकॉन स्टील मिल

प्रतिस्थापित करने के लिए भेल के साथ संयुक्त उद्यम/नीतिपरक साझेदारी करने के लिए सक्रिय रूप से कार्रवाई कर रहा है।

- सरकार ने 22.5.2008 को एनएमडीसी में स्पंज आयरन इंडिया लिमिटेड (सिल) के लिए मंजूरी दे दी है।

**(ख) रणनीतिक समझौते/संयुक्त उद्यम**

- एन एम डी सी कर्नाटक में एक एकीकृत इस्पात संयंत्र की स्थापना करने की योजना बना रहा है और इसने कर्नाटक में इस्पात संयंत्र, रूस में कोककर कोयला खाने और भारत में लौह अयस्क खानों की स्थापना में सहयोग के लिए मै. सर्वेस्टॉल, रूस के साथ एक समझौता ज्ञापन भी हस्ताक्षरित किया है।
- 29 मार्च 2010 को लोहा और इस्पात क्षेत्रों में संयुक्त सहयोग के अवसर तलाशने के लिए सेल द्वारा निप्पोन स्टील के साथ एक नॉन डिस्क्लोजर एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए गए हैं। भिलाई स्टील संयंत्र की धमन भट्टी में एक डाइग्नोस्टीक अध्ययन करने के लिए एक करार को अंतिम रूप देने हेतु निप्पोन के अधिकारियों के साथ बातचीत की जा रही है।
- 30 मार्च 2010 को नगेट के रूप में प्रीमियम ग्रेड के लोहे का उत्पादन करने के लिए आई टी एम के 3 प्रौद्योगिकी की तकनीकी और आर्थिक व्यवहार्यताओं की तलाश करने के लिए सेल द्वारा मै. कोबे स्टील लि. (के एस एल) के साथ समझौता ज्ञापन किया है। एक व्यापक संयुक्त संभाव्यता अध्ययन को भी अंतिम रूप दिया जा रहा है जिसमें ए एस पी, दुर्गापुर में आई टी एम के 3 प्रोद्योगिकी आधारित 0.5 एम टी/वार्षिक क्षमता वाले एक संयंत्र की प्रतिस्थापना और चालू करने की तकनीकी-आर्थिक संभावनाओं का मूल्यांकन किया जाएगा।
- 30 नवम्बर, 2010 को आई टी एम के 3 के अलावा सेल ने उच्च मूल्य के उत्पाद जैसे (i) ऑटोमोबाइल के उत्पाद (ii) परमाणु विद्युत संयंत्रों और परम्परागत विद्युत संयंत्रों के उत्पाद जैसे फोर्जड मैटिरियल और ट्यूबिंग मैटिरियल (iii) विशेष मिश्र इस्पात और बार (iv) बेदाग इस्पात ट्यूब और/अथवा अन्य उत्पाद जिन पर कोबे स्टील और सेल दोनों के बीच पारस्परिक रूप से सहमति बनी है का उत्पादन करने में मिल कर कार्य करने के लिए कोबे स्टील के साथ टोकियो जापान में एक अन्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। दोनों कंपनियां अपस्ट्रीम से लेकर डाउनस्ट्रीम प्रक्रियाओं तक के सहयोगात्मक संबंध स्थापित करना चाहती है, जिससे वे भारत और वैश्विक बाजारों में संयुक्त प्रयास और उद्यमों की पारस्परिक रूप से तलाश कर सकेंगे।
- सेल और पी ओ एस सी ओ के बीच समझौता ज्ञापन के रूप में 1.5 एम टी क्षमता की तप्त धातु (जिसकी 3 एम टी एच आर क्वायलों की रोलिंग क्षमता है) के फाइनेक्स आधारित इस्पात संयंत्र बोकारों में तथा 0.3 एम टी के सी आर एन ओ चादरें विले भागड महाराष्ट्र में स्थापित करने के लिए एक व्यापक परियोजना रिपोर्ट (डी पी आर) तैयार की जा रही है।
- 30 अक्तूबर, 2010 को एक वैगन निर्माण इकाई बनाने के लिए सेल और आर आई टी ई एस के बीच 50:50 हिस्सेदारी की संयुक्त उद्यम कंपनी के लिए पश्चिम बंगाल के आसनसोल के पास कुल्टी में एक शिलान्यास समारोह किया गया था। यह प्रस्तावित फैक्टरी 12 एकड़ में होगी। यह नई इकाई एक वर्ष में लगभग 1500 वैगन की संभाल कर सकेगी, जिसमें 1200 वैगनों का निर्माण और 300 अन्य वैगनों का पुनर्वास शामिल है। ये बी ओ एक्स एन टाइप वैगन जिनका उपयोग लौह अयस्क के परिवहन में किया जाता है, का निर्माण करेगी जिसमें कुछ सर्वाधिक विशिष्ट हाई एंड वैगन शामिल हैं। ये संयंत्र और मशीनरी में मार्जिनल निवेश के साथ बेदाग इस्पात वैगनों का निर्माण भी कर सकेंगे। कंपनी के इनकार्पोरेशन की प्रक्रिया प्रगति पर है।

- सेल ने हिमाचल प्रदेश राज्य में अर्की लाइमस्टोन निक्षेप के संयुक्त विकास के लिए वर्ष 2009 में एन एम डी सी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौता ज्ञापन के शर्त विवरण जिसमें दिनांक 31.8.10 को दोनों कंपनियों के बीच हस्ताक्षरित जे वी करार की शर्तें एवं निबंधन शामिल हैं के अनुसार साथ-साथ के कार्य यथा सांविधिक मंजूरी, व्यवहार्यता अध्ययन करना आदि प्रगति पर है।
- दिनांक 29 मार्च, 2010 को शीपिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया (एस सी आई) के साथ संयुक्त उद्यम करार करने के बाद मई 2010 में एक संयुक्त उद्यम शीपिंग कंपनी "सेल एस सी आई शीपिंग प्रा. लि. " को सेल के कार्गो के परिवहन के लिए बनाई गई है जो शुरू में 1.2 एम टी वार्षिक और बाद में 4 एम टी वार्षिक तक परिवहन करेगी।
- सेल बोर्ड ने 5.6 एम टी क्षमता के इस्पात संयंत्र और 1.15 एम टी के यूरिया संयंत्र की स्थापना करने के लिए सेल को 'नामिनेशन बेसिस' पर एफ सी आई एल सिंडरी के भूमि/परिसंपत्ति का आबंटन हेतु उर्वरक मंत्रालय से मंजूरी लेने के लिए एक प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। सेल को यह भूमि आबंटित करने के लिए उर्वरक मंत्रालय के साथ मामले पर कार्रवाई की जा रही है।
- सेल संयंत्रों की भविष्य में ऊर्जा की बढ़ी हुई मांग को पूरा करने के लिए सेल ने अपने इस्पात संयंत्रों (जगदीशपुर में गैस आधारित संयंत्र और बी एस पी, आर एस पी एवं बी एस एल में कोयला आधारित संयंत्र) के लिए एन एस पी सी एल (जो एन टी पी सी के साथ एक संयुक्त उद्यम है) के जरिए 1725 एम डब्ल्यू क्षमता के विद्युत संयंत्रों की स्थापना करने के लिए योजना बनाई है। सेल और एन टी पी सी दोनों प्रवर्तकों ने एन एस पी सी एल के जरिए इस परियोजना पर कार्य करने के लिए सैद्धान्तिक मंजूरी दे दी है।

### (iv) सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों/कंपनियों का पुनरूद्धार और पुनर्संरचना

- बर्ड ग्रुप ऑफ कंपनियां: 10.9.2009 को भारत सरकार ने बर्ड समूह की कंपनियों के पुनर्संरचना प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह पुनर्संरचना कार्य कर दिया गया है। आर आई एन एल, ई आई एल की होल्डिंग कंपनी बन गई है। ई आई एल, ओ एम डी सी और बी एस एल सी की होल्डिंग कंपनी बन गई है।
- सरकार ने फरवरी, 2007 में 100.72 करोड़ रू0 की कुल लागत पर मेकॉन लिमिटेड की पुनरूद्धार और पुनर्संरचना को मंजूरी दे दी है। कंपनी की पुनर्संरचना के परिणामस्वरूप कंपनी ने 2007-08 के दौरान 39.52 करोड़ रू0, 2008-09 में 74.76 करोड़ रू0 और 2009-10 (दिसम्बर 09 तक) में 82.87 करोड़ रू0 लाभ (कर-पूर्व लाभ) अर्जित किया है।
- हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड (एससीएल) का पुनर्संरचना/पुनरूद्धार प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है।

### (v) निगमित सामाजिक जिम्मेदारी

2007-08 के बाद मंत्रालय के साथ सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा किए गए समझौता ज्ञापनों में निगमित सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) को एक महत्वपूर्ण प्राचल के रूप में अभिज्ञात किया गया है। सेल ने सी एस आर के कार्यों के लिए प्रतिबद्धता दिखाई है और वर्ष 2006-07 से सी एस आर कार्यों के लिए अपने 2% वितरण योग्य अधिशेष को निर्धारित किया है। वर्ष 2009-10 के लिए सेल से संबंधित सी एस आर के लिए आबंटित कुल बजट 80 करोड़ रूपए था जिसमें सी एस आर कार्यों पर

2009-10 के दौरान सेल ने 78.79 करोड़ रूपए का उपयोग कर लिया। इस आबंटित बजट के अलावा वर्ष 2009-10 के दौरान स्वास्थ्य, शिक्षा, बस्ती आदि पर सेल के गैर संबंधित लोगों पर किया गया व्यय 229 करोड़ रूपए से अधिक था। सेल में सी एस आर कार्य शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, परिवार कल्याण, सफाई, पेयजल सुविधा, सम्पर्क सुविधा, सांस्कृतिक उत्थान, विरासत की संरक्षण, पर्यावरण संभाल, सामाजिक पहल पर केन्द्रित होते हैं। लेह में बादल के फटने से आई आपदा को ध्यान में रखते हुए सेल ने इस आपदा से प्रभावित लोगों की सहायता की है। सेल ने 79 गांवों को "मॉडल स्टील विलेज" के रूप में गोद लिया जिसमें से 54 गांवों का विकास कार्य पूरा कर लिया गया है। वर्ष 2009-10 में 3850 से अधिक कैंपों का आयोजन किया जिसमें 2.32 लाख से अधिक लोगों को लाभान्वित करते हुए उन्हें निशुल्क स्वास्थ्य जांच, पैथ लैब ट्रीटमेंट, दवाइयां, और टीकाकरण की सुविधाएं प्रदान की गईं तथा साथ ही संयंत्र अस्पतालों द्वारा भेजे गए सर्जिकल मामलों को देखा गया। सेल ने गरीब और पिछड़े लोगों की सहायता के लिए स्मॉइल फाउंडेशन, भारत सेवाश्रम संघ आदि जैसे विभिन्न एन जी ओ को 12 एम एम यू/एक्बूलेंस आदि उपलब्ध कराई है।

आर आई एन एल-सी एस आर कार्य सतत विकास और आस-पास के समुदायों के विकास पर केन्द्रित है। कंपनी ने वर्ष 2010-11 के दौरान परिसरीय विकास, शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, जन कल्याण, खेल-कूद और सांस्कृतिक उत्थान के क्षेत्रों में विभिन्न पहल वाले कार्य किए हैं। इनमें से प्रमुख कार्यों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- विशाखापट्टणम में आन्ध्र यूनिवर्सिटी के अन्तर्गत 21 सेंचुरी गुरूकुलम के लिए हॉस्टल ब्लाक (3 जिले शामिल करते हुए) का निर्माण।
- विभिन्न रूप से योग्य (ऐबल्ड) बच्चों के लिए अरुणोदय विशेष विद्यालयों के निर्माण के लिए नकद सहायता।
- पैथोलॉजी उपस्करों और डर्मोटालॉजी उपस्करों की खरीद के लिए आन्ध्र मेडिकल कॉलेज, विशाखापट्टणम को सहायता।
- संकर फाउंडेशन (प्रख्यात नेत्र अस्पताल) के जरिए नेत्र शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें वर्ष के दौरान 1501 मरीजों की जांच/292 मोतियाबिंद शल्य चिकित्सा शामिल है।
- मै. फैमिली सर्विसेज, जो गूंगे और बहरे बच्चों को निस्वार्थ सेवाएं प्रदान करता है, को कंप्यूटर प्रिंटर, कंप्यूटर टेबल, चेयर जैसी मदें उपलब्ध कराए गए।
- निकटवर्ती गांवों में जन शिक्षण संस्थान के जरिए स्त्रियों और बेरोजगार युवाओं के लिए सशक्तिकरण कार्यक्रम।
- अपने सी एस आर कार्यक्रमों के तहत एन एम डी सी फिलहाल 13 गांवों को मोडेल गांव के रूप में विकसित कर रहा है।

एम एस टी सी सामाजिक दायित्वों के लिए प्रतिबद्ध है और वर्ष 2010-11 में उसने इसके लिए 100 लाख रूपए का बजट निर्धारित किया है। 31.12.2010 तक इसमें से 43.23 लाख रूपए खर्च हो चुके हैं जिसमें विक्षिप्त बच्चों को हियरिंग ऐड, महिलाओं के लिए रोजगार प्रशिक्षण केन्द्र, ब्लड ट्रांस्फ्यूजन सेंटर चलाना, स्ट्रीट चिल्ड्रेन के लिए स्कूल आदि शामिल हैं।

## (vi) इस्पात का ग्रामीण वितरण नेटवर्क

आम आदमी को इस्पात की मदें उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक जिले में कम से कम एक डीलर नियुक्त करने का निर्णय लिया गया है। संपूर्ण देश में ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पात की आम उपयोग की मदों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सेल और आरआईएनएल संपूर्ण देश में अपने वितरण नेटवर्क का विस्तार कर रहे हैं। जिला स्तरीय डीलरशिप आबंटित करते समय अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति और अन्य पिछड़े वर्गों को तरजीह दी जाती है। इसके अलावा आम इस्पात मदें ग्रामीण क्षेत्रों में उसी मूल्य पर उपलब्ध करवाई गई हैं जो कि शहरों के स्टॉकयार्डों में है। स्टॉकयार्ड से डीलर के स्थान तक की ढुलाई की लागत सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा वहन की जाती है। 1.1.2011 की स्थिति के अनुसार सेल देश के 630 जिलों में 2579 डीलर नियुक्त कर चुका है। आरआईएनएल ने दक्षिणी राज्यों यथा आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल तथा समीपवर्ती राज्य अर्थात उड़ीसा, छत्तीसगढ और महाराष्ट्र के लगभग सभी जिलों में डीलरों की नियुक्ति की है।

## (vii) ग्रामीण भारत में इस्पात की मांग के आंकन के लिए अध्ययन

भारत की इस्पात उत्पादन क्षमता आगामी वर्षों में कई गुणा बढ़ जाएगी। 190 कि.ग्राम के विश्व औसत की तुलना में भारत की वर्तमान कम प्रतिव्यक्ति 47 कि.ग्राम इस्पात खपत से यह सुदृढ़ तर्क है कि घरेलू इस्पात उद्योग में काफी संभावना है। इस्पात मंत्रालय की अनुदान मांगों (2007-08) संबंधी कोयला और इस्पात संसदीय स्थाई समिति (पी एस सी) अपनी 25वी रिपोर्ट में नोट किया था कि इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए इस्पात उद्योग हेतु अपेक्षित आधारभूत संरचना सृजित करना और इस्पात की प्रतिव्यक्ति खपत में वृद्धि करना आवश्यक है। समिति ने अवलोकन किया कि खपत के वांछित स्तर को प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक भेद-भाव को दूर करना है। इसलिए समिति ने इच्छा व्यक्त की कि ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पात की मांग का आंकन करने के लिए सर्वे किया जाए।

संसदीय स्थाई समिति की सिफारिशों के अनुसरण में इस्पात मंत्रालय ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पात की मांग का आंकन करने के लिए संयुक्त संयंत्र समिति के जरिए सर्वे करा रहा है। सर्वे का उद्देश्य भारतीय ग्रामीण बाजार में इस्पात की विभिन्न मदों की खपत के पैटर्न के रुख का अनुमान लगाना है। विशेष रूप से ग्रामीण भारत के विकास के लिए भारत निर्माण जैसी परियोजनाओं के जरिए आधारभूत ढांचे के विकास में निवेश करने से होने वाली मांग का भी सर्वे में पता लगाना है।

सर्वे को मोनिटर करने के लिए इस्पात मंत्रालय के संयुक्त सचिव की अध्यक्षता में एक तकनीकी समिति गठित की गई है जिसमें उद्योग और उद्योग एसोसिएशनें सदस्य हैं। बाजार अनुसंधान में अग्रणी आई एम आर बी इन्टरनेशनल को तकनीकी समिति द्वारा सर्वे के फील्ड और विश्लेषणात्मक कार्य के लिए चुना गया है। सर्वे निम्नलिखित को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण आबादी के स्ट्रेटिफाइड सैम्पलिंग पर आधारित होगा।

- सभी 35 राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश पृथक रूप में
- 300 जिले (ग्रामीण आबादी की प्रतिशतता पर आधारित)
- 1500 गांव (ग्रामीण आबादी की प्रतिशतता पर आधारित)
- कम से कम 15-20 घर की वस्तुएं तथा प्रत्येक गांव में ग्राम पंचायत जैसे सभी संस्थान।
- ग्रामीण स्तर पर 4500 विनिर्माता और 8000 रिटेल (उत्पादन/कारोबार पर आधारित)

आईएमआरवी इंटरनेशनल ने सर्वेक्षण की अपनी ड्राफ्ट रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है जिसकी तकनीकी समिति द्वारा समीक्षा कर ली गई है। इस रिपोर्ट को जून, 2011 तक अंतिम रूप दे दिए जाने की संभावना है।

एक प्रोत्साहनवर्धक प्रयास के तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पात का रिटेल वितरण नेटवर्क को मजबूत करने की सिफारिश की गई थी।

**(viii) लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान और विकास कार्यों को प्रोत्साहन**

इस्पात की खपत को आर्थिक विकास के एक सूचक के तौर पर लिया जाता है। वैश्विक इस्पात मानचित्र में भारत इस्पात की क्षमता वृद्धि, नई स्टेट ऑफ आर्ट स्टील मिल्स की स्थापना उद्यमियों द्वारा विश्व स्तर के क्षमता का अधिग्रहण, पुराने संयंत्रों का उन्नयन और सतत आधुनिकीकरण करके एक केन्द्रीय स्थान रखता है। लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) मुख्यतया इस्पात संयंत्रों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं और शैक्षणिक संस्थानों द्वारा किया जाता है। वर्ष में लगभग 125 करोड़ रूपए का लोहा और इस्पात और गौण कंपनियों द्वारा आर एंड डी कार्यों में निवेश किया जाता है जो मुश्किल से इस्पात कंपनियों के सकल कारोबार का 0.20% से 0.30% है और जो अनुमानत: अंतर्राष्ट्रीय इस्पात कंपनियों का 1/10 है। घरेलू कच्ची सामग्री के उपयोग को बढ़ाने, तकनीकी आर्थिक प्राचलों में सुधार करने, ऊर्जा खपत और सी ओ2 उत्सर्जन में कमी करने और नए इस्पात उत्पादन का विकास करने की आवश्यकता है। मंत्रालय के आर एंड डी के प्रोत्साहनवर्धक प्रयासों में प्रमुखतया निम्नलिखित तीन क्षेत्र शामिल होंगे:-

(क) नई प्रौद्योगिकियों, विशेष तौर से जो हमारे घरेलू संसाधनों से संबंधित हैं, को तेजी से अपनाने/अंगीकार करने के लिए पहल करना।

(ख) उपस्कर डिजाइन तैयार करने में घरेलू क्षमता का विकास करना और, लौह अयस्क चूर्ण और अकोककर कोयल का उपयोग करने वाली अभिनव प्रौद्योगिकी इस्तेमाल करना और

(ग) इंडक्शन भट्टी रूट, कच्चा माल सज्जीकरण आदि के जरिए उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करना

आर एंड डी पर और अधिक बल देने के लिए इस्पात मंत्रालय निम्न दो योजनाओं के अन्तर्गत वित्तीय सहायता प्रदान करके सरकारी और निजी दोनों इस्पात क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास कार्यों को प्रोत्साहित कर रही है।

**(i) इस्पात विकास निधि (एस डी एफ)**

अधिकार प्राप्त समिति (ई सी) ने 519.00 करोड़ रूपए जिसमें एस डी एफ की राशि 250.00 करोड़ रूपए है, की लागत वाली 64 अनुसंधान परियोजनाओं का अनुमोदन किया है। इनमें से 31 परियोजनाएं पूरी कर ली गई हैं।

**(ii) आर एंड डी के लिए सरकारी बजटीय सहायता (जीबीएस)**

परियोजना अनुमोदन एवं निगरानी समिति (पीएएमसी) ने क्रमश: दिनांक 11.2.2010 और 23.11.2010 को आयोजित अपनी पहली और दूसरी बैठक में कुल मिलाकर 143.87 करोड़ रूपए की 8

परियोजनाओं को अनुमोदन प्रदान किया है। इस कुल लागत में से सरकार 111.11 रोड रूपए का वित्त पोषण करेगी। परियोजनाएं प्रगति पर हैं और इनकी अवधि 2 से 3 वर्ष है। इस स्कीम के तहत आर एंड डी परियोजनाओं का मुख्य जोर भारत में उपलब्ध स्लाइम और निम्न ग्रेड के कोयला (कोकिंग और नॉन कोकिंग) समेत निम्न ग्रेड के लौह अयस्क का समुपयोजन किए जाने पर है ताकि भारतीय इस्पात उद्योग में दीर्घकालीन विकास हो सके।

## (ix) चुनिंदा इस्पात मदों के संबंध में मेंडेटरी क्वॉलिटी कंट्रोल ऑर्डर

उपभोक्ता मामले विभाग ने इस्पात मंत्रालय के साथ परामर्श करके 17 ऐसे स्टील उत्पादों को अभिज्ञात किया है जिनका उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य/सुरक्षा पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ रहा है और जो अवसंरचना के विकास के लिए भी संवेदनशील है। वर्तमान में आईएसआई के विनिर्देशनों (शेष 10 इस्पात मदों को लागू करने के लिए भी विचार-विमर्श चल रहे हैं) के आधार पर क्वॉलिटी कंट्रोल आर्डर के तहत इस्पात के 7 उत्पादों को शामिल किया गया है वे हैं प्री-स्ट्रेस्ड कंक्रीट हेतु स्टील वॉयर/स्ट्रैंड्स, इपोक्सी कोटेड बार हेतु विनिर्देशन, और गल्वेनाइज्ड स्टील शीट हेतु विनिर्देशन इत्यादि।

## (x) अवसंरचनात्मक अड़चनों को दूर करना

इस्पात क्षेत्र को रेलवे संबंधी सुविधाएं देने में महत्वूपर्ण अड़चनों की पहचान करने के लिए एक समन्वय समिति का गठन किया गया है जिसमें इस्पात उद्योग, इस्पात मंत्रालय तथा रेलवे बोर्ड के प्रतिनिधि शामिल होंगे। आर्थिक अनुसंधान इकाई (ईआरयू) के जरिए 11वीं योजना में इस्पात क्षमता के प्रस्तावित विस्तार हेतु अवसंरचनात्मक सुविधाओं की पर्याप्तता पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की गई है। इस रिपोर्ट में इस्पात क्षमता में प्रस्तावित विस्तार, विशेष तौर पर उड़ीसा, झारखंड तथा छत्तीसगढ़ के संदर्भ में, को पूरा करने के लिए परिवहन (रेलवे, सड़क तथा पत्तन), जल संसाधन तथा विद्युत संबंधी अवसंरचनात्मक आवश्यकता पर केंद्रित है।

## (xi) क्लीन डेवलपमेंट मैकेनिज्म (सीडीएम) के अंतर्गत की गई पहल

सीडीएम दीर्घकाल तक चलने वाली तथा पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों के कार्यान्वयन यूनाइटेड नेशन्स फ्रेमवर्क कनवेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यूएनएफसीसीसी) के क्योटो प्रोटाकॉल के तहत की गई फ्लैग्जिबल व्यवस्थाओं में से एक है। केंद्रीय सरकार ने नेशनल सीडीएम अथॉरिटी (एनसीडीएमए) का गठन किया है जो उपयुक्त परियोजनओं को मेजबान देश का अनुमोदन (एचसीए) प्रदान करती है। अब तक लगभग 158 लोहा और इस्पात परियोजनाओं को एचसीए प्रदान किया गया है। इन परियोजनाओं से ग्रीन हाउस गैस (जीएचजी) में 105 मिलियन टन कार्बनडाईऑक्साइड (सीओ 2) के बराबर कमी होगी जिससे (वर्ष 2012 तक) 105 मिलियन टन सर्टिफाइड एमिशन रिडक्शन का सृजन होगा। जिसका महत्वपूर्ण विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार में व्यापार किया जा सकता है। जो इस समय 15-25 यूरो प्रति सी ई आर यूनिट के बीच है। इस प्रकार कंपनियों के साथ-साथ देश को भी काफी लाभ होगा।

आरआईएनएल, इस्पात मंत्रालय और वित्त मंत्रालय ने मई, 2009 में सिन्टर मशीन 1 तथा 2 के सिंटर स्ट्रेट लाइन कूलरों में 20.6 मेगावाट का वेस्ट हीट रिकवरी सिस्टम स्थापित करने के लिए जापान के न्यू इनर्जी एण्ड इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी एण्ड डेव्लपमेंट आर्गेनाइजेशन (एनईडीओ) के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया हैं। भारतीय इस्पात उद्योग में यह परियोजना अपने किस्म की पहली है। इस परियोजना को जापान ग्रीन ऐड प्लान के तहत क्रियान्वित किया जा रहा है।

### (xii) उपभोक्ता परिषद की बैठक

इस्पात उत्पादों की पूर्ति/उपलब्धता और अन्य संबद्ध मुद्दों जिनका उपभोक्ताओं द्वारा सामना किया जा रहा है का समाधान करने के लिए इस्पात मंत्रालय में इस्पात उपभोक्ता परिषद का गठन किया गया है। दिनांक 16 जुलाई, 2010 को इस्पात उपभोक्ता परिषद की बैठक माननीय इस्पात मंत्री की अध्यक्षता में हुई थी जिसमें विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया था।

### (xiii) वित्तीय उपाय

घरेलू इस्पात उद्योग को सहायता प्रदान करने के लिए पिछले एक वर्ष के दौरान सरकार द्वारा निमनलिखित उपाय किए गए हैं:-

- सभी इस्पात मदों पर 5 प्रतिशत का आयात सीमा शुल्क,
- सभी इस्पात मदों पर 10 प्रतिशत का आबकारी शुल्क (सैनवेट)
- लौह अयस्क चूरे पर 5 प्रतिश्ता और लौह अयस्क लंप पर 15 प्रतिशत का निर्यात शुल्क

### (xiv) जेंडर बजटिंग

स्त्री सशक्तिकरण हेतु वित्त मंत्रालय तथा महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के निदेशानुसार मंत्रालय में एक जेंडर बजट सेल स्थापित किया गया है जिसका उद्देश्य मंत्रालय में जेंडर बजट की अवधारणा को कार्यान्वित करने के लिए कदम उठाना है।

## 5. पर्यावरण प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण

कच्चे माल से लेकर परिसज्जित इस्पात चरण तक लोहा और इस्पात उत्पादन के लिए अपनाई गई प्रौद्योगिकी तथा अन्ततः सृजित उप-उत्पादों तथा अपशिष्ट के दक्षतापूर्ण निपटान/पुनः उपयोग को अनिवार्य रूप से लोहा और इस्पात संयंत्रों में पर्यावरण संरक्षण से जोड़ा जाना चाहिए। इसलिए उत्पादन प्रक्रियाओं तथा संयंत्र के आस-पास के परिवेश को शामिल करते हुए एकीकृत दृष्टिकोण के लिए पर्यावरण के प्रभावी प्रबंधन की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में उद्योग और सरकार का उद्देश्य शून्य अपशिष्ट/शून्य बहिस्राव होना चाहिए।

अपशिष्ट विशेष रूप से ढोस अपशिष्ट अपरिहार्य रूप से लाभपूर्ण मूल्यवर्धित उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है। दूसरे शब्दों में सतत विकास प्रौद्योगिकी विकास और डिजाईन स्तर से ही शुरू किया जाना चाहिए। भविष्य में यह सुनिश्चित किया जाए कि वे प्रौद्योगिकियाँ जो बने रहने योग्य नहीं हैं, न तो विद्यमान संयंत्रों के विस्तार और न ही नई क्षमताओं के सृजन के लिए अपनाई जानी चाहिएं। इन उद्देश्यों के लिए उद्यमियों और सरकार दोनों के स्तर पर उपयुक्त हस्तक्षेप के जरिए पहल करने के लिए आवश्यक है।

## 6. सुरक्षा उपाय

भारत में लोहा और इस्पात उद्योग में सुरक्षा की स्थिति में समग्र रूप से सुधार करने हेतु निम्नलिखित उपचारात्मक कदम उठाए जाने की आवश्यकता है:-

(i) कानूनी सिस्टम को सुदृढ़ करना ताकि सुरक्षा नीति में उल्लंघन की कोई भी घटना चाहे वह सरकारी क्षेत्र में हो अथवा निजी क्षेत्र में हो, बिना दण्ड दिए नहीं रहनी चाहिए। तदनुसार फैक्टरी

निरीक्षक, सुरक्षा अधिकारी और कानूनी ढ़ांचे की प्रणाली को सुधारना होगा। प्रौद्योगिकियों/कार्य परिवेश में हुए बदलावों को ध्यान रखने के लिए कानूनी प्रावधानों में उन्नयन किया जाना चाहिए ताकि जहां तक संभव हो सके, खामियों को दूर किया जा सके।

(ii) सभी संयंत्रों में आई एल ओ दिशा निर्देशों के अनुसार ओ एच एस प्रबंधन प्रणाली और ओ एच एस ए एस 18001 अपनाई जानी चाहिए।

(iii) भारत में कुछ इस्पात संयंत्रों में अब भी कई पुरानी प्रौद्योगिकियाँ अर्थात् ट्विन हर्थ फर्नेश, इंगाट मेकिंग आदि प्रचालनरत हैं। ये प्रक्रियाएं वहां काम करने वाले कर्मचारियों के लिए खतरनाक हैं और इस प्रकार के संयंत्रों में सुरक्षा में सुधार करने हेतु इन प्रक्रियाओं को तत्काल बन्द किए जाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त नई प्रौद्योगिकियों का विकास सुरक्षित कार्य परिवेश उपलब्ध कराने में सहायक होगा।

(iv) अन्तर्निहित जोखिम/खतरे का बेहतर ढंग से आंकन करने के लिए सभी संयंत्रों में अग्नि माडलिंग और जोखिम विश्लेषण का विश्लेषण किया जाना चाहिए।

## 7. आंकड़ों के संग्रहण और जानकारी का प्रचार-प्रसार करने के लिए संस्थागत ढ़ांचा

इस्पात उद्योग के नियंत्रणमुक्त होने से आंकड़ों का संग्रहण विशेष रूप से क्षमता और उत्पादन से संबंधित सूचना संग्रहित करना अब काफी जटिल हो गया है। सभी शेयरधारकों, नीति निर्माताओं, फर्मों, वित्तीय संस्थानों और उपभोक्ताओं द्वारा संसूचित निर्णय लेने की सुविधा हेतु एक विश्वसनीय और प्रभावी आंकड़ा आधार तैयार करने को सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक कानूनी प्रावधान/संस्थागत ढांचे की आवश्यकता है। विद्यमान संस्था नामत: संयुक्त संयंत्र समिति (जेपीसी) तथा आर्थिक अनुसंधान इकाई (ईआरयू) इस कार्य को कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, विद्यमान संस्थाओं नामत: संयुक्त संयंत्र समिति (जेपीसी) तथा आर्थिक अनुसंधान इकाई (ईआरयू), इंस्टिट्यूट फॉर स्टील डवलपमेंट एंड ग्रोथ (आईएनएसडीएजी), नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ सैकेण्ड्री स्टील टैक्नोलॉजी (एनआईएसएसटी) तथा बीजू पटनायक नेशनल स्टील इंस्टिट्यूट (बीपीएनएसआई) को सार्वभौमिकीकरण की बदली हुई वास्तविकताओं के अनुरूप रिओरियेंटिड करने की आवश्यकता है।

## 8. नीतिगत पहलों से निष्कर्ष बजट की संगतता

11वीं योजना (2007-12) के दौरान इस्पात मंत्रालय के अधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में चालू योजनाओं/परियोजनाओं जैसे क्षमता विस्तार, प्रौद्योगिकीय उन्नयन, लौह अयस्क तथा कोककर कोयला खानों का अधिग्रहण/विकास, अनुसंधान एवं विकास योजनाओं, नए स्लैब कास्टर की स्थापना, कोक ओवन बैटरी का पुनर्निर्माण, ए एम आर योजनाओं आदि से संयंत्रों की उत्पादन क्षमता में वृद्धि होगी, गुणवत्ता तथा उत्पाद-मिश्र में सुधार होगा और उत्पादन की लागत में कमी होगी। अवधारणा पर बल देने सहित निष्कर्ष बजट की अवधारणा, रूपांकन, निष्कर्षोन्मुखी योजनाओं/कार्यक्रमों का कार्यक्रम और सुदृढ़ परियोजना/कार्यक्रम तैयार करने की अपेक्षा, क्षमताओं का मूल्यांकन तथा प्रभावी सुपुर्दगी प्रणाली से वास्तविक परिसम्पत्तियों और जनशक्ति के बेहतर उपयोग की संभावना है, परियोजना प्रबंधन और कार्यान्वयन में सुधार होने, तथा प्रभावी प्रबंधन सुनिश्चित करने की आशा है। सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की योजनाओं/कार्यक्रमों के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन से भारतीय इस्पात उद्योग के न केवल लागत, गुणवत्ता और उत्पाद मिश्र की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता हासिल करने अपितु दक्षता और उत्पादकता के अन्तर्राष्ट्रीय बेन्चमार्कों जो राष्ट्रीय इस्पात नीति 2005 में परिकल्पित उद्देश्य एवं लक्ष्य हैं, में भी योगदान देगी।

**********

# अध्याय IV

## पिछले निष्पादन की समीक्षा-निष्कर्ष बजट 2010-11

निष्कर्ष बजट 2010-11 इस्पात मंत्रालय की योजना और गैर-योजनागत योजनाओं/कार्यक्रमों के संबंध में तैयार किया गया था। 10वीं योजना (2002-07) तक इस्पात मंत्रालय को प्रत्यक्ष रूप से किसी योजना का कार्यान्वयन नहीं करना था। 11वीं योजना (2007-12) में "लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए योजना" नामक एक नई योजना को 118.00 करोड़ रुपए के प्रावधान सहित शामिल किया गया है। इस योजना को कार्यान्वयन के लिए औपचारिक रूप से दिनांक 23.1.2009 को अनुमोदित किया गया था। यह स्कीम 1.4.2009 से प्रभावी है। दिसंबर, 2010 तक आठ (8) आर एंड डी परियोजना प्रस्तावों का अनुमोदन कर दिया गया है। परियोजना की अवधि 2 वर्ष से 3 वर्ष है।

इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रम अपने-अपने प्रचालनों के क्षेत्रों से संबंधित विभिन्न योजनाएं/कार्यक्रम बनाते हैं और कार्यान्वित करते हैं। योजना के स्वरूप पर निर्भर करते हुए सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की योजनागत योजनाएं उनकी वार्षिक योजना अथवा पंचवर्षीय योजनाओं अथवा दोनों की घटक होती हैं। प्रत्येक उपक्रम की अपनी-अपनी कई योजनाएं हैं। अधिकांश योजनाएं कंपनी के दिन-प्रतिदिन के कार्यों और प्रचालनों से संबंधित हैं। इसलिए यह महसूस किया गया है कि इस्पात मंत्रालय के निष्कर्ष बजट में सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की सभी योजनाओं को शामिल करना न तो व्यवहारिक होगा और न ही निष्कर्ष बजट के उद्देश्य के अनुरूप होगा। इसलिए यह निर्णय लिया गया कि इस्पात मंत्रालय के निष्कर्ष बजट में केवल 50 करोड़ रूपए से अधिक की मंजूर/अनुमानित लागत की प्रमुख योजना और गैर-योजनागत योजनाओं को ही शामिल किया जाए। इस मानदंड के आधार पर 49 योजनागत योजनाओं (सेल की 22 योजनाओं, आरआईएनएल की 17, केआईओसीएल की 5, एनएमडीसी की 2, मॉयल की 2 और इस्पात मंत्रालय की 1 योजनाओं) तथा एक गैर-योजनागत योजना (एचएससीएल के संबंध में) को निष्कर्ष बजट 2010-11 में शामिल किया गया था। 50.00 करोड़ रूपए से अधिक अनुमानित/मंजूर लागत वाली इन 50 योजनाओं के संबंध में निष्कर्ष बजट, 2010-11 में दर्शाए गए प्रक्षेपित निष्कर्षों की तुलना में संयंत्र-वार वास्तविक उपलब्धियां (31 दिसंबर, 2010 तक) निम्नलिखित तालिका में दी गई हैं। यह उल्लेखनीय है कि अधिकांश प्रमुख योजनाएं कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं अत: इन योजनाओं की उपलब्धियों का अपेक्षाकृत अधिक सार्थक और वास्तविक मूल्यांकन इन योजनाओं के पूरा किए जाने के बाद ही संभव है।

## निष्कर्ष बजट 2010-11 में अनुमानित प्रक्षेपित उत्पादन की तुलना में वास्तविक उपलब्धियाँ

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| क. | **50.00 करोड़ रूपए से अधिक की अनुमानित/मंजूर लागत की योजनाएं** | | | | | | | | | | | |
| 1. | **स्टील अथारिटी आफ इंडिया लिमिटेड (सेल)** | | | | | | | | | | | |
| (क) | **भिलाई स्टील प्लांट** (बीएसपी) | | | | | | | | | | | |
| (i) | प्लेट मिल ड्राईव्ज का थिरिस्टोराईजेशन | स्टेट-ऑफ-आर्ट डिजिटल कंट्रोल के साथ मॉर्डन थिरिस्टर कन्वर्टरों द्वारा पुराने व अविश्वसनीय एमजी सैटों को बदलना। | 53.52 | 6.22 | 8.00 | मिल उपलब्धता में सुधार एवं विद्युत खपत में कमी | फरवरी, 2009 | जनवरी 2010 में पूरा हुआ | 1.63 | 39.74 | पूरी हुई | पूरी हुई |
| (ii) | ऑक्सीजन संयंत्र-।। में 700 टीपीडी एएसयू | ऑक्सीजन, नाइट्रोजन व आर्गन की मांग में हुई बढ़ोतरी को पूरा करने के लिए ऑक्सीजन संयंत्र-।। में नया एएसयू स्थापित किया जा रहा है। | 258.18 | 130.00 | 80.00 | 700 टन ऑक्सीजन प्रतिदिन | जुलाई, 2009 | मई, 11 | 52.04 | 102.58 | -- | मै0 क्राइयोजेन के साथ ठेका समाप्त, निविदा पुन: दी गई। मै0 एयर लिक्विड के साथ नया ठेका हस्ताक्षरित |
| (iii) | सीओबी-6 का पुनर्निर्माण | उत्पादन में सुधार करना तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के नवीनतम प्रदूषण मानकों को प्राप्त करना। | 191.20 | 60.00 | 50.00 | -- | जनवरी, 2010 | फरवरी, 2011 | 38.59 | 119.05 | -- | सिलिका ईटों की लगातार अनुपलब्धता |
| (iv) | बीएसपी का विस्तार | लो ग्रेडिंग तथा इनर्जी इंट्रींसिक यूनिटों को फेज आउट करना, सेमीज को कम करना | 18847.00 | 3258.00 | 2524.00 | एचएम क्षमता 4.82 एमटीपीए से बढ़ाकर 7.5 एमटीपीए करना | मार्च 2013 | मार्च 2013 | 790.07 | **1782.09** | -- | -- |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| (ख) | राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) | | | | | | | | | | | |
| (i) | बीएफ-4 में कोल डस्ट इंजेक्शन सिस्टम | कोक दर में कमी तथा फर्नेश उत्पादकता में सुधार के लिए तकनीकी आवश्यकता | 70.71 | 2.89 | 4.00 | 1:1 अनुपात के आधार पर कोक का पुल्वेराईज्ड कोल में प्रतिस्थापना। 120 किग्रा/ टीएचएम की दर से ब्लास्ट फर्नेस में कोल इंजेक्शन दर । | अक्टूबर 2008 | अप्रैल, 2011 | 1.73 | 52.55 | -- | मै0 सिनो स्टील, चीन द्वारा डिजायन और इंजीनियरी में प्रारंभिक विलम्ब। मै0 सिनो स्टील द्वारा सिविल और स्ट्रक्चरल कार्य तथा उपस्करों की सप्लाई में विलम्ब। वीजा नीति में परिवर्तन के कारण चीन के विशेषज्ञों के आगमन में विलंब हुआ। सिनो स्टील एंड सब एजेंसियों के मध्य वाणिज्यिक विवाद |
| (ii) | कोक ओवन बैटरी 4 का पुनर्निर्माण | उत्पादन में सुधार करना तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के अद्यतन प्रदूषण मानदंडों को पूरा करना | 248.94 | 30.52 | 40.00 | पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के नवीनतम प्रदूषण मानदंडों के अनुसार पुनर्निर्माण | अगस्त 2009 | मार्च 2010 को पूर्ण | 26.16 | 193.41 | पूर्ण | पूर्ण |
| iii) | सीपीपी-I में टर्बो ब्लोवर सं. 5 की अपरेटिंग | बीएफ - 4 की उच्च दाब की आवश्यकता के लिए और अन्य टर्बो ब्लोवरों के शट डाऊन/ अनुपलब्धता के मामले में अन्य धमन भट्टियों की एयर संबंधी आवश्यकता के लिए भी। | 54.05 | 4.86 | 7.70 | 2.3 किग्रा./सीएम$^2$ के दाब पर 1,63,000 एनएम$^3$/घंटे के डिस्चार्ज वोल्यूम की क्षमता | जनवरी 2009 | दिसम्बर 2009 में पूरा | 3.98 | 46.85 | पूर्ण | पूर्ण |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| (iv) | न्यू कोक ओवन गैस होल्डर | गैस ग्रिड में पर्याप्त दाब बनाए रखने के लिए प्रतिस्थापन के रूप में न्यू कोक ओवन गैस होल्डर | 123.22 | 18.79 | 10.00 | 100,000 मी क्षमता | जून 2009 | दिसम्बर 2009 में पूरा | 6.36 | 90.07 | पूर्ण | पूर्ण |
| (v) | 700टीपीडी ऑक्सीजन संयंत्र | ऑक्सीजन, नाइट्रोजन व आर्गन की मांग में हुई बढ़ोतरी को पूरा करने के लिए नया ऑक्सीजन संयंत्र | 302.70 | 50.00 | 50.00 | 700 टन प्रतिदिन क्षमता | जून 2009 | अक्टूबर 2010 में पूर्ण | 26.17 | 246.72 | पूर्ण | पूर्ण |
| (vi) | एसएमएस-II के बीओएफ कन्वर्टरों की सिमल्टानियस ब्लोइंग | एसएमएस-II की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए | 197.66 | 25.00 | 40.00 | 1.68 एमटीपीए से 1.85 एमटीपीए उत्पादन बढ़ाना | अक्टूबर 2009 | अक्टूबर 2010 | 24.40 | 132.04 | पूर्ण | पूर्ण |
| (vii) | आरएसपी का विस्तार | तप्त धातु क्षमता बढ़ाकर 4.5 एमटीपीए करना | 12922.00 | 1645.00 | 2150.00 | तप्त धातु क्षमता 2.12 एमटीपीए से बढ़ाकर 4.5 एमटीपीए करना। | मार्च 2013 | मार्च 2013 | 1686.46 | 3058.42 | -- | -- |
| **(ग)** | **बोकारो इस्पात संयंत्र (बीएसएल)** | | | | | | | | | | | |
| (i) | बीएफ-2 व 3 में कोल डस्ट इंजेक्शन सिस्टम | कोक दर में कमी तथा फर्नेश उत्पादकता में सुधार के लिए तकनीकी आवश्यकता | 133.92 | 8.00 | 20.00 | 1:1 अनुपात के आधार पर कोक का पुल्वेराईज्ड कोल में प्रतिस्थापना। 120 किग्रा/ टीएचएम की दर से ब्लास्ट फर्नेस में कोल इंजेक्शन दर । | मई 2008 | जून 10 (बीएफ-3) पूर्ण दिसम्बर 10 (बीएफ-2) पूर्ण | 4.47 | 92.48 | बीएफ-2 में पूर्ण इंजेक्शन 10.12.10 को शुरू हुआ | पूर्ण |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| (ii) | एसएमएस-।। में दूसरी लैडल फर्नेस की स्थापना। | प्रचालन में कास्टरों व व्यवहार्यता में लंबी सीक्वेंस के लिए बफर स्टेशन बनाने के बावजूद मूल्यवर्धित इस्पात के उत्पादन को सुविधा प्रदान करना, विशेष रूप से कम सल्फर वाले स्टील ग्रेड को, रिटर्न हीट में कमी, ऑक्सीजन खपत और फैरो अलॉय की बचत। | 96.96 | 8.00 | 10.00 | मूल्यवर्धित इस्पात का उत्पादन, कन्वर्टरों की लाईनिंग लाईफ में सुधार। | फरवरी 2008 | सितम्बर 10 में पूर्ण | 3.95 | 65.08 | पूर्ण | पूर्ण |
| (iii) | सिंटर संयंत्र में ईएसपी सहित बैटरी साईक्लोन्स का प्रतिस्थापन। | केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मानदण्डों के अनुसार आऊटलेट डस्ट के उत्सर्जन स्तर की सांविधिक जरूरत को पूरा करने के लिए इलैक्ट्रोस्टेटिक प्रीसीपीटेटर्स द्वारा बैटरी साईक्लोन का प्रतिस्थापन। | 80.60 | 25.00 | 10.00 | आऊटलेट डस्ट के उत्सर्जन स्तर में 150 एम$^3$/एनएम$^3$ पर नियंत्रण करने के लिए 900,000 एम$^3$/घंटा क्षमता के 6 ईएसपी। | अगस्त 2010 | अगस्त 2012 | 5.06 | 37.85 | 17.6.2010 को सिन्टर बैण्ड -3 के साथ ई.एस.पी-6 को सफलता पूर्वक शुरू करना | ई.एस.पी-5 के उत्थापन के लिए बंद नहीं किए जाना। एसआरईपीसी द्वारा टावर क्रेन की अनुपलब्धता । |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| | | | | | | | | | | | | |
| (iv) | नए टर्बो ब्लोवर न. 8 की स्थापना | बीएफ-2 की कोल्ड ब्लास्ट (सीबी) की बढ़ी हुई जरूरत को पूरा करना। | 125.92 | 26.00 | 55.00 | सी बी में 4000 एनएम$^3$/मिनट का ब्लोवर डिस्चार्ज वोल्यूम और ब्लोवर एंड में 3.9 किग्रा/सीएम$^3$ का डिस्चार्ज प्रैशर। | अगस्त 2009 | मई 2011 | 12.19 | 25.16 | -- | मै0 राजेलैक्ट्रोपोम के साथ ठेका रद्द। नया आर्डर एनआईसीसीओ/ए सबीडब्लयू चीन/एमईएस, जापान को दिया गया। |
| (v) | बीएफ-2 का उन्नयन | उपयोगी वर्किंग वोल्यूम और उत्पादकता में वृद्धि करना। | 892.32 | 305.00 | 105.00 | उपयोगी वोल्यूम में 1758 से 2259 एम3 और उत्पादकता में 2टी/एम3/दिन की बढ़ोतरी होगी। | अगस्त 2009 | जुलाई 2010 में पूर्ण | 74.86 | 632.19 | पूर्ण | पूर्ण |
| (vi) | सीओबी-1 व 2 का पुनर्निर्माण। | उत्पादन में सुधार व पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के नवीनतम प्रदूषण मानदंडों को प्राप्त करना। | 500.90 | 147.00 | 95.00 | उत्पादन में सुधार व पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के नवीनतम प्रदूषण मानदंडों को प्राप्त करना। | अप्रैल 2010 | मार्च 11 (सीओबी-1) अगस्त 11 (सीओबी-2) | 61.17 | 235.68 | 30.12.2010 को सीओबी-1 को बैटरी हिटींग शुरू की गई | विभिन्न पार्टियों और मै0 बीसी द्वारा आपूर्ति तथा रिफैक्ट्रीयों को उत्थापन में विलम्ब हुआ । |

(करोड़ रूपए)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| (vii) | बीएसएल का विस्तार | इनर्जी सधन यूनिटों को फेज आउट करना तथा ऊर्जा दक्ष प्रौद्योगिकी शुरू करना। | 6951.00 | 930.00 | 897 | 1.2 एमटीपीए का नया कोल्ड रोलिंग मिल कॉम्पलैक्स | दिसंबर, 2011 | दिसंबर, 2011 | 619.80 | 1608.60 | -- | -- |
| **(घ)** | इस्को स्टील प्लांट | | | | | | | | | | | |
| (i) | कोक ओवन बैटरी -10 का पुनर्निर्माण | उत्पादन में सुधार और एमओईएफ के नवीनतम प्रदूषण मानदण्डों को प्राप्त करना | 436.59 | 120.00 | 90.00 | एमओईएफ के नवीनतम मानदण्डों के साथ पुनर्निर्माण | सितम्बर 2009 | अगस्त 2010 तक पूर्ण | 71.10 | 321.66 | पूर्ण | पूर्ण |
| (ii) | आईएसपी का विस्तार | 2.7 एमटीपीए तप्त धातु, 2.5 एमटीपीए अपरिष्कृत इस्पात और 2.37 एमटीपीए विक्रेय इस्पात का उत्पादन करने के लिए नई सुविधाएं स्थापित करना। | 16073.74 | 3432.00 | 3890.00 | 2.7 एमटीपीए तप्त धातु, 2.5 एमटीपीए अपरिष्कृत इस्पात और 2.37 एमटीपीए विक्रेय इस्पात | दिसंबर, 2010 | दिसंबर, 2011 | 3199.08 | 9904.98 | -- | मिट्टी की कठिन एवं अप्रत्याशित स्थितियों के कारण सिविल तथा स्ट्रक्चरल कार्य बड़ी मात्रा में बढ़ गया। |
| **(ङ)** | **सेलम इस्पात संयंत्र (एसएसपी)** | | | | | | | | | | | |
| (i) | एसएसपी का विस्तार | सतत् ढलाई व नई सीआरएम के साथ इस्पात निर्माण सुविधाएं विकसित करना। | 2138.00 | 194.00 | 470.00 | अपरिष्कृत इस्पात के उत्पादन में शून्य से 0.18 एमटी और विक्रेय इस्पात के उत्पादन में 0.18 से 0.34 एमटी की वृद्धि करना। | जून 2010 | सितंबर, 2010 में पूर्ण | 384.99 | 1792.23 | 01.09.2010 को एओडी के जरिये एसएस के उत्पादन के लिए प्रथम हॉट ट्राईल किया गया । 01.08.2010 को सीएस के प्रथम स्लैब का कास्ट किया गया । 06.11.2010 को दो हीटों के साथ अधिकतम 9 स्लैबों (108.7 टी ) का उत्पादन किया गया । स्लीटिंग लाइन: पहले चरण का प्रचालन पूर्ण हुआ । | पूर्ण की गई ईकाइयों स्थिरीकरण के अधीन है । |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| (f) | **रॉ मैटेरियल डिविजन (आर एम डी )** | | | | | | | | | | | |
| (i) | बोलानी आयरन ओर माइन की लोडिंग क्षमता में वृद्धि करना | लोडिंग क्षमता बढ़ाने के लिए और रेलवे लाइन में संशोधन करने के लिए, फाइंस और लंप साइडिंग पर फुल रैक (एक स्ट्रैच मे) लोडिंग के लिए ओवर हैड | 124.88 | 23.00 | 35.00 | -- | दिसंबर, 2009 | मार्च 2011 | 31.37 | 78.49 | -- | मै0 टैकप्रो द्वारा डिजाईन इंजीनियरिंग, सिविल एवं स्ट्रक्चरल कार्यों में धीमी प्रगति। सिविल कार्यो, मैकेनिकल तथा इलेक्ट्रिकल कार्यों में विलंब के कारण उत्थापन कार्य में विलंब हुआ। रेलवे भूमि का अनाधिकृत इस्तेमाल। |
| 2. | **राष्ट्रीय इस्पात निगम लि. (आरआईएनएल)** | | | | | | | | | | | |
| (i) | कोक ओवन बैटरी सं0 4- चरण-II | स्वंतत्र बैटरी के रूप में सीओबी-4 का प्रचालन करना। गैस का पूरा उपयोग तथा अतिरिक्त उपोत्पाद सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए उपोत्पाद के बेहतर औचित्यकरण में वृद्धि और कोयल संभाल में शेष सुविधाएं। | 380.46 | 69.00 | 10.00 | 0.75 एमटी कोक | बैटरी -4 का प्रचालन शुरू किया गया। | 20-04-2009 को बैटरी 4 का प्रचालन किया गया । | 7.97 | 363.17 | 20-04-2009 को बैटरी 4 का प्रचालन किया गया । | बैटरी का प्रचालन किया गया । निष्पादन गारन्टी अंतिम स्वीकृति और दावों के निपटारे से संबंधित लंबित भुगतान । |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| (ii) | कोक ओवन बैटरी सं0 4- चरण-II | स्वंतत्र बैटरी के रूप में सीओबी-4 का प्रचालन करना। गैस का पूरा उपयोग तथा अतिरिक्त उपोत्पाद सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए उपोत्पाद के बेहतर औचित्यकरण में वृद्धि और कोयल संभाल में शेष सुविधाएं। | 355.30 | 85.00 | 50.00 | स्वंतत्र बैटरी के रूप में सीओबी-4 का प्रचालन करना। उपोत्पाद की रिकवरी में वद्धि | कोल हैण्डलिंग साइड: बीओडी के अनुमोदन के अनुरूप दिसम्बर 08 के अंत तक इसका प्रचालन कर दिया जायेगा । | कोल हैण्डलिंग साइड: सितम्बर 11 उतोत्पाद साइड: अक्टूबर 12 | 42.29 | 86.83 | कोल साइड: परामर्श दाता की नियुक्ति कर दी गई है सभी पैकेजों के आर्डर दे दिये गये है । साइट पर गतिविधियॉ विकासमान है। उतोत्पाद साइड: परामर्श दाता की नियुक्ति कर दी गई है सभी पैकेजों के आर्डर दे दिये गये है और संविदा सूची के अनुसार विकास हो रहा है । | कोल साईड्स: कोक के उच्चतर उत्पादन की दिशा में सितम्बर 2011 के अंत तक अतिरिक्त सुविधाओं के शुरू होने की संभावना है। उपोत्पाद साईड: निविदादाताओं की कमजोर प्रक्रिया के कारण अनेकों बार पुनर्निविदा देने के बाद बैंचोल रिकवरी प्लांट पैकेज में मै0 मेकॉन को आर्डर दिए तथा अब अक्टूबर 2012 के अंत तक इस कार्य को पूरा कर लिया जाएगा। |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| (iii) | द्रव इस्पात का 6.3 एमटीपीए तक विस्तार। | संयंत्र की क्षमता में वृद्धि। | 8692.00 | 2800.00 | 2270.00 | द्रव इस्पात के उत्पादन को बढ़ाकर 6.3 एमटीपीए क्षमता करना । | 28-10-2005/ फरवरी '11 से चरणों में 36/48 माह | चरण I: 2011-12 (सिन्टर प्लान्ट 3, बीएफ 3, एसएमएस 2 और डब्ल्यूआरएम 2) के लिए प्रचालन और स्थिरीकरण अवधि । स्टेज II: 2011-12 (स्पेशल बार मिल और स्टैक्चरल मिल) | 1722.53 | 7605.84 | आर्डर देने और प्रमुख डिजाइन तथा इंजिनियरिंग का कार्य पूरा हो गया है । चरण I: कुछ क्षेत्रों को छोडकर साइट के क्रियाकलापों के एक प्रमुख भाग को पूरा कर लिया गया है । बाकी क्षेत्रों को भी शीघ्र पूरा कर लिया जायेगा । प्रमुख इलेक्ट्रिकल सिस्टम का प्रचालन कर दिया गया है और प्रमुख ईकाइयों को स्थायी रूप से विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराई गई है । जल वायु एवं नाइट्रोजन सिस्टम तथा रॉ मैटिरियल हैण्डलिग सिस्टम के एक भाग को पूरा कर लिया गया है । अन्य ईकाइयों का प्रायोगिक प्रचालन प्रगति पर है । चरण II: बेसिक इंजियरिंग पूरी हो गयी है और बिस्तृत इंजिनियरिंग 80 % से ज्यादा पूरी हो गयी है । वास्तविक उत्थापन विकासशील है और दिसम्बर 11 से मार्च 12 तक एकीकृत प्रचालन की योजना बनाई गयी है । | भारत सरकार के समक्ष 12499 करोड़ रू0 की संशोधित अनुमानत लागत अनुमोदन के लिए प्रस्तुत की गई। पावर प्लांट-II तथा तीसरा कनवर्टर एवं एसएमएस-II का चौथे कास्टर की अनुमानत लागत 1990 करोड़ रू0 है और तीसरे कनवर्टर तथा चौथे कास्टर के लिए एक परामर्शदाता के रूप में मेकान को तैनात किया गया है। |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| (iv) | एयर सैपरेशन प्लांट (ए एस यू - 4) | कंबाइंड ब्लोइंग प्रोसेस हेतु ऑर्गन की कमी होने पर अतिरिक्त सुविधा प्रदान करना । उत्पादित ऑक्सीजन बीएफ में प्रयुक्त की जाती है । | 170.00 | 170.00 | 70.00 | एसएमएस में द्रव इस्पात और बीएफ में तप्तधातु का उत्पादन बढाने में सहायता मिलेगी । | सितम्बर 07 के अंत तक एएसयू 4 को प्रचालित किया जाना है । | एएसयू - 4 दिसम्बर '2010 | 36.71 | 93.51 | एएसयू-4: इकाई की स्थापना का कार्य पूरा हो चुका है तथा यह अक्टूबर, 2010 में प्रचालित हो चुकी है और स्थिरीकरण के अधीन है । | -- |
| (v) | बीएफ-I और बीएफ-II के लिए पुल्वेराईज्ड कोल इंजेक्शन | कम महंगे पुल्वेराईज्ड कोल की तुलना में महंगे बीएफ कोक की खपत में कमी के लिए इंजेक्शन सिस्टम। | 133.00 | 50.00 | 40.00 | तप्त धातु का वर्धित उत्पादन। तप्त धातु की उत्पादन की लागत में कमी करना। | बीओडी के अनुमोदन के अनुरूप अक्टूबर 07 के अंत तक इसका प्रचालन कर दिया जायेगा । | मार्च 2011 | 29.02 | 71.96 | विस्तृत इंजीयरिंग, सिविल और स्ट्रकचरल कार्य लगभग पूरे हो गये है साईट पर चीन के उपस्करों की प्राप्ति हो चुकी है और विदेशी विशेषज्ञों के परिवेक्षण में उत्थापन कार्य प्रगति पर है तथा इसके मार्च, 2011 के प्रचालित होने की योजना है | -- |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| (vi) | लौह अयस्क खान तथा कोककर कोयला खानों का अधिग्रहण | कच्चे माल के लिए आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और लागत में कमी करना। | 600.00 | 60.00 | 2.00 | आरआईएनएल/ वीएसपी के पास कोककर कोयला/लौह अयस्क के लिए निजी स्रोत नहीं हैं और खानों के अधिग्रहण के लिए परिव्यय शामिल हैं। | जारी | जारी | 0.02 | 0.28 | -- | लौह अयस्क खानों के आबंटन के लिए राज्य सरकारों के साथ कार्रवाई की जा रही है तथा विदेशों में लौह अयस्क खानें अधिग्रहित करने की सभांवनाओं का पता लगाया जा रहा है। आरआईएनएल को दो कोककर कोयला खानें आबंटित की गई हैं जो व्यवहार्य नही है । |
| (vii) | लौह अयस्क भंडारण के लिए सुविधाएं | लौह अयस्क भण्डारण सुविधा बढ़ाना | 481.00 | 75.00 | 55.00 | लौह अयस्क भंडारण सुविधा 30 दिन के लिए बढ़ेगी। | अक्टूबर 2009 | मार्च- 2012 | 44.82 | 55.60 | प्रमुख पैकेजों के लिए आर्डर दे दिये गये है । इंजियरिंग पूरी होने की अंतिम अवस्था में है । निर्माण कार्य शुरू हो गये है तथा इनके 2011-12 के अंत तक पूरे होने की योजना है और 3 बीएफ के संचालन के लिए आवश्यकता अनुसार यार्ड आपरेटिंग बनाया गया है । | -- |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| | | | | | | | | | | | | |
| (viii) | अनुषंगी सुविधाओं सहित 330 टीपीएच (छठा) बॉयलर | स्टीम आवश्यकता को बढ़ाना। | 350.00 | 149.00 | 120.00 | विस्तार इकाईयों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रोसेस स्टीम बढेंगे और विद्युत के उत्पादन में मदद मिलेगी । | दिसम्बर-2010 | जून- 2011 | 88.53 | 191.83 | हाइड्रोलिक टेस्ट स्टेज तक बॉयलर की स्थापना का कार्य पूरा हो गया है और शेष उत्थापन प्रगतिधीन है । यद्यपि मै0 भेल द्वारा विलम्ब हुआ है और प्रचालन के लिए कार्यवाही की गई । | मैसर्स भेल द्वारा आपूर्ति में और आर आई एन एल द्वारा सभी पैकेजों हेतु साईट गतिविधियों पर अनुवर्ती कार्रवाई में सुधार हुआ है तथा संयुक्त सचिव (इस्पात) द्वारा भी मामले को उठाया गया है लेकिन बॉयलर 6 एंव टी जी 5 के पूरे होने का कार्य अभी भी चिन्ता का विषय है । मैसर्स भेल द्वारा मामले पर कार्रवाई की जा रहीं है । |
| (ix) | 67.5 मेगावाट का टीजी-5 पावर इवेक्यूएशन सिस्टम | अतिरिक्त विद्युत आवश्यकताओं को पूरा करना। | 358.00 | 173.00 | 96.00 | विस्तार इकाइयों की विद्युत आवश्यकता का आंशिक रूप से उत्पादन करना। | दिसम्बर 2010 | अगस्त 2011 | 73.84 | 198.17 | फिर्निशिंग कार्यो को छोड़कर प्रमुख सिविल और इस्ट्रक्चरल कार्य पूरे हो गये है तथा उपस्कर उत्थापन शूरू हो गया तथापि भेल द्वारा शेष आपूर्तियों में विलम्ब हुआ और इस संबंध में कार्यवाही चल रही है । | |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| (x) | एपी ट्रांसको के 220 केवी सिस्टम को सुदृढ़ करना। | 400 एमवीए की विद्युत की ट्रांसमिशन के लिए एपी पॉवर ग्रिड को सुदृढ़ करना। | 86.34 | 40.00 | 15.00 | विस्तार होने पर आरआईएनएल के लिए 400 केवीए की संविदागत मांग प्राप्त करने में सक्षम होगा। | सितम्बर 2012 | सितम्बर 2012 | 0.00 | 14.78 | चरण-I का कार्य पूरे होने की अंतिम अवस्था में है और आवश्यकता के अनुसार इसे पूरा कर लिया जायेगा । | कुछ स्पटीकरणों के कारण एपट्रांस्कों को भुगतान में विलम्ब हुआ । |
| (xi) | 400 एमवीए पावर प्राप्त करने के लिए 220 केवीए के पॉवर सिस्टम का संवर्धन। | विस्तार आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 400 एमवीए पॉवर प्राप्त करने में सक्षम बनने हेतु सब-स्टेशनों जैसे वीएसपी के इंटरनेल सिस्टमों को सुदृढ़ करना। | 58.10 | 45.00 | 15.00 | वीएसपी में 400 एमवीए पॉवर प्राप्त करने हेतु संवर्धन। | जनवरी 2011 | फरवरी 2011 | 0.00 | 0.00 | -- | इंजियरिंग पूरी हो गई है । चौथी तीमाही में आपूर्ति में वृद्धि हुई है । |
| (xii) | बीएफ-I & II कैटेगरी-I मरम्मत | कैटेगरी-I बड़े पैमाने पर मरम्मत करना तथा विद्यमान 3200 घन मीटर क्षमता को बढ़ाकर 3850 घन मीटर करना। | 1760.00 | 70.00 | 0.00 | तप्त धातु का उत्पादन बढ़ाकर 0.5 मिलियन टन से 2 मिलियन टन तथा 2.5 मिलियन टन करना। | एलओआई दिनांक से 21 माह | समझौते की तारीख से 22 माह | 0.00 | 0.00 | -- | बीएफ- I से सम्बन्धित प्रमुख पैकेज के लिए आर्डर दे दिया गया है दिनांक 01.11.2010 को एलओआई प्रदान की गई । |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| (xiii) | सिंटर प्लांट उपत्पादकता में वृद्धि करना। | बीएफ की मात्रा में वृद्धि के अनुरूप सिंटर के उत्पादन में वृद्धि करना। यह वर्तमान प्रदूषण नियंत्रण मानदंडों को पूरा करने के लिए है। | 343.00 | 20.00 | 0.00 | सिंटर का उत्पादन 5.5 एमटी से बढ़ाकर 6.8 एमटी करना। | मार्च 11 के अंत तक | बीएफ कटेगरी मरम्मत के साथ मिलान करना | 0.00 | 0.00 | -- | परामर्श दता एजेंसी की नियुक्ति के लिए कांट्रेक्ट प्रक्रियाधीन है । |
| (xiv) | एसएमएस कंवर्टर की मरम्त | 3 कनवर्टरों की विश्वसनीयता में सुधार करना क्योंकि मौजूदा अनुमानित जीवनकाल लगभग पूरा हो चुका है। इससे यह वर्तमान प्रदूषण नियंत्रण मानदंडों को पूरा करने के लिए है। | 180.00 | 54.00 | 0.00 | कनवर्टरों को बदलने के लिए टैक्नोलॉजिकल आवश्यकता। | एक कनवर्टर - मार्च 11 अन्य दो - मार्च 12 | बीएफ कटेगरी मरम्मत के साथ मिलान करना | 0.00 | 0.00 | -- | ग्लोवल निविदा खोली गई तथा इसे अंतिम रूप दिया जा रहा है । |
| (xv) | सिंटर मशीन 1 और 2 के सिंटर स्ट्रेटलाइन कूलर संबंधी 20.6 मेगावाट की वेस्ट हीट रिकवरी परियोजना | ग्रीन प्लान ऐड के तहत न्यू एनर्जी एंड इंडस्ट्रियल टेक्नालॉजी आर्गेनाईजेशन (एनईडीओ) के प्रौद्योगिकिय सहयोग के तहत सिंटर मशीन 1 और 2 के वेस्ट हीट रिकवरी सिस्टम आन स्ट्रेट लाइन कूलर के जरिए 20.6 मेगावाट विद्युत का उत्पादन करना। | 150.20 | 30.00 | 10.00 | सिंटर मशीनों की वेस्ट हीट से और कोई फोसिल ईंधन जलाए बगैर 20.6 मेगावाट विद्युत का उत्पादन करना। | 25.03.2012 (समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर करने की तारीख से 34 माह उदाहरणत: 25.5.2009) | 25.03.2012 (समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर करने की तारीख से 34 माह उदाहरणत: 25.5.2009) | 0.49 | 0.50 | -- | परामर्श दाता के रूप में मैसर्स मेकॉन की नियुक्ति की गई । सिविल स्ट्रक्चरल और जलप्रणाली पैकेजों के लिए आर्डर दे दिए गए है । जापान से उपस्कर की प्राप्ति प्रक्रियाधीन है । |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| | | | | | | | | | | | | |
| (xvi) | वाटर भंडारण सुविधाओं में वृद्धि | विस्तार की जल संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 16 एम क्यू एम क्षमता के अतिरिक्त भंडारण जलाशय का निर्माण | 220.00 | 10.00 | 2.00 | जल भंडारण की क्षमता बढ़ाकर 16 एमक्यूएम करना। | -- | -- | 0.00 | 0.00 | -- | सर्वेक्षण तथा मृदा जांच का कार्य पूरा हो गया है । ग्रिन बेल्ट की सूटिंग के लिए वन मंत्रालय से मंजूर प्राप्त करने के बाद आगामी कार्य किये जाएगें । |
| (xvii) | तीसरा कनवर्टर और चौथा कास्टर | तीसरा कनवर्टर और चौथा कास्टर लगा कर उत्पादित अतिरिक्त तप्त धातु को इस्पात में परिवर्तित करना (मौजूदा धमन भट्ठियों की केटगरी 1 मरम्मत के पश्चात) | 884.00 | 10.00 | 1.00 | इस्पात का उत्पादन बढ़ाकर 0.97 एमटी करना। | संविदा हस्ताक्षरित होने की तारीख से 30 माह (अनुमानित सितम्बर 2012) | संविदा हस्ताक्षरित होने की तारीख से 30 माह (अनुमानित सितम्बर 2012) | 0.00 | 0.00 | -- | परामर्श दाता का अंतिम निर्णय ले लिया गया है । जनवरी 2011 में कनवर्टर के लिए निविदा जारी कर दी गई । आवश्यकता के अनुरूप मार्च 2011 के अंत तक कास्टर के लिए निविदा जारी की जानी है । |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| **3.** | **केआईओसीएल लिमिटेड** | | | | | | | | | | | |
| (i) | मंगलौर में स्थाई रेलवे साइडिंग का विकास | मैग्नेटाईट लौह अयस्क सांद्रण देश में उपलब्ध नहीं होगा और पैलेट संयंत्र के प्रचालन के लिए कच्चे माल के रूप में बेल्लारी/हॉस्पेट के उच्च ग्रेड के हैमेटाईट लौह अयस्क का प्रयोग करना दीर्घकाल के लिए एक वैकल्पिक स्रोत माना जाता है। अधिकांश कच्चे माल की ढुलाई रेल द्वारा की जानी है इसलिए मंगलौर में एक स्थायी रेलवे साइडिंग विकसित करने का प्रस्ताव है। | 130.00 | 1.00 | 1.00 | मंगलौर में 4 एमटीपीवाई लौह अयस्क की प्राप्ति को हैंडल करना। | आवश्यक सांविधिक मंजूरियों सहित नया कार्यक्रम बाद में निर्धारित किया जाएगा। | | -- | -- | कॉलम (8) का अवलोकन करें । | मैसर्स केआरएल ने प्राप्त डीपीआर प्रस्तुत कर दी है । सुरक्षा कारणों के संदर्भ में डायमण्ड क्रार्सिंग से बचने के लिए केआरएल ने पूर्व प्रस्तावित रूट को पुनर रेखांकित किया है जिससे केआईएडीबी भूमि की स्वेपिंग और निजी भूमि की खरीद आवश्यक हो गई है कम्पनी उक्त भूमि को निजी पार्टियों से अधिग्रहण करने की सम्भावना का पता लगा रही है । निदेशक मण्डल के समक्ष इस प्रस्ताव को विचार के लिए रखा गया । तथापि बोर्ड ने कुछ स्पटीकरण मांगे है जिन्हे बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है । |
| (ii) | रेल द्वारा लौह अयस्क की प्राप्ति के लिए भारी माल संभाल की सुविधाओं का निर्माण | चूंकि अधिकांश कच्चे माल का परिवहन रेल के जरिए किया जाता है। केआईओसीएल को अपने पैलेट प्लांट तथा ब्लास्ट फर्नेस यूनिट के लिए लौह अयस्क का प्रेषण प्राप्त करने के लिए भारी माल संभाल सुविधाओं का निर्माण करने का प्रस्ताव है। | 173.00 | 1.00 | -- | पैलेटों के उत्पादन के लिए 4 एमटीपीवाई लौह अयस्क की सप्लाई | आवश्यक सांविधिक मंजूरियों सहित नया कार्यक्रम बाद में निर्धारित किया जाएगा। | | -- | -- | | |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| (iii) | डीआईएसपी संयंत्र के लिए आरआईएनएल के साथ संयुक्त उद्यम के रूप में कर्नाटक राज्य में एक एकीकृत इस्पात संयंत्र की स्थापना के लिए केआईओसीएल की साम्या | संयुक्त उद्यम में एक एकीकृत इस्पात संयंत्र की स्थापना करने और एक डीआईएसपी आदि की स्थापना करने का प्रस्ताव है । | 480.00 | 30.00 | -- | डीआईएसपी का 1,00,000 टीपीए का उत्पादन | आवश्यक सांविधिक मंजूरी की प्राप्ति के बाद नई समय रेखा को अंतिम रूप दिया जाएगा । | | -- | -- | कॉलम (8) का अवलोकन करें । | ब्लास्ट फर्नेस यूनिट में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटिग्रेशन के तहत डीआईएसपी संयंत्र, विद्युत संयंत्र और आक्सीजन संयंत्र स्थापित करने में निवेश करने के संबन्ध में मैसर्स केआईओसीएल तथा मैसर्स आरआईएनएल के बीच एक संयुक्त उद्यम बनाने के लिए बोर्ड ने सैद्धांतिक रूप से मंजूरी प्रदान कर दी है । भारत में डक्टाइल पाईप के बाजार मूल्यांकन अध्ययन पर रिपोर्ट को अद्यतन करने के लिए कॉन्ट्रेक्ट दे दिया गया है । इस दिशा में 14 नवम्बर, 2010 को माननीय इस्पात मंत्री श्री वीरभद्र सिंह ने मैसर्स आरआईएनएल के साथ कर्नाटक राज्य में खनन एंव मूल्य वर्द्धन परियोजना की स्थापना के लिए एक संयुक्त प्रचालन विंग का उद्घाटन किया । |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| (iv) | कुद्रेमुख पर इको-टाउन का विकास | कुद्रेमुख में इको-टूरिज्म विकसित करने का उद्देश्य सामुदायिक आधारित और वाणिज्यिक उन्मुख इको-टूरिस्ट परियोजना विकसित करना है । | 437.00 | -- | -- | इको-टूरिज्म का विकास | आवश्यक सांविधिक मंजूरी की प्राप्ति के बाद नई समय रेखा को अंतिम रूप दिया जाएगा | | -- | -- | कॉलम (8) का अवलोकन करें | कर्नाटक सरकार के साथ हाल ही में हुई बैठकों में उन्होने केआईओसीएल के साथ संयुक्त उद्यम में कुद्रेमुख में इकोटूरिज्म सुविधा स्थापित करने को सैद्धान्तिक अनुमति प्रदान कर दी है । |
| (v) | कोक ओवन प्लांट | एक कोक ओवन संयंत्र की स्थापना करना। इससे कम मूल्य पर कोक की उपलब्धता में सुधार होगा। | 440.00 | 1.00 | -- | कच्चा माल लागत में कमी करना। | आवश्यक मंजूरियाँ प्राप्त करने से 24 माह। | | -- | -- | कॉलम (8) का अवलोकन करें | धमन भट्टी में प्रयोग किए जा रहे कोक की अधिक लागत को ध्यान में रखते हुए कंपनी का लक्ष्य मंगलौर में एक कोक ओवन संयंत्र स्थापित करना है। इससे कच्चे माल की लागत में काफी कमी आएगी। |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान I | बजट अनुमान I | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 4. | एनडीएमसी लिमिटेड. | | | | | | | | | | | |
| (i) | बैलाडिला निक्षेप-11बी | लौह अयस्क का उत्पादन बढ़ाना। | 607.18 | 200.00 | 55.00 | 7 एमटीपीए क्षमता | अक्टूबर 2009 | जून 2011 | 31.30 | 245.42 | -- | कार्य प्रगति पर है । पैकेज - ।।। के प्रमुख कार्यों को पूरा कर लिया गया है । कार्य का एक बड़ा हिस्सा पूरा हो गया है और पैकेज । तथा ।। का लगभग 75% कार्य पूरा हो गया है । 5बी पैकेज के लिए भी आर्डर दे दिए है । माओवादियों द्वारा लागातार बंद के आवाहन के कारण साइट की प्रगति पर प्रभाव पड़ रहा है । कार्य को सुविधा प्रदान करने हेतु सुरक्षा में सुधार के लिए कार्यवाई की गई है । निर्माण कार्य को जून 2011 के अंत तक पूरा करने के लिए सभी प्रयास किए जा रहे है । |
| (ii) | कुमारस्वामी लौह अयस्क परियोजना | लौह अयस्क का उत्पादन बढ़ाना। | 296.03 | 50.00 | 40.00 | चरण-1 3 एमटीपीए क्षमता | दिसम्बर 2009 | सितम्बर 2012 | 2.28 | 5.74 | -- | सभी सांविधिक मंजूरियां प्राप्त हो गई हैं।संपूर्ण परियोजना को 6 पैकेजों में विभाजित किया गया है। मै0 मेकॉन को इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट कंस्ट्रक्शन मैनेजमेंट (ईपीसीएम) परामर्शदाता के रूप में नियुक्त किया गया है। पैकेज-1 के लिए कार्य प्रदान कर दिया गया है । पैकेज-2 के लिए प्राप्त प्रस्तावों की छटनी को अंतिम रूप दिया जा रहा है। पैकेज-3 के लिए आर्डर दे दिये गये है । एप्रोच सड़क और सेवा केन्द्र के पैकेजों के लिए निविदा दस्तावेज अनुमोदन के लिए प्रक्रियाधीन है ।<br>01.11.2010 को प्राप्त 16 करोड़ रू0 की इनवाइस भुगतान के लिए प्रक्रियाधीन है । |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 5. | **मॉयल लिमिटेड** | | | | | | | | | | | |
| (i) | फैरो मैंगनीज/सिलिका मैंगनीज संयंत्र के लिए संयुक्त उद्यम | सेल के साथ संयुक्त उद्यम के रूप में इस परियोजना को भिलाई में स्थापित किया जाएगा। | 391.00 | 40.00 | 20.00 | सेल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यह परियोजना 31000 एमटी फैरो मैंगनीज तथा 75000 एमटी सिलिको मैंगनीज का उत्पादन करेगी। | जून 2012 के अंत तक परियोजना को पूरा करना निर्धारित किया गया है । | परियोजना के निर्धारित समय पर पूरा आशा है । | 2.00 | 2.10 | -- | परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहित जा चुकी है तथा उपस्कर प्राप्ति के लिए निविदा प्रक्रियाधीन है । |
| (ii) | फैरो मैंगनीज/सिलिका मैंगनीज संयंत्र के लिए संयुक्त उद्यम | राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के साथ संयुक्त उद्यम के रूप में इस परियोजना को बोबिली में स्थापित किया जाएगा। | 217.00 | 15.00 | 5.00 | सेल की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यह परियोजना 31000 एमटी फैरो मैंगनीज तथा 75000 एमटी सिलिको मैंगनीज का उत्पादन करेगी। | जून 2012 के अंत तक परियोजना को पूरा करना निर्धारित किया गया है । | परियोजना के निर्धारित समय पर पूरा होने की आशा है । | 0.00 | 0.10 | -- | परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहित जा चुकी है तथा उपस्कर प्राप्ति के लिए निविदा प्रक्रियाधीन है । |

(करोड़ रू0)

| सं | पीएसयू का नाम तथा योजना/ कार्यक्रम | लक्ष्य /निष्कर्ष | अनुमानित/ मंजूर लागत | अनुमोदित परिव्यय 2010-11 | | मात्रात्मक सुपुर्दगीयोग्य/ प्रक्षेपित परिणाम | प्रक्षेपित समय-सीमा | | वास्तविक व्यय | | प्रक्षेपित उत्पादन (कॉलम 7) के संदर्भ में उपलब्धियां | टिप्पणियां /जोखिम घटक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | बजट अनुमान | बजट अनुमान | | मूल | अब प्रत्याशित | अप्रैल - दिसंबर 10 के लिए | दिसंबर 10 तक संचित | | |
| 6. | **हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड** | | | | | | | | | | | |
| (i) | वीआरएस के लिए आवधिक ऋण पर ब्याज इमदाद | वीआरएस के जरिए जनशक्ति को युक्तिसंगत बनाना। | -- | 48.69 | 48.69 | जनशक्ति को कम करके 776 करना। | 2010-11 के अंत तक | -- | 32.33 | 35.13 | 01.01.2011 तक जनशक्ति घटकर 840 हो गई है । | यह एक योजना नहीं है बल्कि वीआरएस के क्रियान्वयन हेतु एचएससीएल के लिए ब्याज सब्सिडी के रूप में बजटीय सहायता है । |
| ख. | **इस्पात मंत्रालय की योजना** | | | | | | | | | | | |
| (i) | लोहा एवं इस्पात क्षेत्र में आर एंड डी में सुधार करने के लिए योजना। | पर्यावरण के अनुकूल उपायों से गुणवत्ता वाले इस्पात का लागत प्रभावी उत्पादन हेतु इनोवेटिव/पाथ ब्रेकिंग एवं उपयुक्त प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए आर एंड डी सुविधाओं में सुधार तथा इन्हें तीव्र करन के लिए एक नई योजना/तंत्र बनाना। | 118.00 | 35.00 | 29.00 | (i) निम्न ग्रेड लौह अयस्क /स्लिम्स का प्रयोग<br>(ii) लौह निर्माण में उच्च ऐश कोकिंग / नॉन कोकिंग कोल का प्रयोग<br>(iii) सिन्टर प्लान्ट उत्पादकता में सुधार<br>(iv) डायरेक्ट रिड्यूज आयरन (डीआरआई) का प्रयोग करने के लिए आईएफ प्रक्रिया के जरिये निम्न फोस स्टील का निर्माण<br>(v) लौह निर्माण के वैकल्पिक / अनुपूरक रूटों का विकास<br>(vi) लौह तथा इस्पात के निर्माण में कार्बनडाईआक्साईड के उत्सर्जन में कमी । | मार्च 2013 | मार्च 2013 | 20.72 | 24.85 | परियोजना हाल ही में शुरू हुई है । | व्यय वित्त समिति ने 3 प्रमुख क्षेत्र अभिज्ञात किए हैं जिनके तहत इस योजना को बढ़ावा दिया जाएगा। विशेषज्ञों के एक पैनल के परामर्श से परियोजना अनुमोदन एवं प्रबोधन समिति (पीएएमसी) के विचार हेतु 9 अनुसंधान एवं विकास प्रस्ताव छांटे गए हैं। पीएएमसी ने 8 आर एण्ड डी परियोजनाओं का अनुमोदन कर दिया है । परियोजनाओं की कुल लागत 143 करोड़ रू0 है जिसमें से 111.00 करोड़ रू0 सरकार प्रदान करेगी । |

# अध्याय-V

## वित्तीय समीक्षा

वर्ष 2011-12 की मांग संख्या 92 को बजट सत्र के दौरान इस्पात मंत्रालय की ओर से ससंद में प्रस्तुत किया जाएगा । इस मांग में इस्पात मंत्रालय और इसके संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के लिए गैर योजना व्यय और इनके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी उपक्रमों का योजना एवं गैर योजना परिव्यय शामिल हैं।

### 1. वर्ष 2011-12 में निधि की कुल आवश्यकता

1.1 बजट अनुमान 2011-12 में मांग संख्या 92 में शामिल निधि की कुल आवश्यकता को निम्न तालिका में सक्षिप्त रूप से दिया गया है :-

*(करोड़ रूपए)*

| 2011-2012 *के लिए मांग संख्या* 92 | *बजट अनुमान* 2011-12 | | |
|---|---|---|---|
| | *योजना* | *गैर-योजना* | *योग* |
| *राजस्व खंड* | 39.00 | 77.71 | 116.71 |
| *पूंजी खंड* | 1.00 | 0.00 | 1.00 |
| *कुल (सकल)* | 40.00 | 77.71# | 117.71 |

# *गारंटी शुल्क को मांफ करने से संबंधित लेखा समायोजनों के लिए 6.95 करोड़ रूपए का प्रावधान शामिल है।*

### 2. वास्तविक व्यय: वर्ष 2008-09 से 2010-11 (दिसम्बर, 2010 तक)

2.1 संबंधित वर्षों के बजट अनुमान और संशोधित अनुमान की तुलना में पूर्व तीन वर्षो के दौरान मंत्रालय के अनुदान के अन्तर्गत वास्तविक योजना और गैर योजना व्यय (सकल) का सार नीचे दिया गया है :-

(करोड़ रूपए)

| वर्ष | बजट अनुमान | | | संशोधित अनुमान | | | वास्तविक खर्च | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | गैर-योजना | योजना | योग | गैर-योजना | योजना | योग | गैर-योजना | योजना | योग |
| 2010-11 | 78.92 | 36.00 | 114.92 | 80.24 | 30.00 | 110.24 | 58.27 | 20.72 | 78.99# |
| 2009-10 | 89.01 | 34.00 | 123.01 | 811.19 | 16.01 | 827.20 | 803.90[1] | 7.14 | 811.04 |
| 2008-09 | 85.52 | 34.00 | 119.52 | 748.65 | 26.00 | 774.65 | 740.82[2] | 0.00 | 740.82 |

# दिसंबर, 2010 तक के व्यय

(1) इसमें शामिल हैं (i) एचएससीएल और मेकॉन के संबंध में गारंटी शुल्क माफ किए जाने हेतु 7.65 करोड़ रूपए का लेखा समायोजन (ii) बर्ड ग्रुप की कंपनियों की अनुमोदित वित्तीय पुनर्संरचना के अनुसार इन कंपनियों के संबंध में ऋण (8.06 करोड़ रूपए) को बट्टे खाते डालने और ब्याज (720.63 करोड़ रूपए) को माफ करने के लिए 728.69 करोड़ रूपए का लेखा समायोजन।

(2) इसमें शामिल है (i) 401.50 करोड़ रू0 का लेखा समायोजन अर्थात बी आर एल का सेल के साथ विलय के पश्चात कम्पनी की अनुमोदित पुनर्संरचना के अनुसार बी आर एल के संबंध में गैर योजना ऋणों (175.46 करोड़ रू0) को समाप्त करने तथा इक्विटी (226.04 करोड़ रू0) अपलिखित करने हेतु लेखांकन समायोजन करने के लिए (ii) 260.04 करोड़ रू0 का लेखा समायोजन - एन एम डी सी लि0 द्वारा मई, 2008 में जारी बोनस शेयर के लिए। (चूंकि यह खर्च इतनी ही राशि के पूंजीगत प्राप्तियों के बराबर था इसलिये नकद खर्च नहीं हुआ है)।

## 3. गैर योजना व्यय

3.1 वर्ष 2010-11 (बजट अनुमान और संशोधित अनुमान) में सचिवालय, विशेष, पीएओ (इस्पात) विकास आयुक्त, लोहा एवं इस्पात (डी सी आई एंड एस) कोलकाता समेत इस मंत्रालय अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों का गैर योजना व्यय तथा वर्ष 2011-12 (बजट अनुमान) में निधि की आवश्यकताओं का ब्यौरा निम्न तालिका में दिया गया है :-

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मुख्य शीर्ष एवं व्यय की मदें | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2010-11 की तुलना में संशोधित अनुमान में % बढ़ोतरी | बजट अनुमान 2011-12 | बजट अनुमान 2010-11 की तुलना में % बढ़ोतरी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| I. | मुख्य शीर्ष - 3451 | | | | | |
| 1. | **सचिवालय - आर्थिक सेवाएं** | 18.05 | 19.49 | 7.98% | 20.37 | 12.85% |
| II. | मुख्य शीर्ष - 2852 | | | | | |
| 2. | **विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात, कोलकाता** | 0.70 | 0.58 | -17.14% | 0.52 | -25.71% |
| 3. | **प्रतिष्ठित धातुकर्मियों को पुरस्कार** | 0.14 | 0.14 | 0.00% | 0.14 | 0.00% |
| 4. | **ब्याज इमदाद:** | | | | | |
| (i) | **वीआरएस के कार्यान्वयन के लिए के लिए बैंकों से जुटाए गए ऋणों पर ब्याज के भुगतान हेतु हिंदुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लि. को इमदाद** | 48.69 | 48.69 | 0.00% | 46.90 | -3.68% |
| (ii) | **वीआरएस के कार्यान्वसन के लिए के लिए बैंकों से जुटाए गए ऋणों पर ब्याज के भुगतान हेतु मेकॉन लि. को इमदाद** | 4.04 | 4.04 | 0.00% | 2.83 | -29.95% |
| 5. | **गारंटी शुल्क माफ करना (गैर-नकद संव्यवहार)** | | | | | |
| (i) | **एचएससीएल - नकद साख (सी सी) सीमा, बैंक गारंटी (बीजी) और वीआरएस ऋणों के लिए सरकारी गारंटी के संबंध में गारंटी शुल्क माफ करना।** | 6.10 | 6.10 | 0.00% | 6.10 | 0.00% |
| (ii) | **मेकॉन लिमिटेड - वीआरएस ऋणों/बाँडों के लिए सरकारी गारंटी के संबंध में गारंटी शुल्क माफ करना।** | 1.20 | 1.20 | 0.00% | 0.85 | -29.17% |
| | **धटाएं- निवल प्राप्तियां** [5(i) से (ii)] | -7.30 | -7.30 | - | -6.95 | - |
| | **योग: गैर-योजना व्यय (प्राप्तियों का निवल)** | **71.62** | **72.94** | **1.84%** | **70.76** | **-1.20%** |
| | **योग: गैर-योजना व्यय (सकल)** | **78.92** | **80.24** | **1.67%** | **77.71** | **-1.53%** |

**#** वित्त मंत्रालय की सलाह के अनुसार जिन मामलों में नकद लेन-देन नहीं हुआ है उनमें प्रावधान निवल होंगे।

3.2 संशोधित अनुमान 2010-11 में मंत्रालय के गैर योजना प्रावधान बजट अनुमान 2010-11 के गैर योजना से अधिक है क्योंकि वह वेतन के लिए अतिरिक्त प्रावधान की आवश्यकता थी और इसे प्लान साइड में बचत से पुनर्विनियोजित किया गया था ।

3.3 78.92 करोड़ रू0 के बजट अनुमान 2010-11 गैर योजना की तुलना में बजट अनुमान 2011-12 गैर योजना 77.71 करोड़ रू0 है । बजट अनुमान 2010-11 की तुलना में बजट अनुमान 2011-12 में कोई वृद्वि नहीं हुई है ।

## 4. योजना व्यय

4.1 बजट अनुमान 2011-12 में निधि की कुल योजना आवश्यकता 40.00 करोड़ रूपये है जो निम्न के लिए है:-

(i) 11वीं योजना (2007-12) के दौरान मंत्रालय द्वारा लोहा और इस्पात क्षेत्रों में आर एंड डी को प्रोत्साहित करने हेतु कार्यान्वित की जा रही योजना के निधियन के लिए राजस्व खंड के तहत 39.00 करोड़ रू0 का प्रावधान किया गया है और :-

(ii) एच एस सी एल जो इस्पात मंत्रालय के अन्तर्गत वित्तीय रूप से कमजोर उपक्रम है, को बजटीय सहायता देने के लिए पूंजी खंड के तहत 1.00 करोड़ रू0 का प्रावधान किया गया है। पीएसयू की पुनर्संरचना का प्रस्ताव विचाराधीन है।

4.2 बजट अनुमान 2010-11 में 36 करोड़ रू0 की कुल योजना बजटीय सहायता को संशोधित अनुमान 2010-11 में कम करके 30.00 करोड़ रू0 कर दिया था । बजट अनुमान 2011-12 में 40 करोड़ रू0 की कुल योजना बजटीय सहायता का प्रावधान किया गया है। 2010-11 से 2011-12 तक योजना प्रावधान का ब्यौरा निम्न तालिका में दिया गया है:-

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | संगठन/उपक्रम का नाम | योजना | योजना बजटीय सहायता (बजट अनुमान) 2010-11 | योजना बजटीय सहायता (संशोधित अनुमान) 2010-11 | योजना बजटीय सहायता (बजट अनुमान) 2011-12 | बजट अनुमान 2010-11 की तुलना में बजट अनुमान 2011-12 में % बढ़ोतरी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | एचएससीएल | बड़े पैमाने पर मरम्मत कार्य निर्माण उपस्कर एवं मशीनों की अधिप्राप्ति के लिए योजना ऋण | 1.00* | 1.00* | 1.00 | 0.00% |
| 2. | इस्पात मंत्रालय | लोहा एवं इस्पात क्षेत्र में आर एंड डी की प्रोत्साहन स्कीम हेतु अनुदान सहायता | 35.00 | 29.00 | 39.00 | 11.42% |
| | **योग** | | **36.00** | **30.00** | **40.00** | **11.11%** |

*सरकार के विचाराधीन एचएससीएल की पुनर्संरचना के लिए सांकेतिक प्रावधान

## 5. आर एंड डी स्कीम का सार

5.1 11वीं योजना 2007-12 के लिए इस्पात उद्योग के कार्यदल की सिफारिशों के आधार पर 11वीं पंचवर्षीय योजना में 118 करोड़ रू0 के परिव्यय के साथ "लोहा और इस्पात क्षेत्र में आर एंड डी के प्रोत्साहन हेतु योजना" नामक एक नई योजना को शामिल किया गया था । इस योजना का उद्देश्य भारतीय लौह अयस्क चूर्ण और अकोककर कोयले का उपयोग करने वाली प्रेरक/पाथ ब्रेकिंग टेक्नालॉजी को विकसित करने में आर एंड डी कार्यों को प्रोत्साहित करना और इनमें तेजी लाना, इंडक्शन फर्नेस रूट के जरिए उत्पादित इस्पात की गुणवत्ता में सुधार करना और लौह अयस्क, कोयला आदि जैसी कच्ची सामग्री या सज्जीकरण और सम्मिक्षण (जैसे पैलेराइजेशन) करना है । इस योजना को वित्तीय वर्ष 2009-10 से (दिनांक 01.04.2009 से) कार्यान्वित करने के लिए दिनांक 23.01.2009 को अनुमोदन प्रदान किया गया था।

5.2 जनवरी, 2011 के अंत तक 8 आर एंड डी परियोजना प्रस्तावों को अनुमोदित किया गया है। इन परियोजनाओं की कार्यावधि 2 से 3 वर्ष है । वर्ष वार निधि आबंटन और इस योजना के तहत रिलीज की गई राशि का विवरण नीचे दिया है:-

(करोड़ रूपए)

| अवधि | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक | अभियुक्तियां |
|---|---|---|---|---|
| 2009-10 | 26.00 | 13.00 | 4.14 | यह धनराशि अनुदान सहायता की प्रथम किस्त के रूप में जारी की गई थी। |
| 2010-11 | 35.00 | 29.00 | 20.71 | दिसंबर, 2010 तक 20.72 करोड़ रूपए जारी किए गए। |
| 2011-12 | 39.00 | | | आठ अनुमोदित परियोजनाओं और अनुमोदन हेतु नई परियोजनाओं पर खर्च किया जाना है। |

## 6. वर्ष 2011-12 (बजट अनुमान) के वार्षिक योजना परिव्यय

6.1 इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के वार्षिक योजना वर्ष 2011-12 प्रस्तावों और योजना आयोग के साथ हुए विचार-विमर्श के आधार पर तथा 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) को समग्र रूप से ध्यान में रखते हुए योजना आयोग ने इस्पात मंत्रालय के लिए वर्ष 2011-12 (बजट अनुमान) हेतु निम्नलिखित परिव्यय को अनुमोदन प्रदान किया है:-

(करोड़ रूपए)

| | | वास्तविक 2009-10 | बजट अनुमान 2010-11 | संशोधित अनुमान 2010-11 | बजट अनुमान 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|
| क) | सकल बजटीय सहायता | 7.14 | 36.00 | 30.00 | 40.00 |
| ख) | आंतरिक एवं अतिरिक्त बजटीय संसाधन (आई एंड ईबीआर) | 13315.68 | 17163.82 | 16129.25 | 21062.71 |
| | योग | **13322.82** | **17199.82** | **16159.25** | **21102.71** |

**6.2 वार्षिक योजना 2010-11 (बजट अनुमान एवं संशोधित अनुमान) और वार्षिक योजना 2011-12 (बजट अनुमान) हेतु योजना परिव्यय का पीएसयू-वार ब्यौरा नीचे तालिका में दिया गया है:-**

(करोड़ रूपए)

| | पीएसयूज/ संगठन का नाम | बजट अनुमान 2010-11 | | | संशोधित अनुमान 2010-11 | | | बजट अनुमान 2011-12 | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | आईई बीआर | बीएस | कुल | आईईबीआर | बी एस | कुल | आईईबीआर | बी एस | परिव्यय |
| **क.** | **पीएसयूज की स्कीमें** | | | | | | | | | |
| 1 | सेल | 12254.00 | 0.00 | 12254.00 | 12254.00 | 0.00 | 12254.00 | 14337.00 | 0.00 | 14337.00 |
| 2 | आरआईएनएल | 4049.00 | 0.00 | 4049.00 | 2895.00 | 0.00 | 2895.00 | 3046.00 | 0.00 | 3046.00 |
| 3 | एचएससीएल | 0.00 | 1.00 | 1.00 | 0.00 | 1.00 | 1.00 | 0.00 | 1.00 | 1.00 |
| 4 | मेकॉन | 2.00 | 0.00 | 2.00 | 2.27 | 0.00 | 2.27 | 2.00 | 0.00 | 2.00 |
| 5 | एमएसटीसी | 5.00 | 0.00 | 5.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 15.00 | 0.00 | 15.00 |
| 6 | एफएसएनएल | 12.00 | 0.00 | 12.00 | 12.00 | 0.00 | 12.00 | 12.00 | 0.00 | 12.00 |
| 7 | एनएमडीसी लि. | 611.00 | 0.00 | 611.00 | 720.00 | 0.00 | 720.00 | 3309.00 | 0.00 | 3309.00 |
| 8 | केआईओसीएल लि. | 75.00 | 0.00 | 75.00 | 85.00 | 0.00 | 85.00 | 98.00 | 0.00 | 98.00 |
| 9 | मॉयल लिमिटेड | 115.82 | 0.00 | 115.82 | 83.98 | 0.00 | 83.98 | 107.71 | 0.00 | 107.71 |
| 10 | बर्ड ग्रुप ऑफ कंपनी | 40.00 | 0.00 | 40.00 | 77.00 | 0.00 | 77.00 | 136.00 | 0.00 | 136.00 |
| 11 | लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को बढावा देने की योजना | 0.00 | 35.00 | 35.00 | 0.00 | 29.00 | 29.00 | 0.00 | 39.00 | 39.00 |
| | योग-क | 17163.82 | 36.00 | 17199.82 | 16129.25 | 30.00 | 16159.25 | **21062.71** | **40.00** | **21102.71** |
| | **ख. इस्पात मंत्रालय की परियोजनाएं** | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| | योग - ख | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| | सकल योग-क + ख | 17163.82 | 36.00 | 17199.82 | 16129.25 | 30.00 | 16159.25 | **21062.71** | **40.00** | **21102.71** |

नोट: इस्पात मंत्रालय को सिक्किम समेत पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए अपने बजट में से 10 प्रतिशत निर्धारित करने से छूट प्रदान की गई है।

6.3 बजट अनुमान 2011-12 के लिए इस्पात मंत्रालय का योजना परिव्यय 21102.71 करोड़ रूपए है जिसका वित्त पोषण 40 करोड़ रूपए की बजटीय सहायता और 21062.71 करोड़ रूपए के आईईबीआर से किया जाएगा। 40 करोड़ रूपए की बजटीय सहायता में से 1 करोड़ रूपए का प्रावधान एचएससीएल के लिए किया गया है और 39 करोड़ रूपए पर्यावरण के अनुकूल गुणवत्तापरक इस्पात के किफायती उत्पादन हेतु अभिनव/पाथ ब्रेकिंग और उपयुक्त प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए लोहा एवं इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहन देने की स्कीम के लिए रखे गए हैं। सभी सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों का कुल आईईबीआर परिव्यय 21062.71 करोड़ रूपए है जिसमें सेल (14337.00 करोड़ रूपए), आरआईएनएल (3046.00 करोड़ रूपए) और एनएमडीसी लिमिटेड (3309.00 करोड़ रूपए) का परिव्यय तथा शेष केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों (370.71 करोड़ रूपए) का परिव्यय शामिल है। सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम-वार स्थिति नीचे दी गई है:-

6.4 14337.00 करोड़ रूपए की धनराशि स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) को प्रदान की गई है। सेल की विभिन्न स्कीमों के लिए उपलब्ध करवाये गये परिव्यय का विस्तृत ब्यौरा निम्नानुसार है:-

(i) **भिलाई इस्पात संयंत्र** के लिए 6042.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान किया गया है। कुल परिव्यय का अधिकांश भाग (5730.00 करोड़ रूपए) संयंत्र के आधुनिकीकरण और

विस्तार के लिए है। शेष परिव्यय 700 टीपीडी ऑक्सीजन संयंत्र, कोक ओवन बैटरी (सीओबी) सं0 6 का पुनर्निर्माण जैसी योजनाओं तथा अन्य चल रही योजनाओं एवं नई योजनाओं के लिए है।

(ii) **दुर्गापुर इस्पात संयंत्र** के लिए 950.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान किया गया है जिसमें से संयंत्र के विस्तार के लिए 775 करोड़ रूपए निर्धारित किए गए हैं। इस परिव्यय में शामिल अन्य स्कीमों में ईआरपी का क्रियान्वयन, सुविधाओं सहित ब्लूम कास्टर, बीएफ 3 और 4 में कोल डस्ट इंजेक्शन सम्मिलित है तथा श्रीनगर और कांगड़ा इस्पात प्रक्रमण इकाई से संबंधित व्यय भी इस परिव्यय में शामिल हैं।

(iii) **राउरकेला इस्पात संयंत्र** के लिए 2950.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान किया गया है। परिव्यय में शामिल प्रमुख परियोजना में आरएसपी का विस्तार (2619 करोड़ रूपए) है। अन्य परियोजनाओं में सीओबी 4 का पुनर्निर्माण, 700 टीपीडी ऑक्सीजन संयंत्र की स्थापना, कोक ओवन गैस होल्डर की स्थापना, एसएमएस-II के बीओएफ कनवर्टर की साइमल्टेनियस ब्लोविंग तथा अन्य चल रही एवं नई स्कीमें शामिल हैं।

(iv) **बोकारो इस्पात संयंत्र** के लिए 1700 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान किया गया है जिसमें बोकारो इस्पात संयंत्र के विस्तार (1309 करोड़ रूपए), कोक ओवन बैटरी 1 और 2 का पुनर्निर्माण, टर्बो ब्लोअर स्टेशन में टीबी की स्थापना, बीएफ-2 का उन्नयन, बेतिया में स्टील प्रोसेसिंग यूनिट तथा चल रही एवं अन्य नई योजनाओं के व्यय के लिए है।

(v) **इस्को स्टील प्लांट** के लिए 2100.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान किया गया है जिसमें आईएसपी का विस्तार (2069.00 करोड़ रूपए), सीओबी - 10 का पुनर्निर्माण और शेष राशि चल रही अन्य योजनाओं तथा नई योजनाओं के लिए है।

(vi) **मिश्र इस्पात संयंत्र** के लिए 25.00 करोड़ रू0 का परिव्यय कई पूरी हो चुकी योजनाओं तथा 20 करोड़ रूपए से कम लागत की चल रही योजनाओं के लिए है।

(vii) **सेलम इस्पात संयंत्र** के लिए 100.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान किया गया है। परिव्यय का अधिकांश हिस्सा एसएसपी के विस्तार (90 करोड़ रूपए) के लिए है। शेष राशि कम लागत की विविध योजनाओं के लिए है।

(viii) शेष 470.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान विश्वैश्वरया आयरन एंड स्टील लि0 (10 करोड़ रू0), सेल की केन्द्रीय इकाईयों (100 करोड़ रू0), कच्चा माल प्रभाग (350 करोड़ रूपए), महाराष्ट्र इलेक्ट्रोस्मैल्ट लिमिटेड (10 करोड़ रूपए) विभिन्न चल रही और नई स्कीमों/परियोजनाओं तथा अनुसंधान कार्य के लिए किया गया है।

6.5 **वर्ष 2011-12 में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड** के लिए 3046.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान किया गया है। इस परिव्यय में से अधिकांश हिस्सा, जिसकी धनराशि 1600.00 करोड़ रू0 है, को राष्ट्रीय इस्पात निगम लि0 की उत्पादन क्षमता को बढ़ा कर 6.5 मिलियन टन हॉट मेटल करने के लिए निर्धारित किया गया है। शेष परिव्यय एएमआर योजनाओं, कोक ओवन बैटरी सं0 4 (चरण-1 तथा चरण-2), एयर सैपरेशन प्लांट, पुल्वराइज्ड कोल इंजेक्शन, लौह अयस्क खानों और कोकिंग कोल खानों के अधिग्रहण, लौह अयस्क भंडारण के लिए सुविधाएं, 67.5 मेगावाट की टीजी-5 पावर इवेक्यूऐशन सिस्टम,

बीएफ-1 कैटगिरी मरम्मत, थर्ड कन्वर्टर एवं चौथा कास्टर, 20.6 एमडब्ल्यू वास्टर हीट रिकवरी प्रोजेक्ट आदि के लिए है।

6.6 **एनएमडीसी लिमिटेड** के लिए 3309.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान किया गया है इस परिव्यय में से 2615.00 करोड़ रूपए का प्रमुख हिस्सा छत्तीसगढ़ में 3 मिलियन टन के इस्पात संयंत्र हेतु रखा गया है। शेष परिव्यय का प्रावधान बेलाडिला निक्षेप-11 बी, कुमारस्वामी लौह अयस्क परियोजना, दौणिमलै में पैलेटाइजेशन संयंत्र, एएमआर/टाउनशिप तथा अनुसंधान एवं विकास योजनाओं आदि जैसी योजनाओं/परियोजनाओं के लिए किया गया है।

6.7 **केआईओसीएल लिमिटेड** के लिए 98.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान किया गया है जिसमें एएमआर योजनाओं के लिए 43 करोड़ रूपए एवं कोक ओवन प्लांट हेतु 25 करोड़ रूपए हैं। शेष परिव्यय विभिन्न चल रही योजनाओं तथा अनुसंधान एवं विकास/व्यवहार्यता अध्ययन के लिए है।

6.8 **मैंगनीज ओर इंडिया लिमिटेड** के लिए 107.71 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान फैरो मैंगनीज/सिलिको मैंगनीज संयंत्र (25 करोड़ रूपए) के लिए सेल के साथ संयुक्त उद्यम में निवेश करने, बोबल्लि में फैरो मैंगनीज प्लांट हेतु आरआईएनएल के साथ संयुक्त उद्यम (10 करोड़ रूपए) स्थापित करने, उक्वा खान में वर्टिकल शाफ्ट की सिंकिंग, एएमआर योजनाओं, टाउनशिप, अनुसंधान एवं विकास/व्यवहार्यता अध्ययन आदि के लिए किया गया है।

6.9 **बर्ड ग्रुप कंपनियों** के लिए 136 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान वन रोपण और पट्टा मामलों, खनिज आधारित खोजी कार्यों और एएमआर योजनाओं के लिए किया गया है।

6.10 **मेकॉन लिमिटेड** के लिए 2.00 करोड़ रूपए का परिव्यय विभिन्न स्थानों पर कार्यालय स्थान/अतिथि गृहों के आधुनिकीकरण और विस्तार के लिए है।

6.11 **एमएसटीसी लिमिटेड** के लिए 15.00 करोड़ रूपए का परिव्यय नई स्कीमों को आरंभ करने के लिए है।

6.12 **फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड** के लिए 12.00 करोड़ रू0 के परिव्यय का प्रावधान ए एम आर स्कीमों के लिए किया गया है।

## 7. 11वीं पंचवर्षीय योजना 2007-2012 परिव्यय (अनुमोदित) और वास्तविक खर्च, निर्धारित लक्ष्य

7.1 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007-12), के लिए योजना आयोग ने 45,607.08 करोड़ रूपए का कुल परिव्यय (अर्थात 45,390.08 करोड़ रूपए के आईआरईबीआर और 217.00 करोड़ रूपए की सकल बजटीय सहायता **(जीबीएस))** अनुमोदित किया है। प्रथम 4 वर्षों अर्थात 2007-08 से 2010-11 (दिसंबर, 2010 तक) के दौरान 11वीं योजना के परिव्यय (अनुमोदित) और संचयी व्यय के ब्यौरे नीचे तालिका में दिए गए हैं:-

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | पीएसयू का नाम | 11वीं योजना (अनुमोदित) के लिए परिव्यय (2007-08 से 2011-12) | | | वास्तविक व्यय (2007-08 से 2010-11) (दिसंबर, 2010 तक) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | आईईबीआर | जीबीएस | योग | आईईबीआर | जीबीएस | योग |
| क. | पीएसयू | | | | | | |
| 1 | स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड | 27409.00 | 0.00 | 27409.00 | 26022.09 | 0.00 | 26022.09 |
| 2 | राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड | 9569.18 | 0.00 | 9569.18 | 8628.68 | 0.00 | 8628.68 |
| 3 | स्पंज आयरन इंडिया लिमिटेड* | 25.00 | 0.00 | 25.00 | 4.36 | 0.00 | 4.36 |
| 4 | हिंदुस्तान स्टील वर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड | 0.00 | 35.00 | 35.00 | 0.00 | 3.00 | 3.00 |
| 5 | मेकॉन लिमिटेड | 9.00 | 63.00 | 72.00 | 4.73 | 63.00 | 67.73 |
| 6 | भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड* | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.33 | 7.00 | 10.33 |
| 7 | एमएसटीसी लिमिटेड | 30.00 | 0.00 | 30.00 | 14.50 | 0.00 | 14.50 |
| 8 | फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड | 60.00 | 0.00 | 60.00 | 43.45 | 0.00 | 43.45 |
| 9 | एनएमडीसी लिमिटेड | 7147.00 | 0.00 | 7147.00 | 1289.81 | 0.00 | 1289.81 |
| 10 | केआईओसीएल लिमिटेड | 650.00 | 0.00 | 650.00 | 20.66 | 0.00 | 20.66 |
| 11 | मॉयल लिमिटेड | 342.90 | 0.00 | 342.90 | 196.28 | 0.00 | 196.28 |
| 12 | बर्डग्रुप ऑफ कंपनीज | 148.00 | 1.00 | 149.00 | 93.76 | 0.00 | 93.76 |
| ख. | नई स्कीम | | | | | | |
| 1 | लौह एवं इस्पात क्षेत्र में आर एंड डी के उन्नयन के लिए स्कीम | 0.00 | 118.00 | 118.00 | 0.00 | 24.86 | 24.86 |
| 2 | एसएमई के लिए टीयूएफएस | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 3 | जनशक्ति विकास के संस्थान के लिए स्कीम | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| योग (क+ख) | | 45390.08 | 217.00 | 45607.08 | 36321.65 | 97.86 | 36419.51 |

* बीआरएल और सिल का क्रमश: सेल और एनएमडीसी लिमिटेड के साथ विलय कर दिया गया है ।

## 11वीं योजना के प्रथम 4 वर्षों (2007-08 से 2010-11) का सार

7.2 11वीं योजना के दौरान (दिसंबर, 2010 तक) योजना आयोग द्वारा अनुमोदित कुल परिव्यय और कुल व्यय नीचे दी गई तालिका में वर्ष-वार दर्शाया गया है:-

(करोड़ रूपए)

| वर्ष | बजट अनुमान | | | संशोधित अनुमान | | | वास्तविक व्यय | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | आईईबीआर | जीबीएस | कुल | आईईबीआर | जीबीएस | कुल | आईईबीआर | जीबीएस | कुल |
| 2007-08 | 6137.70 | 66.00 | 6203.70 | 4259.81 | 66.00 | 4325.81 | 3761.03 | 70.00 | 3831.03 |
| 2008-09 | 9509.00 | 34.00 | 9543.00 | 8065.82 | 26.00 | 8091.82 | 8529.33 | 0.00 | 8529.33 |
| 2009-10 | 13722.66 | 34.00 | 13756.66 | 13236.45 | 16.01 | 13252.46 | 13315.68 | 7.14 | 13322.82 |
| 2010-11 (दिसंबर, 2010 तक व्यय) | 17163.82 | 36.00 | 17199.82 | 16129.25 | 30.00 | 16159.29 | 10715.61 | 20.72 | 10736.33 |
| योग | 46533.18 | 170.00 | 46703.18 | 41691.33 | 138.01 | 41829.38 | 36321.65 | 97.86 | 36419.51 |

## 8. 11वीं पंचवर्षीय योजना में सकल बजटीय सहायता परिव्यय का वर्ष-वार विश्लेषण

8.1 11वी पंचवर्षीय योजना (2007-12) के लिए अनुमोदित 217.00 करोड़ रूपए की सकल बजटीय सहायता तथा वर्ष 2007-08, 2008-09, 2009-10 और 2010-11 और (दिसंबर; 10 तक) के दौरान हुए वास्तविक खर्च का पीएसयू/स्कीम-वार ब्यौरे नीचे तालिका में दिए गए हैं:-

(करोड़ रूपए)

| **क्र. सं.** | **योजना का नाम** | **11वीं योजना (2007-12) के लिए आबंटित योजना बजटीय सहायता** | 2007-08 | | 2008-09 | | 2009-10 | | 2010-11 | | **वास्तविक (दिसंबर, 10तक)** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | अनुमोदित | वास्तविक | अनुमोदित | वास्तविक | अनुमोदित | वास्तविक | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | |
| क. | सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की योजनाएं | | | | | | | | | | |
| 1. | एचएससीएल-बड़े पैमाने पर मरम्मत कार्य तथा निर्माण उपस्कर व मशीनों की अधिप्राप्ति | 35.00 | 1.00 | 0.00 | 6.50 | 0.00 | 7.00 | 3.00 | 1.00 | 1.00 | 0.00 |
| 2. | मेकॉन-अधिमान्य शेयर पूंजी हेतु निधि निर्माण | 63.00* | 63.00* | 63.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 3. | बर्डग्रुप-एएमआर स्कीमें | 1.00 | 0.00 | 0.00 | 1.00 | 0.00 | 1.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 4. | भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड-एएमआर स्कीमें | 0.00 | 1.00 | 7.00 | 8.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ख. | मंत्रालय की योजना | | | | | | | | | | |
| 1. | लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के प्रोत्साहन की स्कीम | 118.00 | 1.00 | 0.00 | 18.50 | 0.00 | 26.00 | 4.14 | 35.00 | 29.00 | 20.72 |
| | योग | 217.00 | 66.00 | 70.00 | 34.00 | 0.00 | 34.00 | 7.14 | 36.00 | 30.00 | 20.72 |

* मेकॉन के लिए पुनर्संरचना के तहत प्रदान की गई

# ऋण को इक्विटी में बदलने के लिए सांकेतिक प्रावधान

**8.2 वर्ष 2007-08 के दौरान बजट अनुमान में किए गए 66.00 करोड़ रूपए के आबंटन की तुलना में 70.00 करोड़ रूपए खर्च किए गए थे जिसके निम्न कारण हैं।**

(i) मेकॉन लिमिटेड में अधिमान्य शेयर पूंजी हेतु निधि बनाने के लिए 63.00 करोड़ रूपए खर्च किए गए थे।

(ii) इसके अतिरिक्त बीआरएल की एएमआर स्कीमों के लिए भी 7.00 करोड़ रूपए खर्च किए गए जिसका अनुमोदन वित्त मंत्रालय द्वारा आरई चरण में किया गया था।

(iii) यद्यपि वर्ष 2007-08 में एचएससीएल हेतु 1.00 करोड़ रूपए का सांकेतिक प्रावधान किया गया था फिर भी यह राशि कंपनी को जारी नहीं की जा सकी क्योंकि इस प्रावधान को कंपनी की प्रस्तावित पुनर्संरचना स्कीम जो कि सरकार के विचाराधीन थी, से लिंक किया गया था।

(iv) आर एंड डी स्कीम हेतु किए गए 1.00 करोड़ रूपए के सांकेतिक प्रावधान को भी जारी नहीं किया जा सका।

**8.3 वर्ष 2008-09 के दौरान निम्नलिखित कारणों से कोई व्यय नहीं किया गया था।**

(i) 6.50 करोड़ रूपए का योजना ऋण एचएससीसल को जारी नहीं किया जा सका क्योंकि कंपनी ऋण/ब्याज की अदायगी में डिफाल्टर थी। कंपनी का पुनर्संरचना प्रस्ताव विचाराधीन होने के कारण वित्त मंत्रालय विशेष छूट देने में सहमत नहीं था।

(ii) चूंकि बर्डग्रुप ऑफ कंपनीज (सरकारी प्रबंधन वाली कंपनी) की पुनर्संरचना का प्रस्ताव मंत्रालय में विचाराधीन था इसलिए 1.00 करोड़ रूपए का योजना ऋण इस्तेमाल/जारी नहीं हो सका और इसे सरेंडर कर दिया गया था।

(iii) बीआरएल की एएमआर स्कीम के लिए 8.00 करोड़ रूपए का बजटीय प्रावधान जारी नहीं किया गया था। क्योंकि सरकार द्वारा इसकी वित्तीय पुनर्संरचना और सेल के साथ इसके विलय को दिनांक 24.4.2008 को अनुमोदन दिया गया था।

(iv) 'लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के प्रोत्साहन की स्कीम' के लिए 18.50 करोड़ रूपए के बजटीय प्रावधान को इस्तेमाल नहीं किया जा सका क्योंकि 2008-09 के दौरान स्कीम का क्रियान्वयन नहीं हुआ और वित्त मंत्रालय ने इस स्कीम को वित्तीय वर्ष 2009-10 (1.4.2009 से) से शुरू करने के लिए इस मंत्रालय को सलाह प्रदान की थी।

8.4 वर्ष 2009-10 के दौरान बजट अनुमान में 34.00 करोड़ रूपए के आबंटन की तुलना में 7.14 करोड़ रूपए खर्च किए गए थे, क्योंकि:

(i) एचएससीएल के लिए 7.00 करोड़ रूपए योजना ऋण का आबंटन आरई चरण में घटाकर 3.00 करोड़ रूपए कर दिया गया था और विशेष व्यवस्था के रूप में इसे जारी नहीं किया गया था क्योंकि एचएससीएल द्वारा की गई ऋण संबंधी चूक का वित्त मंत्रालय नें अनुमोदन नहीं किया था।

(ii) आर एंड डी की चार परियोजनाएं अनुमोदित की गई थीं और इन परियोजनाओं के लिए अनुदान सहायता की प्रथम किस्त के रूप में 4.1350 करोड़ रूपए की धनराशि जारी की गई थी।

8.5 वर्ष 2010-11 के दौरान वित्त मंत्रालय ने छत्तीस करोड़ रूपए के बी ई योजना प्रावधान को आर एंड डी स्कीम के तहत खर्चों की गति को ध्यान में रखते हुए इसे आरई चरण में घटाकर 30.00 करोड़ रूपए कर दिया है।

(i) आर एंड डी की चार अतिरिक्त परियोजनाएं अनुमोदित की गई हैं। जनवरी, 2011 तक 20.72 करोड़ रूपए की धनराशि आर एंड डी स्कीम के तहत जारी की गई है।

(ii) एचएससीएल की पुनर्संरचना के कारण एचएससीएल हेतु निर्धारित 1.00 करोड़ रूपए की धनराशि जनवरी, 2011 तक खर्च नहीं की गई है।

## 9. 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) के वर्ष 2009-10 और 1010-11 (दिसंबर, 2010 तक) के दौरान योजना परिव्यय और वास्तविक व्यय

### 9.1 वर्ष 2009-10 के दौरान योजना परिव्यय की तुलना में व्यय

(करोड़ रूपए)

| | पीएसयू/ संगठन का नाम | बजट अनुमान 2009-10 | | | संशोधित अनुमान 2009-10 | | | वास्तविक व्यय | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | आईईबी आर | जीबीएस | कुल | आईईबी आर | जीबीएस | कुल | आईईबी आर | जीबीएस | कुल |
| **क.** | **पीएसयूज की स्कीमें** | | | | | | | | | |
| 1 | सेल | 10356.00 | 0.00 | 10356.00 | 10356.00 | 0.00 | 10356.00 | 10606.00 | 0.00 | 10606.00 |
| 2 | आरआईएनएल | 2437.00 | 0.00 | 2437.00 | 2224.48 | 0.00 | 2224.48 | 2278.20 | 0.00 | 2278.20 |
| 3 | सिल | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 4 | एचएससीएल | 0.00 | 7.00 | 7.00 | 0.00 | 3.00 | 3.00 | 0.00 | 3.00 | 3.00 |
| 5 | मेकॉन | 2.00 | 0.00 | 2.00 | 5.00 | 0.00 | 5.00 | 4.73 | 0.00 | 4.73 |
| 6 | बीआरएल | 8.00 | 0.00 | 8.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 7 | एमएसटीसी | 5.00 | 0.00 | 5.00 | 5.00 | 0.00 | 5.00 | 2.05 | 0.00 | 2.05 |
| 8 | एफएसएनएल | 11.80 | 0.00 | 11.80 | 12.00 | 0.00 | 12.00 | 10.14 | 0.00 | 10.14 |
| 9 | एनएमडीसी लि. | 700.00 | 0.00 | 700.00 | 543.00 | 0.00 | 543.00 | 378.88 | 0.00 | 378.88 |
| 10 | केआईओसीएल लि. | 85.00 | 0.00 | 85.00 | 10.00 | 0.00 | 10.00 | 6.15 | 0.00 | 6.15 |
| 11 | मॉयल | 102.25 | 0.00 | 102.25 | 65.36 | 0.00 | 65.36 | 26.04 | 0.00 | 26.04 |
| 12 | बर्डग्रुप | 15.61 | 1.00 | 16.61 | 15.61 | 0.01# | 15.62 | 3.49 | 0.00 | 3.49 |
| | योग-क | 13722.66 | 8.00 | 13730.66 | 13236.45 | 3.01 | 13239.46 | 13315.68 | 3.00 | 13318.68 |
| **ख.** | **इस्पात मंत्रालय की योजनाएं** | | | | | | | | | |
| | 1. लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को बढावा देने की योजना | 0.00 | 26.00 | 26.00 | 0.00 | 13.00 | 13.00 | 0.00 | 4.14 | 4.14 |
| | योग - ख | 0.00 | 26.00 | 26.00 | 0.00 | 13.00 | 13.00 | 0.00 | 4.14 | 4.14 |
| | सकल योग-क + ख | 13722.66 | 34.00 | 13756.66 | 13236.45 | 16.01 | 13252.46 | 13315.68 | 7.14 | 13322.82 |

* सिल हेतु वर्ष 2009-10 में कोई योजना परिव्यय प्रक्षेपित नहीं किया गया है क्योंकि इसकी एनएमडीसी के साथ विलय की प्रक्रिया चल रही है।

** सेल के साथ विलय # ऋण को इक्विटी में बदलने के लिए सांकेतिक प्रावधान

## 9.2 वर्ष 2010-11 के दौरान योजना परिव्यय की तुलना में व्यय

(करोड़ रूपए)

| | पीएसयू/ संगठन का नाम | बजट अनुमान 2010-11 | | | संशोधित अनुमान 2010-11 | | | वास्तविक व्यय | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | आईईबी आर | जीबीएस | कुल | आईईबी आर | जीबी एस | कुल | आईईबीआर | जीबी एस | कुल |
| क. | पीएसयूज की स्कीमें | | | | | | | | | |
| 1 | सेल | 12254.00 | 0.00 | 12254.00 | 12254.00 | 0.00 | 12254.00 | 8002.09 | 0.00 | 8002.09 |
| 2 | आरआईएनएल | 4049.00 | 0.00 | 4049.00 | 2895.00 | 0.00 | 2895.00 | 2155.28 | 0.00 | 2155.28 |
| 3 | एचएससीएल | 0.00 | 1.00 | 1.00 | 0.00 | 1.00 | 1.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 4 | मेकॉन | 2.00 | 0.00 | 2.00 | 2.27 | 0.00 | 2.27 | 0.00* | 0.00 | 0.00 |
| 5 | एमएसटीसी | 5.00 | 0.00 | 5.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| 6 | एफएसएनएल | 12.00 | 0.00 | 12.00 | 12.00 | 0.00 | 12.00 | 9.05 | 0.00 | 9.05 |
| 7 | एनएमडीसी लि. | 611.00 | 0.00 | 611.00 | 720.00 | 0.00 | 720.00 | 440.93 | 0.00 | 440.93 |
| 8 | केआईओसीएल लि. | 75.00 | 0.00 | 75.00 | 85.00 | 0.00 | 85.00 | 4.56 | 0.00 | 4.56 |
| 9 | मायॅल | 115.82 | 0.00 | 115.82 | 83.98 | 0.00 | 83.98 | 29.12 | 0.00 | 29.12 |
| 10 | बर्ड ग्रुप ऑफ कंपनी | 40.00 | 0.00 | 40.00 | 77.00 | 0.00 | 77.00 | 74.58 | 0.00 | 74.58 |
| | योग-क | 17163.82 | 1.00 | 17164.82 | 16129.25 | 1.00 | 16130.25 | 10715.61 | 0.00 | 10715.61 |
| ख. | **इस्पात मंत्रालय की योजनाएं** | | | | | | | | | |
| | 1. लोहा और इस्पात क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को बढावा देने की योजना | 0.00 | 35.00 | 35.00 | 0.00 | 29.00 | 29.00 | 0.00 | 20.72 | 20.72 |
| | योग - ख | 0.00 | 35.00 | 35.00 | 0.00 | 29.00 | 29.00 | 0.00 | 20.72 | 20.72 |
| | सकल योग-क + ख | 17163.82 | 36.00 | 17199.82 | 16129.25 | 30.00 | 16159.25 | 10715.61 | 20.72 | 10736.33 |

(सितंबर, 2010 तक)

## 10. बकाया समुपयोजन प्रमाणपत्रों की स्थिति

31.12.2010 की स्थिति के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से कोई उपसमीपूजन लंबित नहीं है। आर एंड डी स्कीम के तहत अनुसंधान संस्थानों से समुपयोजन प्रमाण पत्र अभी तक देय नहीं हुए हैं।

**********

# अध्याय-VI

## इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों का कार्य निष्पादन

### 1. स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल)

1.1 सेल की प्राधिकृत पूंजी 5000.00 करोड़ रू0 है। 31 मार्च, 2009 की स्थिति के अनुसार प्रदत्त पूंजी 4130.40 करोड़ रू0 है जिसमें से 3544.69 करोड़ रू0 (85.82 प्रतिशत) भारत सरकार के पास है तथा शेष वित्तीय संस्थानों, जी डी आर धारकों, बैंकों, कर्मचारियों आदि के पास है।

### 1.2 वास्तविक निष्पादन

(हजार टन में)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक संभावित (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | तप्त धातु | 15199 | 14442 | 14505 | | 14771 | 11134 | 14347 |
| (ii) | अपरिष्कृत इस्पात | 13962 | 13411 | 13506 | | 13730 | 10227 | 13780 |
| (iii) | विक्रेय इस्पात | 13044 | 12494 | 12632 | | 12630 | 9414 | 12400 |
| (iv) | कच्चा लोहा | 441 | 267 | 323 | | 254 | 225 | 153 |

### 1.3 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | **आय** | 48278 | 53718 | 45565 | | 44865 | 36804 | |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 35323 | 42776 | 33694 | | 36898 | 30438 | |
| (iii) | **सकल मार्जिन** | 12955 | 10942 | 11871 | | 7967 | 6366 | |
| (iv) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | 11469 | 9403 | 10132 | | 4671 | 4969 | |
| (v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | 7537 | 6175 | 6754 | | 3083 | 3374 | # |
| (vi) | **प्रस्तावित लाभांश *** | 1528 | 1074 | 1363 | | 826 | 496 | |
| | **जिसमें से** | | | | | | | |
| | **भारत सरकार को प्रस्तावित लाभांश** | 1312 | 922 | 1170 | | 709 | 425 | |

* लाभांश कर को छोड़कर

# सेल एक लिस्टेड कंपनी है और उसे स्टॉक एक्सचेंज द्वारा निर्धारित लिस्टिंग एग्रीमेंट की शर्तों का अनुपालन करना अपेक्षित होता है। लिस्टिंग एग्रीमेंट के अनुसार स्टॉक से संबंधित संवेदनशील सूचनाओं को प्रकटीकरण से पूर्व स्टॉक एक्सचेंज में सूचित किया जाना अपेक्षित होता है। इस प्रकार बजट अनुमान वर्ष 2011-12 के वित्तीय निष्पादन का प्रकटीकरण स्टॉक की दृष्टि से संवेदनशील है और इससे लिस्टिंग एग्रीमेंट की अवहेलना होगी।

## 2. राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल)

2.1 31 मार्च, 2010 की स्थिति के अनुसार कंपनी की पूंजीगत संरचना में 4889.85 करोड़ रू0 साम्या पूंजी तथा 2937.47 करोड़ रू0 की 7 प्रतिशत गैर संचयी शोधनीय तरजीही शेयर पूंजी शामिल है। सभी शेयर भारत सरकार के पास हैं।

### 2.2 वास्तविक निष्पादन

(हजार टन)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09* | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान @ |
| (i) | तप्त धातु | 3913 | 3546 | 3900 | 4060 | 3820 | 2812 | 4350 |
| (ii) | अपरिष्कृत इस्पात | 3129 | 2963 | 3205 | 3323 | 3165 | 2340 | 3673 |
| (iii) | विक्रेय इस्पात | 3075 | 2701 | 3167 | 3100 | 3000 | 2217 | 3467 |
| (iv) | कच्चा लोहा | 495 | 322 | 408 | 454 | 376 | 267 | 368 |

*अप्रत्याशित वैश्विक मंदी के कारण वर्ष 2008-09 की दूसरी छ:माही में उत्पादन में कटौती करने का सहारा लिया गया।

### 2.3 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (अनंतिम) (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान @ |
| (i) | **आय** | 11680.61 | 12303.61 | 11392.16 | 10876.88 | 11486.97 | 8088.72 | 13752.24 |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 8165.68 | 9948.10 | 9789.79 | 9876.88 | 10686.18 | 7341.50 | 13339.92 |
| (iii) | **सकल मार्जिन** | 3514.93 | 2355.51 | 1602.37 | 1000.00 | 800.79 | 747.22 | 412.32 |
| (iv) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | 2995.36 | 2026.59 | 1247.65 | 438.21 | 402.25 | 419.55 | -358.85 |
| (v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | 1942.74 | 1335.57 | 796.67 | 126.63 | 236.23 | 285.43 | -239.53 |
| (vi) | **प्रदत्त लाभांश *** | -- | -- | 339.18 | -- | -- | -- | 200.00# |

# वर्ष 2010-11/के अंतिम लाभांश हेतु अनुमानित/अंतरिम लाभांश 2011-12

@ डीपीई को प्रस्तुत एमओयू 2011-12 के अनुसार, जिसे एटीएफ सदस्यों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात अंतिम रूप दिया जाएगा।

2.4 कंपनी ने प्राचलों के सभी क्षेत्रों में अपने निष्पादन को सुधारने के लिए अनेक उपाय शुरू किए। इन संगठित प्रयासों के परिणामस्वरूप 2001 के बाद से कंपनी के उत्पादन के निष्पादन में सुधार हुआ तथा कंपनी ने 2002-03 में पहली बार निवल लाभ प्राप्त किया। कंपनी 2005-06 के अंत तक अपनी संचित हानियों को पूर्णरूप से समाप्त कर सकी। वर्तमान में, कंपनी अपनी रेटिंग क्षमताओं से अधिक प्रचालन कर रही है तथा संबंधित समझौता ज्ञापन के लक्ष्यों की तुलना में वित्तीय निष्पादन में कोई कमी नहीं है तथापि, वैश्विक मंदी ने लाभप्रदता को कम करते हुए इस्पात उद्योग को बुरी तरह प्रभावित किया। 2008-09 की बढ़ी कैरी फरवर्ड मात्रा के कारण लौह अयस्क तथा हाई कोकिंग कोल की कीमतों में वृद्धि जारी रही तथा इसने 2009-10 की लाभप्रदता को बुरी तरह प्रभावित किया। चूंकि वर्ष 2011-12 के दौरान कई विस्तार यूनिटें चालू किए जाने हेतु निर्धारित हैं इसलिए इससे सेमीफिनिश्ड उत्पादों का अत्यधिक मात्रा में उत्पादन होने के अतिरिक्त मूल्यह्रास लागत भी अधिक हो जाएगी जिस कारण से वर्ष की समग्र लाभप्रदता प्रभावित होगी। कंपनी के पास लौह अयस्क और कोकिंग कोल जैसी महत्वपूर्ण कच्ची सामग्रियों की निजी खानें नहीं हैं। हाल ही में लौह अयस्क और कोकिंग कोल के मूल्यों में वृद्धि ने इन संसाधनों पर अधिक नियंत्रण रखने वाली अन्य कंपनियों की तुलना में आरआईएनएल की प्रतिस्पर्धा कम कर दी है।

2.5 बर्डग्रुप ऑफ कंपनीज के संबंध में की गई पुनर्संरचना के के अनुसार ईआईएल की होल्डिंग कंपनी आरआईएनएल बन गई है। ओएमडीसी और बीएसएलसी की होल्डिंग कंपनी ईआईएल बन गई है। इस प्रकार बर्डग्रुप के अंतर्गत प्रचालनाधीन सभी 3 कंपनियां नामत: ईआईएल, ओएमडीसी और बीएसएलसी अब आरआईएनएल की सहायक कंपनियां हैं और ये सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम बन गए हैं।

3. हिंदुस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड (एचएससीएल)

3.1 31 मार्च, 2010 की स्थिति के अनुसार कंपनी की प्राधिकृत और प्रदत्त शेयर पूंजी क्रमश: 150 करोड़ रू0 तथा 117.10 करोड़ रू0 है। सभी शेयर भारत सरकार के पास हैं।

### 3.2 वास्तविक निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान (एमओयू) | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान (एमओयू) प्रस्तावित |
| (i) | आर्डर बुकिंग | 940.00 | 871.00 | 1036.00 | 960.00 | -- | 1502.77 | 1800.00 |

### 3.3 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान (एमओयू) | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान (एमओयू) प्रस्तावित |
| (i) | **आय** | 526.18 | 721.26 | 800.35 | 840.00 | | 626.51 | 1200.00 |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 485.97 | 656.63 | 731.26 | 786.00 | | 590.12 | 1120.00 |
| (iii) | **सकल मार्जिन** | 40.21 | 64.63 | 69.09 | 54.00 | | 36.39 | 80.00 |
| (iv) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | -26.72 | -6.88 | -54.59 | -49.30 | | -39.12 | -26.00 |
| (v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | -26.72 | -6.88 | -54.59 | -49.30 | | -39.12 | -26.00 |
| (vi) | **लाभांश का भुगतान/प्रस्तावित** | शून्य | शून्य | शून्य | शून्य | शून्य | शून्य | शून्य |
| | जिसमें से : | | | | | | | |
| | भारत सरकार को प्रस्तावित लाभांश | शून्य | शून्य | शून्य | शून्य | शून्य | शून्य | शून्य |

कंपनी द्वारा वर्ष 2009-10 के दौरान 69.09 करोड़ रूपए का प्रचालन लाभ अर्जित करने से उसके वित्तीय परिणाम में सुधार हो रहा है। कंपनी व्यापारिक प्रचालन की समग्र कार्यकुशलता में सुधार लाने के विभिन्न प्रयास कर रही है। वर्तमान में एचएससीएल की पुनर्संरचना का एक प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है।

### 4. मेकॉन लिमिटेड

**4.1 कंपनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 104.00 करोड़ रू0 है जिसमें से 103.14 करोड़ रू0 प्रदत्त पूंजी है। सभी शेयर भारत सरकार के पास हैं।**

## 4.2 वास्तविक निष्पादन

चूंकि मेकॉन एक परामर्शी संगठन है, इसलिए कंपनी का वास्तविक निष्पादन देना संभव नहीं है।

4.3 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | **आय** | 504.15 | 614.66 | 668.86 | 493.00 | 600.35 | 450.28 | 515.50 |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 438.78 | 528.46 | 533.35 | 450.00 | 485.35 | 375.55 | 466.65 |
| (iii) | **सकल मार्जिन** | 65.37 | 86.20 | 135.51 | 43.00 | 115.00 | 102.73 | 48.85 |
| (iv) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | 39.53 | 74.76 | 124.69 | 36.50 | 104.00 | 94.43 | 42.50 |
| (v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | 33.32 | 65.88 | 82.62 | 36.50 | 62.00 | 63.06 | 39.50 |
| (vi) | **लाभांश का भुगतान/प्रस्तावित** | 1.00 | 3.15 | 3.15 | 3.15 | 3.15 | 2.36 | 3.15 |
| | जिसमें से : | | | | | | | |
| | भुगतान किया गया लाभांश/ भारत सरकार को प्रस्तावित | 1.00 | 3.15 | 3.15 | 3.15 | 3.15 | 2.36 | 3.15 |

## 5. एमएसटीसी लिमिटेड

**5.1** 31.3.2010 की स्थिति के अनुसार एम एस टी सी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 5.00 करोड़ रू0 और प्रदत्त पूंजी 2.20 करोड़ रू0 है जिसमें से लगभग 90 प्रतिशत भारत के राष्ट्रपति के पास है तथा शेष 10 प्रतिशत स्टील फर्नेस एसोसिएशन आफ इंडिया तथा आयरन एंड स्टील स्क्रैप एसोसिएशन आफ इंडिया के सदस्यों और अन्यों के पास हैं। 2.20 करोड़ रू0 की प्रदत्त पूंजी में 1:1 के अनुपात में वर्ष 1993-94 में जारी किए गए बोनस शेयर शामिल हैं।

## 5.2 वास्तविक निष्पादन

चूंकि एम एस टी सी एक विनिर्माण उपक्रम नहीं है इसलिए मार्केटिंग और सेलिंग एजेंसी के अंतर्गत कारोबार की मात्रा की दृष्टि से इसका निष्पादन नीचे दिया गया है:

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | विपणन | 6345 | 8881 | 6385 | 4000 | 4598 | 4677.54 | 5000 |
| (ii) | एजेंसी | 4634 | 11121 | 6354 | 6000 | 4502 | 5315.82 | 7000 |

## 5.3 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | **आय** | 5197.11 | 7082.09 | 4381.18 | 4173.00 | 4771.42 | 1240.98 | 5201.00 |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 5058.78 | 6950.00 | 4243.51 | 4043.00 | 4646.42 | 1102.71 | 5050.60 |
| (iii) | **सकल मार्जिन** | 138.33 | 132.09 | 137.67 | 130.00 | 125.00 | 138.27 | 150.40 |
| (iv) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | 134.47 | 129.53 | 135.99 | 75.50 | 74.50 | 83.66 | 97.90 |
| (v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | 92.20 | 85.05 | 86.10 | 49.83 | 49.17 | 55.34 | 65.00 |
| (vi) | **लाभांश का भुगतान/प्रस्तावित** | 18.48 | 17.05 | 17.23 | 9.97 | 9.83 | -- | 13.00 |
| | जिसमें से : | | | | | | | |
| | भुगतान किया गया लाभांश/ भारत सरकार को प्रस्तावित | 16.63 | 15.34 | 15.48 | 8.96 | 8.83 | -- | 11.68 |

## 6. फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड (एफएसएनएल)

**6.1** दिनांक 31.3.2010 को कंपनी का निवल मूल्य 136.67 करोड़ रूपए था।

## 6.2 वास्तविक निष्पादन

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | स्क्रैप की रिकवरी (लाख एमटी) | 23.77 | 22.63 | 23.71 | 24.80 | 27.50 | 19.62 | 28.50 |
| (ii) | उत्पादन का बाजार मूल्य (करोड़ रूपए) | 1045.95 | 995.82 | 1043.40 | 1091.33 | 1210.00 | 863.10 | 1254.00 |

## 6.3 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | **आय** | 128.22 | 137.30 | 158.61 | 151.90 | 165.32 | 112.86 | 177.71 |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 112.36 | 120.47 | 137.42 | 132.20 | 147.28 | 101.64 | 156.90 |
| (iii) | **सकल मार्जिन** | 15.86 | 16.83 | 21.19 | 19.70 | 18.04 | 11.22 | 20.81 |
| (iv) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | 2.01 | 4.31 | 5.76 | 4.05 | 3.39 | 0.86 | 5.31 |
| (v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | 0.73 | 2.23 | 4.18 | 2.67 | 2.26 | 0.57 | 3.55 |
| (vi) | **लाभांश का भुगतान/प्रस्तावित** | 0.47 | 0.52 | 1.01 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| | जिसमें से : | | | | | | | |
| | भुगतान किया गया लाभांश/ भारत सरकार को प्रस्तावित | 0.40 | 0.45 | 0.86 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |

# धारक कंपनी होने के नाते लाभांश का भुगतान मैसर्स एमएसटीसी लिमिटेड को किया गया

6.4 एफ एस एन एल का निष्पादन विभिन्न रूपों में स्लैग में स्क्रैप और स्क्रैप सृजन पर निर्भर करता है। तथापि, वर्ष 2007-08 से वर्ष 2009-10 की अवधि के दौरान उत्पादन वद्धि विशेष रूप से स्लैग की संभाल क्षेत्र में वृद्धि के कारण एफ एस एन एल की आय में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप सकल मार्जिन, पी बी टी और पी ए टी में भी अनुपातिक वृद्धि हुई है। लागत को कम करने के लिए कंपनी द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। प्रचालन लागत में वृद्धि के कारण वर्ष 2010-11 में सकल मार्जिन कम हुआ है।

## 7. एनएमडीसी लिमिटेड

**7.1 वर्ष 2008-09 के दौरान 2:1 अनुपात में बोनस शेयर देने के पश्चात 31.3.2010 की स्थिति के अनुसार 400.00 करोड़ रू0 की प्राधिकृत शेयरपूंजी की तुलना में अभिदत्त एवं प्रदत्त पूंजी 396.47 करोड़ रू0 है। एनएमडीसी के 98.38 प्रतिशत शेयर भारत सरकार के पास हैं। वर्ष 2009-10 में भारत सरकार ने एनएमडीसी के 33.22 करोड़ रूपए मूल्य के शेयरों का विनिवेश किया है जिसके फलस्वरूप कंपनी में शेयरधारिता कम होकर अब लगभग 90 प्रतिशत है।**

### 7.2 वास्तविक निष्पादन

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | **उत्पादन** | | | | | | | |
| | i) लौह अयस्क (लाख एमटी) | 298.16 | 285.15 | 238.03 | 180.00 | 210.00 | 165.29 | 240.00 |
| | ii) डायमंड्स (कैरेट्स) | - | - | - | 35000 | 35000 | 10866 | 40000 |
| (II) | **बिक्री** | | | | | | | |
| | i) लौह अयस्क (लाख एमटी) | 281.84 | 264.72 | 240.85 | 205.00 | 254.00 | 179.01 | 253.00 |
| | ii) डायमंड्स (कैरेट्स) | 2632 | - | - | 35000 | 35000 | 18422 | 40000 |

* अनंतिम

### 7.3 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (अनंतिम) (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | **आय** | 6412.01 | 8575.46 | 7098.90 | 5366.00 | 11190.00 | 8432.18 | 11030.00 |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 1401.08 | 1850.21 | 1814.96 | 1698.00 | 2437.00 | 1788.23 | 2756.00 |
| (iii) | **सकल मार्जिन (1-2)** | 5010.93 | 6725.25 | 5283.94 | 3668.00 | 8753.00 | 6643.95 | 8274.00 |
| (iv) | मूल्यह्रास/डीआरई | 63.46 | 77.02 | 76.62 | 98.00 | 107.00 | 80.34 | 149.00 |
| (v) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | 4947.47 | 6648.23 | 5207.32 | 3570.00 | 8646.00 | 6563.61 | 8125.00 |
| (vi) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | 3250.98 | 4372.38 | 3447.26 | 2357.00 | 5774.00 | 4383.31 | 5426.00 |
| (vii) | **लाभांश का भुगतान/प्रस्तावित** | 651.53 | 876.20 | 693.82 | - | - | - | - |
| | जिसमें से : | | | | | | | |
| | भुगतान किया गया लाभांश/ भारत सरकार को प्रस्तावित | 641.00 | 862.04 | 649.39 | - | - | - | - |

* अनंतिम

## 8. केआईओसीएल लिमिटेड

**8.1 केआईओसीएल की प्राधिकृत पूंजी 675.00 करोड़ रूपए है। जारी एवं प्रदत्त पूंजी 634.51 करोड़ रूपए है जिसका लगभग 99 प्रतिशत (628.14 करोड़ रूपए) भारत सरकार के पास है।**

8.2 वास्तविक निष्पादन

(मिलियन टन)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | पैलेट | 1.927 | 1.316 | 1.273 | 2.780 | 2.500 | - | 3.000 |
| (ii) | कच्चा लोहा (अनुषंगी समेत) | 0.157 | 0.118 | 0.062 | 0.100 | - | - | - |

**नोट:** केआईएससीओ का दिनांक 1.4.2007 से केआईओसीएल के साथ विलय कर दिया गया है और इस प्रकार 2007-08 के आंकड़े में ब्लॉस्ट फर्नेस यूनिट के आंकड़े शामिल हैं।

**8.3 वित्तीय निष्पादन**

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | **आय** | 1565.41 | 1422.15 | 912.59 | 1811.14 | 2162.17 | 1279.72 | 2713.98 |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 1353.67 | 1354.48 | 1047.23 | 174.76 | 2075.20 | 1198.71 | 2605.52 |
| (iii) | **सकल मार्जिन** | 211.74 | 67.67 | -134.64 | 66.38 | 86.97 | 81.01 | 108.46 |
| (iv) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | 156.51 | 24.18 | -194.95 | 31.48 | 53.39 | 54.54 | 74.85 |
| (v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | 108.16 | 22.01 | -177.27 | 20.78 | 35.24 | 36.33 | 49.99 |
| (vi) | **लाभांश का भुगतान/प्रस्तावित** | 21.63 | 6.34 | - | - | 7.05 | 5.12 | 9.99 |
| | जिसमें से : | | | | | | | |
| | भुगतान किया गया लाभांश/ भारत सरकार को प्रस्तावित | 21.42 | 6.28 | - | - | 6.98 | 5.07 | 9.89 |

8.4 वैश्विक बाजार मंदी के कारण पैलेट्स की कीमतें 240 अमेरिकी डालर से घटकर 85 अमेरिकी डालर हो गई हैं जो उत्पादन लागत से कम है। इस प्रकार केआईओसीएल कम मात्रा में पैलेट की बिक्री कर रही थी। संयंत्र अनुरक्षण के लिए जनवरी, 2009 से उत्पादन कार्यकलाप रोक लिए गए थे जो कि जुलाई, 2009 में पुन: आरंभ कर लिए गए थे। इसके परिणामस्वरूप कंपनी के वास्तविक एवं वित्तीय निष्पादन में कमी आई है।

8.5 वर्ष 2010-11 में कंपनी के निष्पादन में पर्याप्त सुधार हुआ है और वित्तीय वर्ष 2009-10 के दौरान 177 करोड़ रूपए निवल हानि की तुलना में (दिसंबर, 10 तक) 54.54 करोड़ रूपए के कर-पूर्व लाभ और 36.33 करोड़ रूपए के कर-पश्चात लाभ अर्जित किए हैं कंपनी ने सरकार को 5.12 करोड़ रूपए अंतिम लाभांश का भुगतान किया है।

## 9. मॉयल लिमिटेड

**9.1** 31 दिसम्बर, 2010 की स्थिति के अनुसार कंपनी की प्राधिकृत पूंजी 250.00 करोड़ रूपए है तथा कंपनी की निर्गमित एवं चुकता पूंजी 168.00 करोड़ रूपए है। भारत सरकार तथा महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश राज्य सरकार कंपनी के शेयर धारक हैं जिसमें भारत सरकार के 71.57% प्रतिशत शेयर हैं।

### 9.2 वास्तविक निष्पादन

(उत्पादन: एमटी)

| क्र. सं. | | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| | **उत्पादन** | | | | | | | |
| (i) | मैंगनीज ओर | 1364575 | 1175318 | 1093363 | 1075000 | 1150000 | 814311 | 1100000 |
| (ii) | इलैक्ट्रोलाइट मैंगनीज डाईआक्साइड | 1122 | 1240 | 1150 | 1300 | 1000 | 629 | 1000 |
| (iii) | फैरो मैंगनीज | 11130 | 10120 | 9555 | 10000 | 9000 | 7076 | 10000 |

### 9.3 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | वास्तविक (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| i) | **आय** | 1030.04 | 1407.99 | 1101.37 | 743.03 | 1236.49 | 955.56 | 1164.51 |
| ii) | **प्रचालन लागत** | 286.49 | 435.66 | 383.47 | 404.06 | 383.35 | 312.14 | 493.33 |
| iii) | **सकल मार्जिन** | 750.98 | 1031.42 | 732.09 | 383.75 | 817.79 | 676.43 | 715.10 |
| v) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | 734.91 | 1006.76 | 706.79 | 353.50 | 519.85 | 656.18 | 450.69 |
| v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | 479.82 | 663.79 | 466.35 | 233.34 | 519.85 | 435.21 | 450.69 |
| vi) | **लाभांश का भुगतान/प्रस्तावित** | 96.60 | 133.00 | 94.08 | | | | |
| | जिसमें से : | | | | | | | |
| | भुगतान किया गया लाभांश/ भारत सरकार को प्रस्तावित | 78.80 | 108.49 | 76.74 | | | | |

वर्ष 2010-11 के लिए निर्धारित लक्ष्यों की तुलना में मॉयल के वास्तविक और वित्तीय निष्पादन में कोई कमी नहीं हुई है। इलैक्ट्रोलिटिक मैगनीज डाईआक्साईड के उत्पादन को छोड़कर दोनों दृष्टियों से कंपनी का निष्पादन लक्ष्यों से अधिक हुआ है।

## 10. बर्डग्रुप ऑफ कंपनीज

10.1 बर्डग्रुप ऑफ कंपनीज के संबंध में की गई पुनर्संरचना के अनुसार आरआईएनएल ईआईएल की धारक कंपनी बन गई है। यह ईआईएल ओएमडीसी और बीएसएलसी की धारक कंपनी बन गई है। इस प्रकार बर्डग्रुप के अंतर्गत ये सभी तीनों प्रचालन कंपनियां नामत: ईआईएल ओएमडीसी और बीएसएलसी आरआईएनएल की सहायक कंपनियां हैं तथा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम बन गए हैं।

### 10.2 उड़ीसा मिनरल्स डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड (ओएमडीसी)

ओएमडीसी ईआईएल की एक सहायक कंपनी है। इसको वर्ष 1918 में निगमित किया गया था। यह मार्च, 2010 में सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम बन गया था। ओएमडीसी लौह अयस्क और मैंगनीज अयस्क के उत्खनन और विपणन कार्य में संलग्न हैं। कंपनी की खानें उड़ीसा राज्य के क्योंझर जिले में बारबिल के आस-पास स्थित हैं। ओएमडीसी ने वर्ष 2004 के दौरान 30000.00 टीपीए क्षमता के एक स्पंज आयरन संयंत्र की भी स्थापना की है। कंपनी ने अपने कार्य में विविधिता लाने और मूल्यवर्धन की योजना बनाई है। यह बारबिल उड़ीसा में 2 एमटीपीए क्षमता के बैनिफिसिएशन संयंत्र और 2 एमटीपीए क्षमता का पैलेट संयंत्र स्थापित करने की योजना बना रही है। उसने आगामी कुछ वर्षों में लौह अयस्क के उत्पादन को बढ़ाकर 10 मिलियन टन तक करने और मैंगनीज अयस्क के उत्पादन को 1 मिलियन टन तक करने की भी योजना बनाई है। कंपनी की प्राधिकृत एवं प्रदत्त पूंजी 0.60 करोड़ रूपए है।

### 10.3 वास्तविक निष्पादन

(लाख एमटी)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | अनंतिम (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| 1. | **उत्पादन** | | | | | | | |
| | i) लौह अयस्क | 17.28 | 16.60 | 5.64 | 20.00 | 0.66 | 0.66 | 12.00 |
| | ii) मैंगनीज अयस्क | 0.82 | 0.32 | 0.17 | 0.42 | 0.13 | 0.13 | 0.20 |
| | iii) स्पंज आयरन | 0.11 | 0.03 | 0.08 | 0.18 | 0.05 | 0.02 | - |
| 2. | **प्रेषण** | | | | | | | |
| | i) लौह अयस्क | 16.63 | 17.34 | 6.43 | 20.00 | 3.00 | 2.00 | 18.00 |
| | ii) मैंगनीज अयस्क | 0.86 | 0.26 | 0.19 | 0.42 | 0.15 | 0.07 | 0.20 |
| | iii) स्पंज आयरन | 0.17 | 0.02 | 0.06 | 0.18 | 0.05 | 0.04 | - |

## 10.4 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | अनंतिम (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | **आय** | 302.54 | 348.68 | 166.53 | 345.00 | 108.72 | 77.94 | 308.70 |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 74.66 | 59.39 | 51.72 | 185.08 | 55.69 | 38.22 | 203.61 |
| (iii) | **सकल मार्जिन** | 227.88 | 289.29 | 114.81 | 159.92 | 53.03 | 39.72 | 105.09 |
| (iv) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | 224.46 | 286.24 | 112.26 | 141.42 | 31.48 | 19.78 | 87.59 |
| (v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | 148.84 | 181.81 | 74.44 | 93.34 | 21.02 | 11.58 | 58.51 |
| (vi) | **लाभांश का भुगतान/प्रस्तावित** | 22.32 | 27.30 | 11.16 | - | - | - | - |
| | जिसमें से : | | | | | | | |
| | भुगतान किया गया लाभांश/ भारत सरकार को प्रस्तावित | 3.17 | 3.88 | - | - | - | - | - |

## 10.5 बिसरा स्टोन लाइम कंपनी लिमिटेड (बीएसएलसी)

बिसरा ईआईएल की सहायक कंपनी है और वह मार्च, 2010 में सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम बन गया है। बीएसएलसी को वर्ष 1910 में निगमित किया गया था। कंपनी लाइम स्टोन और डोलोमाइट के उत्खनन और विपणन में संलग्न हैं। इसकी खानें उड़ीसा के सुंदरगढ़ जिले के बीरमित्रपुर में स्थित हैं। बीएसएलसी की प्राधिकृत और पूर्वदत्त पूंजी क्रमश: 87.50 करोड़ रूपए और 87.29 करोड़ रूपए है। दिनांक 31.3.2010 की स्थिति के अनुसार कंपनी का निवल मूल्य 5.67 करोड़ रूपए है।

## 10.6 वास्तविक निष्पादन

(लाख एमटी)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | अनंतिम (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| 1. | **उत्पादन** | | | | | | | |
| (i) | i) लाइमस्टोन | 2.83 | 2.06 | 2.09 | 3.60 | 1.30 | 1.12 | 2.40 |
| (ii) | ii) डोलोमाइट | 8.31 | 8.64 | 9.56 | 6.00 | 8.30 | 6.29 | 7.20 |
| 2. | **प्रेषण** | | | | | | | |
| (i) | i) लाइमस्टोन | 2.42 | 2.02 | 2.44 | 4.80 | 2.00 | 1.83 | 2.40 |
| (ii) | ii) डोलोमाइट | 8.27 | 7.95 | 9.26 | 7.80 | 8.23 | 6.28 | 7.20 |

## 10.7 वित्तीय निष्पादन

(करोड़ रूपए)

| क्र. सं. | मद | 2007-08 | 2008-09 | 2009-10 | 2010-11 | | | 2011-12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | (वास्तविक) | (वास्तविक) | (वास्तविक) | बजट अनुमान | संशोधित अनुमान | अनंतिम (दिसंबर, 10 तक) | बजट अनुमान |
| (i) | **आय** | 45.82 | 50.85 | 682.73 | 89.00 | 65.54 | 44.13 | 60.00 |
| (ii) | **प्रचालन लागत** | 44.63 | 45.43 | 621.42 | 69.60 | 70.05 | 47.58 | 65.52 |
| (iii) | **सकल मार्जिन** | 1.19 | 5.43 | - | 19.40 | -4.51 | -3.45 | -5.52 |
| (iv) | **कर पूर्व लाभ (हानि)** | -81.60 | -91.35 | 620.63 | 18.80 | -5.09 | -3.89 | -6.00 |
| (v) | **कर पश्चात लाभ (हानि)** | -81.61 | -91.38 | - | 12.41 | -5.09 | -3.89 | -6.00 |
| (vi) | **लाभांश का भुगतान/प्रस्तावित** | - | - | - | - | - | - | - |
| | जिसमें से : | | | | | | | |
| | भुगतान किया गया लाभांश/ भारत सरकार को प्रस्तावित | - | - | - | - | - | - | - |

बीएसएलसी विगत कई वर्षों से हानि अर्जित कर रही है। कंपनी का कार्य निष्पादन स्टील निर्माण की प्रौद्योगिकी में परिर्वतन होने, औद्योगिक संबंधों की समस्या होने और मांग की अत्यधिक कमी के कारण प्रभावित हुआ है जिसके कारण अत्यधिक नकद हानि हुई है।

**********